।। ओ३म् ।।

वैदिक संसार

भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या एम.पी. एच.आई. एन. २०१२/४५०६६, डाक पंजीयन - एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७

वर्ष-६ | अंक-११ | मासिक-हिन्दी | सितम्बर-२०१७ | इन्दौर(म.प्र.) | मूल्य-२५/- | कुल पृष्ठ-४४

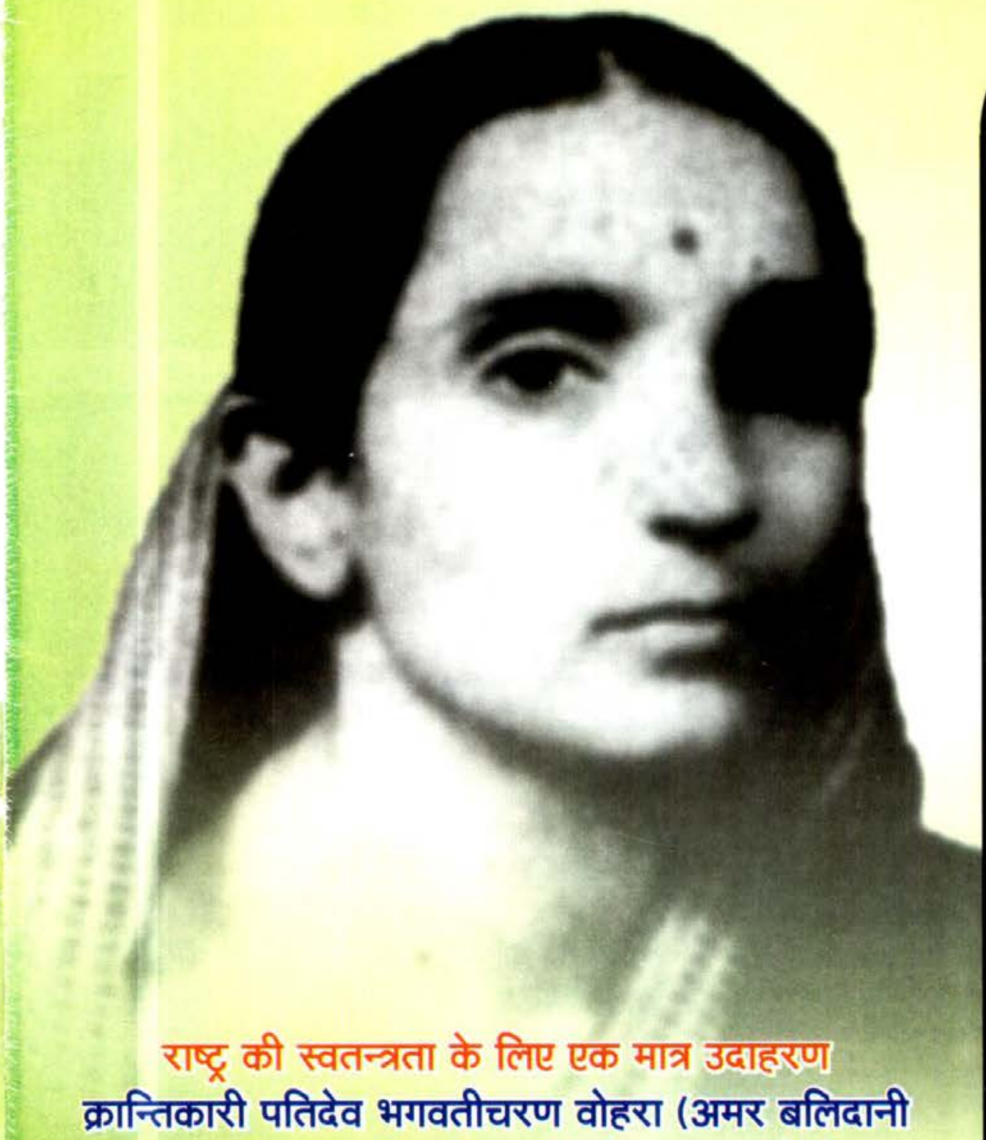

राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए एक मात्र उदाहरण
क्रान्तिकारी पतिदेव भगवतीचरण वोहरा (अमर बलिदानी चन्द्रशेखर और भगतसिंह के साथी) के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर, अपने प्राणों की तो छोड़ो, अपनी गोद में पल रहे शिशु को भी राष्ट्र की बलिवेदी पर दांव पर लगाने वाली

वीरांगना दुर्गा भाभी

की दिवंगत पुण्यात्मा को जयन्ति दिवस ०७ अक्टूबर १९०७ तथा पुण्यतिथि दिवस १४ अक्टूबर १९९९ पर

शत-शत नमन

वैदिक धर्म-संस्कृति के संरक्षक

आर्य जगत् के भामाशाह ठाकुर विक्रमसिंह जी
राष्ट्रीय अध्यक्ष-राष्ट्र निर्माण पार्टी
द्वारा आयोजित आर्य जगत् का गरिमामयी

आर्यन अभिनन्दन समारोह सम्पन्न

वैदिक संसार परिवार को वैदिक धर्म-संस्कृति प्रचारार्थ किए जा रहे उल्लेखनीय कार्यों हेतु दिनांक १७/०९/२०१७ को आर्य समाज डिफेंस कॉलोनी, दिल्ली के भव्य सत्संग सभागार में सम्पूर्ण भारत भर से पधारे वेदों के उच्चकोटि के विद्वानों के मध्य शॉल, प्रशस्ति-पत्र, साहित्य, मिष्ठान के साथ एक लाख पन्द्रह हजार रुपए की राशि से उदारमना ठाकुर सा. द्वारा सम्मानित किया गया।

विस्तृत समाचार पढ़िये आगामी अंक में...

आध्यात्मिकता से सराबोर, दानवीर, सेवाभावी व्यक्तित्व

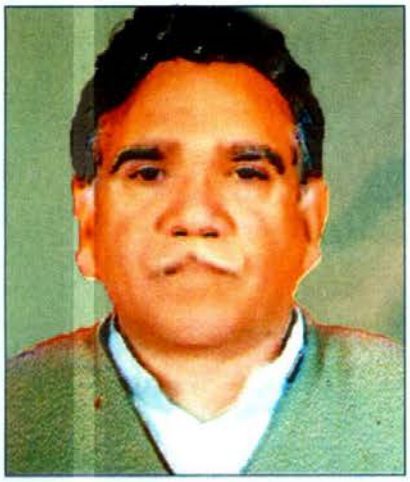

६५ लाख की लागत से ९ बीघा भूमि में बनाई गो-शाला व आश्रम

- श्री नानूराम जी जांगिड पिता स्मृति शेष रूपाराम जी जांगिड (पंवार) निवासी- पारिजात कालोनी, धुलिया (महाराष्ट्र), मूल निवासी- गोविन्दपुरा, तह.- श्री माधोपुर, जिला-सीकर (राजस्थान), अध्यक्ष- जांगिड ब्राह्मण जिला सभा, धुलिया। आप वर्ष १९८१ में राजस्थान से धुलिया आए तथा यहां पर फर्नीचर का कार्य प्रारम्भ किया। उसके बाद मार्बल के व्यवसाय में कदम रखा।
- वर्ष १९९९ में शाकाहार के प्रचार-प्रसार के लिए सुविख्यात बाबा जय गुरुदेव के मथुरा स्थित आश्रम में आप अपने सहयोगी-साथी गुरुभाई के साथ पहुंचे और बाबा जय गुरुदेव से जुड़ गए।
- बाबा जय गुरुदेव जी के प्रेरणा से आपने अपने गृहग्राम गोविन्दपुरा में लगभग डेढ़ वर्ष पूर्व नौ बीघा भूमि क्रय कर लगभग तीन बीघा भूमि में गो-शाला, तीन बीघा क्षेत्र में घास भण्डार तथा अन्य उपयोगार्थ एवं तीन बीघा में आश्रम का निर्माण स्वयं के द्वारा लगभग ६५ लाख रुपए व्यय कर किया गया।इसके सुचारू संचालन के लिए बाबा जय गुरुदेव संचालन समिति, गोविन्दपुरा, जिला-सीकर (राज.) का गठन कर विधिवत् पंजीयन करवा दिया गया है। वर्तमान में लगभग ११३ गायें हैं जबकि २०० गायों के लिए व्यवस्था की गई है जिन गायों को रखा गया है वे सभी सड़कों पर बेसहारा घूमने वाली गायें हैं

- आप सेवाभावी, मिलनसार, आध्यात्मिक, दान प्रवृत्ति के धनी व्यक्ति हैं।आप वर्तमान में जांगिड ब्राह्मण समाज धुलिया के जिलाध्यक्ष के रूप में समाज को अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं तथा सामाजिक कार्यों में तन-मन-धन से सदैव तत्पर रहते हैं। धुलिया शहर में आपका श्रीनाथ मार्बल्स एवं ग्रेनाइट और न्यू श्रीनाथ टाईल्स एण्ड सेनेटरी वेअर के नाम से ख्याति प्राप्त व्यावसायिक प्रतिष्ठान है।
- आप चार भाइयों में दूसरे नम्बर पर हैं, आपकी धर्म पत्नी श्रीमती सीतादेवी का निधन दिनांक ०३.०६.२००९ को एक दुर्घटना में खाटू श्यामजी में हो गया था। परमपिता परमात्मा की कृपा से आपके दो सुपुत्र मुकेश तथा नरेश हैं तथा चार सुपुत्रियां श्रीमती मनीषा, श्रीमती आशा, श्रीमती मनोदरी, श्रीमती निशा उर्फ चन्दा सभी विवाहित का पौत्र-पौत्री, दोहिते-दोहिती से भरापूरा खुशहाल परिवार है।
- आप वैदिक संसार के अभिन्न सहयोगी हैं। आपकी प्रेरणा से वैदिक संसार के अनेक आजीवन, त्रैवार्षिक सदस्य बने हैं। आपने वैदिक संसार की संरक्षक सदस्यता को स्वीकार कर २५,००० रुपए सहर्ष प्रदान कर वैदिक संसार को सहयोग के साथ पुण्य कमाई करते हुए अपनी दानवीरता का परिचय दिया है। वैदिक संसार परिवार आपके स्वस्थ, दीर्घायुष्य जीवन तथा आपके परिवार के लिए मंगलमयी कामना करता है।

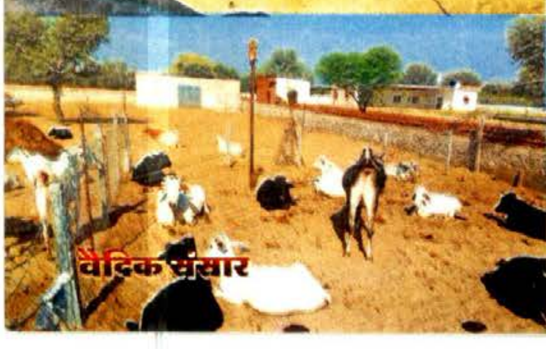
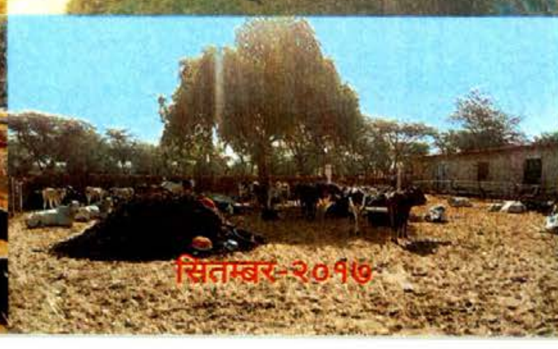

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

आरएनआई-एमपीएचआईएन २०१२/४५०६९

डाक पंजीयन-एमपी/आईसीडी/१४०५/२०१५-१७

वर्ष-६, अंक-११

अवधि-मासिक, भाषा-हिन्दी

प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ सितम्बर, २०१७

आर्ष तिथि-आश्विन मास, शुक्ल पक्ष, पंचमी

सृष्टि संवत्-१,९७,२९,४९,११९

शक संवत्- १९३९

विक्रम संवत्- २०७४, दयानन्दाब्द-१९४

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक

सुखदेव शर्मा, इन्दौर- ०९४२५०६९४९१

(सायं ६ बजे से प्रात: ८ बजे तक मौन काल)

सम्पादक

गजेश शास्त्री, इंदौर (म.प्र.)

आवरण एवं शब्द संयोजन

लक्ष्य ग्राफिक्स - ९३०१४३३२११

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता

१२/३, संविद नगर, इंदौर-१८, मध्यप्रदेश

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

एक प्रति	२५/-
वार्षिक सहयोग	२५०/-
त्रैवार्षिक सहयोग	६००/-
आजीवन सहयोग (१५ वर्ष)	२१००/-

अन्य सहयोग-स्वैच्छानुसार

बैंक खाता धारक - वैदिक संसार

भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-ओल्ड पलासिया, इन्दौर

करंट खाता क्र. ३२८५९५९२४७९

आईएफएस कोड-एसबीआईएन-०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज-वैदिक संसार

अनुक्रमणिका

विषय	प्रस्तुति	पृष्ठ.क्र.
वेद मन्त्र-भावार्थ एवं पत्रिका उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
महत्वपूर्ण पर्व, दिवस एवं जयन्ति-पुण्यतिथि	श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्	०४
मोदी जी! न्यू इण्डिया नहीं, प्राचीन आर्यावर्त्त..	सम्पादकीय	०५
त्वरित प्रतिक्रिया-मोदी जी! हिन्दू युवाओं के...	सुखदेव शर्मा	१०
त्वरित प्रतिक्रिया-एक और पाखण्डी बाबा...	वैदिक संसार	११
हमारी महान् विभूतियां-...श्रीराम-श्रीकृष्ण	मोहनलाल दशोरा 'आर्य'	०६
- महर्षि दयानन्द...	पं. नन्दलाल निर्भय	०७
- ...सुवैदा शैरीषि	शिवनारायण उपाध्याय	१३
- सरदार वल्लभभाई...	रतनसिंह आर्य	१४
- मुंशी प्रेमचन्द	सा. रिवाड़ी रिफॉर्मर	१४
- दुर्गा भाभी	डोंगरलाल वर्मा	१५
आज हमारी असली शादी हुई है	खुशहालचन्द्र आर्य	१७
अन्ध श्रद्धा-कब तक?	राधेश्याम गोयल	१८
ऋषि दयानन्द को जग याद करता है	देशराज आर्य	१८
युग प्रवर्तक-गुरु-शिष्य	पं. उम्मेदसिंह विशारद्	१९
वेदवाणी	आचार्य रामगोपाल सैनी	१९
अकल्पनीय परमात्मा के अकल्पनीय ब्रह्माण्ड..	ओमप्रकाश आर्य	२१
गायन	गंगाराम जांगिड	२१
वैदिक ध्यान पद्धति	डॉ. अशोक कुमार आर्य	२३
सिर्फ ज्ञान ही आपको अधिकार दिलाता है	कपिल शर्मार्य	२३
दीपावली पर्व-ऋषि निर्वाण दिवस	आचार्य रामज्ञानी आर्य	२५
छलनी से छानकर वाणी बोले	डॉ. शिवदत्त पाण्डेय	२५
खजूर और अंगूर कितने पास-कितने दूर..	देवनारायण भारद्वाज	२७
वेदोक्त ज्योतिष एवं वेदार्थ-पुस्तक समीक्षा	आ. सोमदेव आर्य	२९
वीर बनो	नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'	२९
अहिंसा परमो धर्मः	स्वामी शान्तानन्द सरस्वती	३१
क्या हनुमान ने सूर्य को निगल लिया था?	डॉ. गंगाशरण आर्य	३३
वेदानुसार पूषा ही खाद्य एवं आपूर्ति मन्त्रालय	डॉ. अशोक आर्य	३४
देश में बलात्कार, व्याभिचार रुक क्यों नहीं रहे	ज्योत्सना निधि	३५
भीषण समस्याओं से ग्रसित राष्ट्र का भविष्य	आचार्य श्रुति भास्कर	३७
गान्धी जी का जन्म दिवस २ अक्टूबर-एक...	रामअवतार यादव	३८
गुरुदेव दयानन्द को श्रद्धान्जलि	अम्बालाल विश्वकर्मार्य	३८
समाज के लिए अभिशाप जाति-पाति व्यवस्था	रामफलसिंह आर्य	३९
आर्य जगत् की प्रस्तावित गतिविधियां	संकलित	४१
आर्य जगत् की सम्पन्न गतिविधियां	संकलित	४२
शोक-सूचनाएं	संकलित	४२

वेद मन्त्र एवं भावार्थ

ओ३म् इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्य्यं रोहयद्दिवि।
वि गोभिरद्रिमैरयत्।। ऋ. १.७.३

भावार्थ- रचने की इच्छा करने वाले ईश्वर ने सब लोकों में दर्शन, धारण और आकर्षण आदि प्रयोजनों के लिए प्रकाशरूप सूर्य्यलोक को सब लोकों के बीच में स्थापित किया है, इसी प्रकार यह हर एक ब्रह्माण्ड का नियम है कि वह क्षण-क्षण में जल को ऊपर खेंचकर पवन के द्वारा ऊपर स्थापन करके बार-बार संसार में वर्षाता है, इसी से यह वर्षा का कारण है।

वैदिक संसार के उद्देश्य

■ महान् योगी, संन्यासी, महर्षि, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्वराष्ट्रप्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित-पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन-मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी दयानन्द के समस्त मानव जाति पर किए गए उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।

■ वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।

■ आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।

■ आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।

■ आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुंचाने का प्रयास करना।

श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् अनुसार आर्यावर्त्त के अक्टूबर २०१७ के महत्वपूर्ण पर्व एवं दिवस

०९ गते	ऊर्ज मास	१९३९ शक स.	आश्विन शुक्ल एकादशी २०७४	१ अक्टूबर	पंचक प्रारम्भ- १८:३३, भरतमिलाप, विश्व वृद्ध दिवस, रक्तदान दिवस
१० गते	ऊर्ज मास	१९३९ शक स.	आश्विन शुक्ल द्वादशी २०७४	२ अक्टूबर	महात्मा गान्धी एवं लालबहादुर शास्त्री जयन्ति
११ गते	ऊर्ज मास	१९३९ शक स.	आश्विन शुक्ल त्रयोदशी २०७४	३ अक्टूबर	प्रदोष, विश्व पर्यावास दिवस
१२ गते	ऊर्ज मास	१९३९ शक स.	आश्विन शुक्ल चतुर्दशी २०७४	४ अक्टूबर	दो दिवसीय मारवाड़ महोत्सव, विश्व पशु कल्याण दिवस
१३ गते	ऊर्ज मास	१९३९ शक स.	आश्विन शुक्ल पूर्णिमा २०७४	५ अक्टूबर	रानी दुर्गावती जयन्ति
१४ गते	ऊर्ज मास	१९३९ शक स.	आश्विन कृष्ण प्रतिपदा २०७४	६ अक्टूबर	डॉ. मेघनाथ शाह जयन्ति, गुरु हरराय पुण्यतिथि
१५ गते	ऊर्ज मास	१९३९ शक स.	आश्विन कृष्ण द्वितीया २०७४	७ अक्टूबर	पंचक समाप्त १२:३०, दुर्गा भाभी जयन्ति, गुरु गोविन्दसिंह पु.
१६ गते	ऊर्ज मास	१९३९ शक स.	आश्विन कृष्ण तृतीया २०७४	८ अक्टूबर	जयप्रकाश नारायण एवं मुंशी प्रेमचन्द पुण्यतिथि, भारतीय वायुसेना दिवस
१७ गते	ऊर्ज मास	१९३९ शक स.	आश्विन कृष्ण चतुर्थी २०७४	९ अक्टूबर	कृतिका-२३:५२, गुरु रामदास जयन्ति, विश्व डाक दिवस
१८ गते	ऊर्ज मास	१९३९ शक स.	आश्विन कृष्ण पंचमी २०७४	१० अक्टूबर	भारतीय डाक दिवस, विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस
१९ गते	ऊर्ज मास	१९३९ शक स.	आश्विन कृष्ण षष्ठी २०७४	११ अक्टूबर	जयप्रकाश नारायण जयन्ति, अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस
२० गते	ऊर्ज मास	१९३९ शक स.	आश्विन कृष्ण सप्तमी २०७४	१२ अक्टूबर	क्षय तिथि अष्टमी-२९:०२, डॉ. राममनोहर लोहिया दिवस, दुर्गा भाभी पुण्यतिथि
२३ गते	ऊर्ज मास	१९३९ शक स.	आश्विन कृष्ण एकादशी २०७४	१५ अक्टूबर	प. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' पु., डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ज.
२४ गते	ऊर्ज मास	१९३९ शक स.	आश्विन कृष्ण द्वादशी २०७४	१६ अक्टूबर	विश्व खाद्य दिवस
२५ गते	ऊर्ज मास	१९३९ शक स.	आश्विन कृष्ण त्रयोदशी २०७४	१७ अक्टूबर	प्रदोष, धनतेरस, जयानन्द भारती जयन्ति, स्वामी रामतीर्थ पु.
२६ गते	ऊर्ज मास	१९३९ शक स.	आश्विन कृष्ण चतुर्दशी २०७४	१८ अक्टूबर	रूप चतुर्दशी, वीर हनुमान जयन्ति
२७ गते	ऊर्ज मास	१९३९ शक स.	आश्विन कृष्ण अमावस्या २०७४	१९ अक्टूबर	चित्रा-२०:४३, शारदीय नव सष्येष्टि उत्सव, (दीपावली)
२९ गते	ऊर्ज मास	१९३९ शक स.	कार्तिक शुक्ल द्वितीया २०७४	२१ अक्टूबर	भ्रातृ द्वितीया (भाईदूज), विश्वकर्मा जयन्ति
३० गते	ऊर्ज मास	१९३९ शक स.	कार्तिक शुक्ल तृतीया २०७४	२२ अक्टूबर	अशफाक उल्ला खान व स्वामी रामतीर्थ जयन्ति
०१ गते	सहस् मास	१९३९ शक स.	कार्तिक शुक्ल चतुर्थी २०७४	२३ अक्टूबर	वृश्चिक सक्रान्ति-१०:५७
०४ गते	सहस् मास	१९३९ शक स.	कार्तिक शुक्ल षष्ठी २०७४	२६ अक्टूबर	उत्तराषाढ़-१३:२०
०५ गते	सहस् मास	१९३९ शक स.	कार्तिक शुक्ल सप्तमी २०७४	२७ अक्टूबर	जतीन्द्रनाथ दास व जालाराम जयन्ति
०६ गते	सहस् मास	१९३९ शक स.	कार्तिक शुक्ल अष्टमी २०७४	२८ अक्टूबर	पंचक प्रारम्भ- २७:२४
०८ गते	सहस् मास	१९३९ शक स.	कार्तिक शुक्ल दशमी २०७४	३० अक्टूबर	डॉ. होमी जहांगीर भाभा जयन्ति
०९ गते	सहस् मास	१९३९ शक स.	कार्तिक शुक्ल एकादशी २०७४	३१ अक्टूबर	स.वल्लभभाई पटेल, सन्त नामदेव तथा कालिदास जयन्ति एवं श्रीमती इन्दिरा गान्धी बलिदान दिवस

भारत के एकमात्र वैदिक पंचांग से

किसी भी शंका समाधान एवं पंचांग प्राप्ति हेतु आ. दार्शनेय लोकेश, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) से मो. ०९४१२३५४०३६ पर सम्पर्क करें।

मोदी जी! न्यू इण्डिया नहीं, प्राचीन आर्यावर्त्त को सार्थक करो

भारत देश के यशस्वी प्रधानमन्त्री श्रद्धेय मोदी जी!

आपने लाल किले की प्राचीर से ७१वें स्वतन्त्रता दिवस की गरिमामयी बेला में हमारी आन-बान-शान के प्रतीक ध्वज का ध्वजारोहण करते हुए अपने उद्‌बोधन में '**न्यू इण्डिया**' का सन्देश दिया है और उसके लिए २०१७ से वर्ष २०२२ तक पांच वर्ष का समय निर्धारित करते हुए इसकी सार्थकता हेतु 'संकल्प से सिद्धि' का मन्त्र दिया है। यह सन्देश केवल देश-दुनिया में बसे भारतीयों के लिए ही नहीं था। वरन् सम्पूर्ण विश्व के लिए था, क्योंकि जबसे आप प्रधानमन्त्री बने हैं अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा, जुझारुता तथा क्रान्तिकारी निर्णयों/कार्यों से भारत की विशिष्ट पहचान सम्पूर्ण विश्व में स्थापित होकर सम्पूर्ण विश्व भारत तथा आपकी ओर आकृष्ट हुआ है। आज स्थिति यह है कि आपकी गिनती वैश्विक लोकप्रिय नेताओं में होती है और विपक्ष की हालत पतली है, वह भौचक है। उसे विपक्ष मानना-कहना अन्य के लिए कठिन तो है ही स्वयं कांग्रेस के लिए भी स्वीकारना कष्टप्रद है, क्योंकि देश की स्वतन्त्रता के पूर्व से वह अपने प्रभाव की सत्ता में रही है, अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के माध्यम से देश के बहुसंख्यक वर्ग के हितार्थ अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले भारतरत्न पं. मदनमोहन मालवीय जी, भाई परमानन्द, वीर सावरकर जैसे स्वतन्त्रता के लिए जेलों की यात्राएं करने वाले नेता भी बहुसंख्यक वर्ग का कांग्रेस से मोह कम नहीं कर पाये और देश की स्वतन्त्रता के पश्चात् उसके एकछत्र सत्ता में रहने से वह सत्ता की इतनी आदी हो गई है कि उसे विपक्ष की भूमिका ही याद नहीं है तथा वह आज भी गलतफहमी में है कि उसका कोई विकल्प नहीं है। पूर्व में एक-दो बार सत्ता से उसे बाहर जाना पड़ा था, किन्तु अतिशीघ्र उसकी वापसी हो गई थी। वर्ष २०१४ के चुनाव में उन्होंने सपने में नहीं सोचा था कि उनकी इस प्रकार की हालत हो जावेगी, क्योंकि मुस्लिम और दलित वोटों को तो वह अपनी सम्पत्ति समझती आई है और बहुसंख्यक वर्ग को मूर्ख। २०१४ के चुनाव में सत्ता से बाहर होने के बाद भी वह अतिवश्विास में थी कि बहुत जल्दी ही मोदी जी के '**अच्छे दिन**' की हवा निकालकर उन्हें वापस गुजरात भेज देंगे, किन्तु यह क्या हुआ वोटर के अच्छे दिन के साथ-साथ भारत के भी अच्छे दिन आ गए, क्योंकि प्रथम बार देश के शीर्ष चार संवैधानिक पदों राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, लोकसभा अध्यक्ष तथा उपराष्ट्रपति पद पर वे लोग पदारूढ़ हुए हैं, जिनकी पृष्ठभूमि साधारण परिवारों से होकर जिनकी रगों में देश की मूल धर्म-संस्कृति-राष्ट्रवाद की विचारधारा कूट-कूट कर भरी हुई है। अन्यथा कुछ अपवादों को छोड़कर कैसी-कैसी विचारधारा के व्यक्ति कांग्रेस की तुष्टीकरण की नीति के चलते उपकृत हुए हैं इसका परिचय निवृत्तमान उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी के अपने बिदाई बेला में दिए गए वक्तव्य से मिलता है कि पिछले दिनों देश में घटित घटनाओं से एक वर्ग में बैचेनी बढ़ी है उनका सीधा-सीधा इशारा मुस्लिमों की तरफ था। देश के शीर्ष पद पर १०वर्षों तक बैठे व्यक्ति की मानसिकता कितनी दूषित हो सकती है इसका परिचय देश-दुनिया को मिला। आपके वक्तव्य से प्रश्न उठता है कि मुस्लिमों की बैचेनी कैसे दूर हो? प्रथम तो उनकी (अंसारी जी) विचारधारा का इस देश की मूल धर्म संस्कृति विचारधारा से कोई तालमेल नहीं। इस देश तथा इस देश के रहवासियों पर उनकी विचारधारा कुछ अपवाद छोड़कर कोई उपकार नहीं। हां! अपकारों से इतिहास भरा पड़ा है। देश की स्वतन्त्रता के पूर्व ही अंसारी जी की विचारधारा ने भाईचारे, सद्‌भाव, सहिष्णुता का परिचय नहीं देकर इनके स्थान पर रक्त की नदियां बहाकर अपने लिए पृथक देश की मांग पूरी करवाकर माने जिसका एकमात्र कारण यह था कि देश की स्वतन्त्रता के बाद हिन्दू-मुस्लिम साथ नहीं रह पाएंगे। यह आपकी विचारधारा के नेतृत्व करने वाले नेताओं का विचार था और पृथक देश की जो मांग स्वीकार की गई वह विचारधारा के अनुसार आबादी की अदला-बदली के शर्त के आधार पर हुई। छीन-झपट कर जोर दबाव से इस भारत भूमि के टुकड़े कर भारत की आजादी से एक दिवस पूर्व १४ अगस्त १९४७ को विचारधारा पर आधारित इस्लामिक देश पाकिस्तान अस्तित्व में आया और खण्डित भारत को एक दिवस पश्चात् स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। विचारधाराओं की पृथकता के आधार पर भारत का विभाजन हुआ, किन्तु एक हिस्सा विचारधारा पर आधारित इस्लामिक देश बना तथा दूसरा हिस्सा धर्म निरपेक्ष अर्थात् अपनी मूल धर्म संस्कृति को दरकिनार कर आयातित विचारधाराओं को भी अपने विस्तार हेतु संरक्षण ही नहीं विशेष संरक्षण तथा मूल धर्म-संस्कृति की उपेक्षा, उसका विरोध और उसे रसातल में पहुंचाने वालों का संरक्षणकर्ता राष्ट्र बना तथा आबादी की अदला-बदली की शर्त को भी कूड़ेदान में फेंककर इसी आबादी को तुष्टीकरण के शस्त्र के रूप में उपयोग कर सत्ता पर कब्जा जमाये रखने का माध्यम बना। वर्तमान में इस देश की विडम्बना है कि कुछ अपवाद छोड़कर मुस्लिम बहुल आबादी वाले क्षेत्र में किसी अन्य को न तो राजनीतिक दल टिकट देते है, ना अन्य विचारधारा का व्यक्ति वहां से जीत सकता है, जबकि बहुसंख्यक वर्ग के बहुल क्षेत्र से अल्पसंख्यक समुदाय का कोई भी व्यक्ति सहजता से चुनाव लड़ सकता है, जीत सकता है। राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, लोकसभा अध्यक्ष, मन्त्री, सांसद, विधायक आदि बन सकता है। अल्पसंख्यकता के नाम पर वे विशेष रूप से उपकृत है शिक्षा-कानून में उनके लिए पृथक से सुविधाएं प्राप्त हैं। सुविधाओं का उपयोग करते हुए देश के किसी भी उच्च पद पर पहुंच सकते हैं। न्यायपालिका, कार्यपालिका तथा व्यवस्थापिका तीनों अंगों में कहीं भी किसी भी पद पर पहुंच सकते हैं और पहुंचे हैं। कहीं कोई भेदभाव नहीं है, किन्तु फिर भी अंसारी जी को अल्पसंख्यक समुदाय में बैचेनी नजर आ रही है। अंसारी जी को ये नहीं नजर आता कि ५ लाख कश्मीरी पण्डित लगभग ३० वर्षों से अपने घर-बार छोड़कर विस्थापितों का जीवन जी रहे हैं। कोई दिन ऐसा नहीं जाता जब हमारे सुरक्षाकर्मी सीमा पर तथा कश्मीर में शहीद न होते हों, केरल तथा कर्नाटक में हिंदू संगठनों के निर्दोष कार्यकर्ता आए दिन मारे जा रहे हैं।

बगैर किसी पक्षपात के पूर्ण विशेष अवसर, सम्मान, सुविधाएं, उनके समुदाय को दी जा रही है और उसके बाद भी उनका वर्ग बहुसंख्यक वर्ग की धर्म-संस्कृति, उनकी भावनाओं का सम्मान नहीं करे, मखौल उड़ाये, जब भी जहां भी अवसर मिले उन्हें प्रताड़ित करे तो प्रतिक्रिया में कहीं कोई इक्का-दुक्का घटना घटित हो जाए तो अंसारी जैसे लोगों और वोट बैंक के चलते इनके आकाओं चाहे वे बहुसंख्यक वर्ग के ही हों को असहिष्णुता नजर आए और बैचेनी अनुभव हो तो क्या किया जाए? **क्या इस देश को भी इस्लामिक राष्ट्र घोषित कर बहुसंख्यक वर्ग के लोगों को दूसरे दर्जे के**

(काफिर) **घोषित कर देने से ही इन लोगों की बैचेनी दूर होगी? अथवा इनकी विचारधारा में इमान नहीं लाने वालों को लूट लिया जावे, उनकी बस्तियां जला दी जावें, उनके धर्मग्रन्थों की होली जलाई जावे और उन्हें मार डाला जावे। जैसे पूर्व में किया गया है तब उनकी बैचेनी दूर होगी?** हां अवश्य! क्योंकि इनकी विचारधारा के द्वारा पाकिस्तान-बांग्लादेश की भूमि हड़प लेने के बाद भी वहां के आये तथा कश्मीर व देश के अन्दर उत्पन्न आतंकवादी आज भी वहीं सब करते आ रहे हैं और कर रहे हैं, जो इनकी विचारधारा ने पदार्पण के समय से आज तक किया है।

आपने २०१४ के लोकसभा चुनावों में मतदाताओं को अच्छे दिन आने का विश्वास दिलाया था आपने अपने तीन वर्षीय कार्यकाल में जन-धन-योजना के माध्यम से शून्य बैलेंस पर उन लोगों के बैंक खाते खुलवाये, जिन्होंने बैंक के दरवाजे तक नहीं देखे थे। निर्धन तथा मध्यम तबके के ऐसे करोड़ों व्यक्तियों के अच्छे दिन आए वे बैकिंग व्यवस्था से जुड़े, उनमें संग्रहणवृत्ति का जन्म हुआ, इससे सर्वाधिक बैंक खाते वाला देश होने से भारत का भी मान बढ़ा।

समग्र स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत स्वच्छता के प्रति जन जागरुकता बढ़ी, उन महिलाओं के अच्छे दिन आए जिनके घरों में शौचालय नहीं थे और बाहर शौच जाना दिन पर दिन दूभर होता जा रहा था। क्योंकि जनसंख्या वृद्धि के तथा भूमि पर बढ़ते अतिक्रमण व आधिपत्य के कारण शौच जाने के स्थान ही लोगों ने नहीं छोड़े तथा नारी को भोग की वस्तु समझने वाले दुष्ट-दुराचारियों की भी भरमार हो गई है।

सम्पूर्ण विश्व को हत्प्रभ करने वाला १०००-५०० के नोटों के प्रचलन को बन्द करने का आपका निर्णय रहा। आपके इस निर्णय से एक झटके से ८५ प्रतिशत मुद्रा प्रचलन से बाहर हो गई। इस निर्णय से जो अफरा-तफरी मची उससे आपके विरोधियों की बांछे खिल उठी, उन्होंने इसे भुनाने का बहुतेरा प्रयास किया, किन्तु देश की जनता ने इस कदम का स्वागत किया और कष्ट उठाकर भी आपका सहयोग किया। सीधे-सीधे इसका लाभ आम जनता को नहीं मिला हो, किन्तु उनके लिए तो ये भी अच्छे दिन वाला रहा कि भ्रष्ट राजनीतिज्ञ, अधिकारियों, हवाला कारोबारियों आदि अवैधानिक गतिविधियों से अकूत धन इक्टठा करने वालों के चेहरों पर हवाइयां उड़ रही थीं, वे सामान्य लोगों से नोट बदलवाने में सहयोग की याचना कर रहे थे। जो अपने रिश्तेदारों-परिचितों को आवश्यकता होने पर उधार देने को तैयार नहीं होते थे, वह भी इस दौर में लाखों रुपए आगे आकर देने को उतावले थे। जो उद्योगपति अपने कर्मचारियों को आवश्यकता होने पर अग्रिम देने में आना-कानी करते थे तथा झिड़कियां देते थे, वे कई-कई माह, वर्ष की पगार आगे आकर खुले हाथों से बाँट रहे थे। जो जन-धन खाते शून्य बैलेंस पर खुले वे कुछ अपवाद छोड़कर लबालब भर गए। उस दौर में ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे नोटों की वर्षा हो रही हो और देश का प्रत्येक व्यक्ति जिसके पास बेहिसाबी बड़े नोट जमा थे, वह उदार हो गया था। बड़े नोट जिनके पास भी अधिक संख्या में थे वे उसे विषधर की तरह प्रतीत हो रहे थे। अनेक बेरोजगारों ने लाईन में लगकर नोट बदलवाने में बहुत अच्छी कमाई की।

आपके मेक इन इण्डिया, स्टार्ट अप इण्डिया के माध्यम से सेना के अच्छे दिन आए। विशेष रूप से आपने उपेक्षित बुनकरों की सुध ली और उन्हें अच्छे दिन दिखाये। आपने मूल दस्तावेज की छाया प्रति को उच्चाधिकारियों से अभिप्रमाणित करने की बाध्यता को समाप्त कर स्वप्रमाणित प्रति को मान्यता देकर सामान्य वर्ग विशेषकर विद्यार्थी वर्ग को बड़ी राहत प्रदान की।

अतिविशिष्ट महानुभावों के वाहनों पर लाल-पीली बत्तियों के उपयोग को प्रतिबन्धित करके आपने सामान्यजन के मान-सम्मान में वृद्धि करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया। बेनामी सम्पत्ति का कानून बनाकर आपने अल्प काल में ८०० करोड़ रुपए की बेनामी सम्पत्ति जब्त करने का मार्ग प्रशस्त कर आमजन के हितों पर डाका डालने वालों के नाक में नकेल डाली है। एक देश-एक टैक्स के रूप में जी.एस.टी. लागू करने के ऐतिहासिक फैसले तथा उसका यथा समय में क्रियान्वयन ने सम्पूर्ण विश्व को आपकी कार्यशैली के प्रति प्रभावित किया है।

वैदिक संस्कृति के वाहक श्रीराम-श्रीकृष्ण

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम और योगीराज श्री कृष्ण जी आर्य जैसा हम जानते हैं 'आर्य' यानि श्रेष्ठ। ऐसे ही थे। श्रीराम और श्रीकृष्ण। दोनों महापुरुष पूर्णतया वैदिक संस्कृति के अनुरूप रहे व चले। श्रीराम के लिए राजा दशरथ ने पुत्रेष्टी यज्ञ किया व राम को पाया, श्रीकृष्ण के लिए वासुदेव- देवकी ने कंस की जेल में घोर तप किया। श्रीराम ने गुरुकुल में ऋषि वशिष्ठ के आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त की।

गुरु गृह पढ़न रघुराई, अल्पकाल विद्या सब आई।

श्री कृष्णचन्द्र जी ने उज्जैयनी में सांदीपनी आश्रम में विद्या पाई। गरीब ब्राह्मण सुदामा के साथ गुरु सांदीपनी के पास रहे अन्त तक मित्रता निभाई। श्री कृष्ण नित्य हवन संध्या करते थे।

श्रीराम प्रातःकाल उठिके रघुनाथा माता-पिता गुरु नावहि माथा।

श्रीराम और श्रीकृष्ण ने वैदिक परम्पराओं को पूर्णरूप से निभाया, राक्षसों अत्याचारियों और अन्यायियों से आमजन की रक्षा की। राम ने युद्ध टालने के लिए हनुमान, अंगद, विभिषण को दूत बनाकर रावण के पास भेजा। श्रीकृष्ण महाभारत युद्ध टालने के लिए स्वयं दूत बनकर कौरवों के पास गए थे। निषाद कोल किरात केवट भीलनी जैसे छोटे लोगों से मित्रता समरसता व सुग्रीव हनुमान से मदद श्रीराम का बड़प्पन था। श्रीकृष्ण ने सदा सत्य का साथ दिया। मोह भंग करने के लिए गीता उपदेश दिया। दोनों महापुरुष वैदिक संस्कृति के स्तम्भ थे। श्रीराम ने ऋषि-मुनियों और यज्ञ की रक्षा की ओर श्रीकृष्ण ने गौरक्षा, गौपालन और अबला, अचला का साथ दिया। श्रीराम त्रेतायुग, के मर्यादा पुरुष थे तो श्रीकृष्ण चन्द्रजी द्वापरयुग के योगीराज। दोनों वैदिक संस्कृति के प्रति पोषक थे, भाग्यवान और भगवान युग पुरुष अवतारी महापुरुष थे। परन्तु ईश्वर के अवतार नहीं थे। क्योंकि ईश्वर कभी अवतार नहीं होता।

- मोहनलाल दशोरा 'आर्य' -
नारायणगढ़, जिला-मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष- ०९५७५७९८४१२

रेलवे के पृथक बजट को प्रस्तुत करने की बाध्यता समाप्त कर आपने देश के आम बजट में ही उसे समाहित कर देश को अनावश्यक खर्चों आदि से बचाया है जो प्रशासनिक सुधारों के प्रति आपकी दृढ़ इच्छाशक्ति को व्यक्त करता है। विकलांगों के अच्छे दिन के लिए आपने उन्हें नया नाम दिव्यांग प्रचलित कर उनके हितार्थ अनेक योजनाएं चलाकर उनके अच्छे दिन लाये हैं। वन रैंक- वन पैंशन के माध्यम से आपने देश के सेवानिवृत्त प्रहरियों के चेहरों पर मुस्कान बिखेरी है।

प्रधानमन्त्री कौशल विकास योजना के माध्यम से अल्पशिक्षित अति पिछड़े विशेषकर महिलाओं को आपने अच्छे दिन का मार्ग प्रशस्त किया है। समृद्ध वर्ग की गैस सब्सिडी सरेंडर का निर्धन वर्ग हेतु घरेलु गैस की उज्ज्वला योजना, कृषकों के लिए ई-मण्डी तथा फसल बीमा योजना आदि कई कार्यों की वृहद सूची आपके तीन वर्ष के कार्यकाल की है।

समस्त आमजन के हितकारी योजनाओं का पलिता लगाकर उनका दोहन करने वाले नेताओं-अधिकारियों पर प्रहार करते हुए तथा फर्जी व्यापारिक फर्मों को पंजीकृत कर कागजी फर्मों के अवैध धन प्रवाह पर अपनी वक्रदृष्टि के द्वारा समस्त शासकीय कार्यों में आधार से लिंक करने का अभूतपूर्व जनहितकारी कदम आपके नेतृत्व में उठाया गया है।

तीन तलाक के मामले में मतों की परवाह न करते हुए मानवतावादी पक्ष को दृष्टिगत रखकर आपने शुरू से मुस्लिम महिलाओं के पक्ष में पैरवी की तथा केन्द्र सरकार की ओर से उच्चतम् न्यायालय में हलफनामा प्रस्तुत किया जिसका परिणाम दिनांक २२-८-१७ को मुस्लिम महिलाओं के पक्ष में जाकर उनके अच्छे दिन आये हैं। कुल मिलाकर आपने अपने २०१४ के अच्छे दिन के वादे को अच्छे से निभाया है। जिस कारण आपको कांग्रेस मुक्त भारत के लक्ष्य में सफलता प्राप्त हुई है और कांग्रेस का जहाज डूबता प्रतीत हो रहा है और इस पर सवार अनेक अवसरवादी इसे छोड़कर भाग रहे हैं।

किन्तु इन कार्यों में से कुछ अपवाद छोड़कर अधिकांश सतही हैं ये आप भी अच्छे प्रकार से जानते हैं जैसे जन-धन योजना में खाता खुलवा लेना ही पर्याप्त नहीं है, जब तक खाता खुलवाने वाला पुरुषार्थ करके काम-धन्धा करके धन अर्जित नहीं करता और कमाये गए धन में से अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति के उपरान्त दुर्व्यसनों में धन को अपव्यय न कर, बचत कर धन खाते में जमा नहीं करवाता तब तक खाता खुलवाना व्यर्थ है। जन-धन योजना में जो रुपये जमा हुए उसका मुख्य कारण विमुद्रीकरण भी है।

स्वच्छता के विषय में सबसे अधिक मानसिक स्वच्छता आवश्यक है। वैदिक धर्म सिद्धान्तों के पतन का काल छह हजार वर्षों का है तथा गुलामी का काल एक हजार वर्षों का है। इस लम्बे काल में तथा लार्ड मैकाले की योजनानुसार अंग्रेजों के द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी के लिए बाबू बनाने के लिए थोपी गई शिक्षा से कुछ अपवादों को छोड़कर आज हम लोग वैदिक धर्म संस्कृति प्रणित मानवीय मूल्यों, संवेदनाओं को दरकिनार कर काले अंग्रेज बन मानसिक रूप से दीवालिये हो चुके हैं। शैक्षणिक, वैचारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक मूल्यों के स्तर पर स्वतन्त्रता अभी शेष है। आमजन के दिमाग की स्वच्छता उच्च मानवीय मूल्यों की वैचारिक खुराक (ईश्वर, प्रकृति, जीवात्मा, पुनर्जन्म, कर्मफल व्यवस्था के वैदिक ज्ञान) के बगैर सम्भव नहीं है। मात्र स्वच्छता के विज्ञापनों से कुछ समय तक यह टीप-टॉप अर्थात् बाहरी सफाई वह भी देखा-देखी (भेड़चाल) प्रदर्शन मात्र कुछ समय तक की हो सकती है। थोड़ी सी ढील मिली तो जिस प्रकार रबर को खींचों और छोड़ो तो वह वहीं का वहीं वाली गत इसकी भी है।

युग नायक महर्षि दयानन्द सरस्वती

युग नायक ऋषि दयानन्द की, शिक्षाओं को मानो।
करो वेद प्रचार जगत् में, भारत के विद्वानों।।

जगत् गुरु ऋषि दयानन्द थे, ईश्वर भक्त निराले।
वेदों के विद्वान धुरन्धर, देशभक्त मतवाले।।
बाल ब्रह्मचारी, तपधारी, संत अजब थे त्यागी।
शीलवन्त गुणवान दयामय, थे अद्‌भुत वैरागी।।
जीव मात्र के हित चिंतक को, ठीक तरह तुम जानो।
करो वेद प्रचार जगत् में, भारत को विद्वानों।।१।।

वेदज्ञान को भूल गई थी, बिलकुल दुनिया सारी।
अंधकार में भटक रहे थे, दुनिया के नर-नारी।।
चेतन की पूजा तज दी थी, जड़पूजा की जारी।
लाखों गऊएं रोजाना, जग में जाती थी मारी।।
पढ़ो सभी इतिहास पुराना, गलत ठान मत ठानो।
करो वेद प्रचार जगत् में, भारत के विद्वानों।।२।।

देव पुरुष ने कृपा की थी सारे जग पर भारी।
कर्म प्रधान बताया ऋषि ने, समझाये नर-नारी।।
दुर्गुण त्यागो, सद्‌गुण धारो, बनकर परोपकारी।
छुआछुत की, ऊंच-नीच की दूर करो बीमारी।
ऋषि ने गौ को मात बताया, ऋषि की शिक्षा मानो।
करो वेद प्रचार जगत् में, भारत के विद्वानों ।।३।।

भारत था परतन्त्र, जुलम करते थे गौरे भारी।
उनके जुल्मों से आतंकित, थी तब जनता सारी।।
स्वामीजी ने आजादी का, अनुपम पाठ पढ़ाया।
अंग्रेजों को मार भगाओ, वैदिक मार्ग बताया।।
धीर-वीर निर्भिक गुरु की, महानता पहचानो।
करो वेद प्रचार जगत् में, भारत के विद्वानों।।४।।

याद रखो, यदि देव दयानन्द, अगर न जग में आते।
ऋषियों के वंशज दुनिया में, ढूंढे से न पाते।।
राम-कृष्ण के भक्त आर्यजन, दर-दर धक्के खाते,
वेद शास्त्र, रामायण, गीता के पाठक नहीं पाते।

'नंदलाल' ऋषि दयानन्द के, गुण गाओ मर्दानों,
करो वेद प्रचार जगत् में, भारत के विद्वानों ।।५।।

विश्वकर्मा कुल गौरव - **पं. नन्दलाल निर्भय**
बहीन, जनपद- पलवल, हरियाणा
चलभाष: ९८१३८४५७७४

जब तक इसकी कलुषित आत्मा की अच्छे प्रकार से धुलाई नहीं होती तब तक इससे अधिक उम्मीद करना व्यर्थ है और उस धुलाई का वाशिंग पावडर एकमात्र है-वैदिक विचार, जिसकी फैक्ट्री है वेद। वैदिक ज्ञान से शून्य कामी, क्रोधी, लोभी, आसक्ति ग्रस्त व्यक्ति इन्द्रियों का दास होगा। ऐसे व्यक्ति ही जनसंख्या वृद्धि तथा समाज में अनेकानेक समस्याओं के उत्पत्ति के कारक बनते हैं। ऐसा जानकारी में आता है कि १८वीं शताब्दी में सम्पूर्ण विश्व की जनसंख्या १०० करोड़ थी जो वर्तमान में ७५० करोड़ है। भारत की स्वतन्त्रता के समय देश की आबादी ३६ करोड़ बताई जाती है जो १३५ करोड़ के लगभग पहुंच चुकी है। इतनी तेजी से जनसंख्या में वृद्धि होगी तो समस्याएं तो उत्पन्न होगी ही, क्योंकि भूमि तो उतनी की उतनी होगी। अधिकांश समस्याओं का कारण जनसंख्या वृद्धि है। ब्रह्मचर्य के विषय में आज कोई नहीं जानता। ब्रह्मचर्य का अर्थ लोग समझते हैं घर से भागकर बाबाजी बन जाना। जबकि वैदिक धर्म में मनुष्य जीवन को औसतन १०० वर्ष आयु का मानकर चार भागों में विभक्त किया जाकर प्रथम विद्यार्जन का काल ब्रह्मचर्य आश्रम कहा जाता था। जो मानव के निर्माण का काल है। जिसमें मनुष्य जीवन की विविधता, इन्द्रियों के संयम का ज्ञान प्राप्त किया जाता था उसके पश्चात् गृहस्थ आश्रम और गृहस्थ आश्रम के बाद लगभग ५०वर्ष की आयु में घर-परिवार से विरक्त होकर व्यक्ति वन को प्रस्थान कर वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश कर समाज सेवा को समर्पित हो जाता था। आज वानप्रस्थ आश्रम के पश्चात् संन्यास आश्रम की अवस्था में भी लोग जीवन साथी खोज रहे हैं। घर में पड़े-पड़े सड़ रहे हैं, समाज को कौन समय देगा, समाज कैसे सशक्त विचारवान बनेगा? न तो बालक को नि:शुल्क शिक्षा प्राप्त हो रही है, ना व्यक्ति अपने गृहस्थ आश्रम में समय और धन समाज के कल्याण हेतु अर्पित कर रहा है, ना ही गृहस्थ आश्रम पश्चात् जीवन को समाज सेवा के लिए अर्पित कर रहा है तो उलट-पुलट तो होगा ही।

आज हमारे बिग बास अमिताभ जी कह रहे हैं- **'दरवाजा बन्द तो बीमारी बन्द'** । दरवाजा बन्द करके शौच जाने से बीमारी कैसे बन्द हो जावेगी? देश के अनेक क्षेत्र ऐसे हैं जहां पर पीने का पानी उपलब्ध नहीं होता। शौचालयों में पानी कहां से डालोगे? पाश्चात्य देशों की नकल कर लेना और बात है, वहां के जैसी हमारी ड्रेनेज सिस्टम कहां है? शौचालयों के सैप्टिक टैंक से ओवर फ्लो गन्दा पानी कहां जा रहा है? या तो नालियां नहीं है, और है तो खुली हैं। जो भरी रहती हैं तथा सड़कों पर गन्दा पानी फैलाती रहती है। अण्डर ग्राउण्ड ड्रेनेज सिस्टम भी है तो वह या तो किसी नदी-नाले में मिलता है। आज जितनी जनसंख्या मनुष्यों की बढ़ी है, उसके कई गुना अधिक जनसंख्या मक्खी-मच्छरों की बढ़ गई है देश की स्वतन्त्रता के पश्चात् अनेक वर्षों तक लोगों ने ए.सी., कूलर के नाम नहीं सुने थे, पंखे कुछ विशिष्ट लोगों के घरों में ही होते थे। आज बगैर पंखे के आप सो नहीं सकते। पहले के लोग खुले स्थानों पर बैठकर सन्ध्या-उपासना करते थे, समाधि लगाते थे, क्या आज यह सब सम्भव है?

खुले में शौच प्राकृतिक व्यवहार है जो अपने निवासों से दूर होता है। आज तो जहां खा रहे हैं वहीं निवृत्त हो रहे हैं तथा सैप्टिक टैंक में जमा कर रहे हैं। यह सब विवशता के कारण करना पड़ रहा है। जनसंख्या की इतनी बहुलता हो गई कि भूमि कम पड़ गई है। स्वतन्त्रता के पश्चात् तक खेती की भूमि का कोई मूल्य नहीं था, लगान के पैसे में भूमि मिल जाती थी। शौच के लिए उपयुक्त स्थान होते थे। महिलाओं-पुरुषों के पृथक-पृथक स्थान होते थे। लोगों में नैतिकता, मानवीय मूल्य इतने अधिक थे कि गांव की बेटी सबकी बेटी थी। पेट भरने की मारा-मारी नहीं थी। नेताओं, अधिकारियों के भारी भरकम वेतन, भत्ते, सुविधाओं, सुरक्षा तथा पेंशन आदि प्रशासनिक मशीनरी का भारीभरकम बोझ टैक्स के रूप में आम मानव के उपर थोंप दिये जाने से मानव जीवन दूभर हो गया है, उसमें परोपकार आदि देने की भावना समाप्त होकर वह छीन-झपट वृत्ति वाला बन गया है।

गांव में खेती किसानी घाटे का धन्धा बन गया। मशीनों का उपयोग खेती में होने से मनुष्य उपयोगिता गांवों में कम हो गई, गांव का औद्योगिक विकास नहीं हुआ, इन कारणों से व्यक्ति नगरों-महानगरों की ओर भाग रहा है। प्राचीन काल में ग्राम-नगर से चार कोस की दूरी पर सुरम्य वातावरण में आवासीय शिक्षा के केंद्र (गुरुकुल) होते थे, जहां ६ से २५ वर्ष आयु तक रहकर बालक विद्यार्जन करता था। ५० वर्ष की आयु पश्चात् व्यक्ति ग्राम-नगरों को छोड़ वन में भोगों से दूर सादा जीवन व्यतीत करता था। विचार करो गांवों से पलायन न हो, गृहिस्थी के अतिरिक्त ग्राम-नगर में कोई निवास न करें तो नगरों-महानगरों में जनसंख्या का दबाव कितना कम हो जावेगा। हम शौचालयों के विरोधी नहीं है जहां आवश्यक हो वहां बनाये जावे, किन्तु उसके निपटान की भी समूची व्यवस्था तो हो। नागरिकों में उसके प्रति जागरुकता तो हो। अनेक महानुभाव शौचालय पादुका पहनकर जाते हैं, आते हैं हाथ धो लेते हैं, पांव नहीं धोते क्योंकि मकान में टाइल्स लगी होने से कीच जो होगा। शौचालयों के बाहर मोटे-मोटे गलीचे (पांव पौछ) बीछे रहते हैं। जो कीटाणु पैदा करने की फैक्ट्री के रूप में पड़े रहते हैं। शौचालयों की तो छोड़ों लोगों के घरों के अन्दर तक धूप-हवा का निर्बाध आवागमन नहीं होता है तो रोगों का साम्राज्य तो बढ़ेगा ही सही। विचार करो मनुष्य के अतिरिक्त अरबों-खरबों अन्य प्राणी है ये भी सभी शौच करते हैं, मरते भी है इनके शौचालय है क्या? इनके मृत शरीरों की अन्तयेष्टि कौन कर रहा है? क्या मनुष्य सम्पूर्ण पृथिवी की धुलाई कर सकता है? सम्पूर्ण पृथिवी की धुलाई जिस वर्षा रूपी व्यवस्था से होती है उन जल से भरे महासमुद्रों को आकाश में उत्पन्न करने वाला परमपिता परमात्मा है सम्पूर्ण पृथिवी की धुलाई वाला जल पृथिवी के महासमुद्रों में पहुंचता है क्या मनुष्य पृथिवी के महासमुद्रों को स्वच्छ कर सकता है? नहीं न! तो दिमाग वहां लगाओ जहां लगाना हो। उस परमपिता परमात्मा ने मनुष्य को इस संसार में कैसे रहे, क्या करें, क्या नहीं करें, का जो ज्ञान दिया उससे दूर भागता और अपना दिमाग ज्यादा चलाने की कोशिश करता है और जहां-जहां मनुष्य ने अपना दिमाग चलाया, वहां-वहां विकास से अधिक विनाश किया है। परमात्मा ने वेद के ज्ञान के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को पंच महायज्ञ का विधान किया है। सृष्टि के उपभोग तथा दूषित करने के एवज में उसे देवयज्ञ (अग्निहोत्र) प्रत्येक दिवस दोनों समय के लिए निर्देशित किया है, किन्तु आज का लोभा-निखट्टू मानव उसे करना तो दूर उसे जानता तक भी नहीं, जानेगा भी कहां से! **जब उस परमपिता परमात्मा को ही ठीक से नहीं जानता तथा नहीं मानता है तो उस परम प्रभु की व्यवस्था को कैसे जानेगा और मानेगा?** मानव ने स्वयं तथा आयातीत प्रशासनिक व्यवस्था ने जीवन इतना जटिल बना लिया है कि यज्ञ करना तो दूर यज्ञ के नाम से उसे घबराहट होती है। जिस देश में दूध-घी की नदिया बहती थी उस देश में लोगों को खाने-पीने को दूध-घी नहीं मिल रहे, यज्ञ कहां से करेंगे। वैज्ञानिक कहते हैं देशी गाय के १० ग्राम घी से यज्ञ करने से एक टन ऑक्सीजन का निर्माण होता है किन्तु वैदिक ज्ञान से विमुख मानव ने तो गाय को मारकर खा जाना ही पौष्टिकता का आधार मान लिया तो बताओ कैसे मानव का निर्माण होगा? और जब मानव का निर्माण नहीं होगा तो स्वाभाविक है कि वह स्वयं समस्या बनकर रह जावेगा।

शौच नाम शुद्धि का है, बाहरी स्वच्छता आवश्यक है किन्तु वह भी मानसिक स्वच्छता के बगैर संभव नहीं है। मानसिक स्वच्छता के लिए उस परम प्रभु, जिसने हमें उत्पन्न किया है, जो हमारा पालन कर रहा है उसी की व्यवस्था से हमें ज्ञान, आयु तथा भोग प्राप्त हुए हैं उसके पश्चात् हम इस संसार से सब छोड़ छाड़ कर चल देंगे। उस परमात्मा ने हमें हमारे हितार्थ वेद का ज्ञान दिया उसके बिना मानसिक स्वच्छता संभव ही नहीं।

पहले परिवार का मुखिया अकेला ही छोटा-मोटा काम करके १०-२० सदस्यों के परिवार का पेट भर लेता था। उसमें से भी बचा कर सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं को दान भी दे देता था। दान के साथ-साथ रिश्तेदारों, समाज को समय भी देता था। वह केवल नोट छापने की मशीन नहीं था। पहले के व्यक्ति दुर्व्यसनी-दुर्गुणी, अपवाद स्वरूप होते थे जो भय खाते थे। आज उलट-पुलट हो गया है, अच्छे लोग अपवाद स्वरूप हो गए हैं जो शराबियों, जुआरियों, बलात्कारियों, लुटेरों जो बहुसंख्यक हैं से भयभीत हैं। ग्रामों में पेट भरना मुश्किल है। नगर-महानगर दिन-दुनी, रात-चौगुनी गति से फैलते जा रहे हैं लोगों को सर छुपाने की जगह नहीं है। शौच के लिए स्थान कहां से आवेगा? पहले कल-कल करते झरने, नदी, नाले बहते थे, जिनके किनारे थोड़ा-सा गड्ढा करो और शुद्ध ताजा पानी पी लो। आज के छद्म विकासवादी भोगवादी व्यक्ति ने प्रकृति का दोहन पर दोहन कर जंगलों का विनाश कर डाला, पशु-पक्षी, जंगली जानवरों जो पर्यावरण के मित्र थे, उनको खा गया। उनके निवास स्थान पर अतिक्रमण कर अपने निवास बना डाले, नगरों को भागम-भाग वाले सीमेण्ट, क्रांकिट के जंगलों में बदल दिया, ऊपजाऊ कृषि भूमियां पल-प्रतिपल पांव पसार रहे नगरों-महानगरों की भेंट चढ़ गई। पैसे के लोभ में भोला-भाला अन्नदाता कृषक शहरी, उद्यमी, मजदूर, धूर्त न जाने क्या-क्या बन गया। कल-कल करते बहते झरने, नदी-नाले सब सूख गए, भू-जल स्तर गिरता गया अनेक स्थान पर आज एक हजार फिट नीचे भी पानी उपलब्ध नहीं है जो नदियां बह रही हैं उन्हें भी इस अकर्मण्य, असंवेदनशील मानव ने अपने अमैत्रिय व्यवहार से इतना दूषित कर दिया है कि वहां का पानी पीना तो दूर कुल्ला करना भी सम्भव नहीं है। भू-जल भी इतना दूषित है कि आज शुद्ध पानी की चाह में पानी पर पैसा व्यय हो रहा है फिर भी शुद्ध पानी की कहीं कोई उम्मीद नहीं। जल+ वायु पर जीवन है, किन्तु ये दोनों ही संकट में है। इसके लिए पूर्णरूपेण जिम्मदार हैं मानव का व्यवहार। पहले के लोग खुले में शौच जरूर जाते थे, किन्तु इतनी समस्याए नहीं थी। परमात्मा की व्यवस्था कृत सफाईकर्मी (सुअर) तथा अन्य अनेक कीट-पतंग, मरे हुए पशुओं को साफ करने वाले बाज, चील, कौए थे, किन्तु इस मानव के असद्व्यवहार ने सभी का जीवन संकट में डाल समाप्त कर दिया। सुअर तक को यह मारकर खा गया। पहले दूर-दूर गांव नगर होते थे। जंगल निर्जन स्थान होते थे। चार बजे ब्रह्म मुहूर्त में उठकर दो-पांच किलोमीटर जाता था, शुद्ध वायु, उषाकाल की सूर्य किरणों का पान करता था। आसन-प्राणायाम, ध्यान, उपासना, यज्ञ करता था। आज तो ब्रह्म मुहूर्त तक सोता ही नहीं शराब-कबाब- शबाब चरता ही रहता है। दिन सिर पर चढ़ जाने पर उठता है बगैर शौच- कुल्ला के बगैर जहर का प्याला (बैड-टी) हाथ में तथा विषकूट (बिस्कुट) से इसकी दिनचर्या शुरू होती है। इसके अन्दर आहार-विचार का इतना जहर भरा हुआ है कि कहते हैं कि सर्प आदि का काटा हुआ बच सकता है, किन्तु मनुष्य का काटा हुआ अर्थात् इसके असद् व्यवहारों से पीड़ित नहीं बच सकता।

कहने-लिखने को तो बहुत कुछ है, थोड़ा लिखा भी आपके लिए पर्याप्त है। आप समझदार हैं। स्वाध्यायशील हैं, भारतीय धर्म संस्कृति के पुरातन गौरव को जानने, समझने तथा मानने वाले हैं। आपने अपना सर्वस्व राष्ट्रधर्म को अर्पित किया है। अतः आपसे निवेदन है कि पाश्चात्यवादी भोगवादी औरों के द्वारा थोपे गए इण्डिया (मूर्खों का देश) को नहीं विश्वगुरु, चक्रवर्ती साम्राज्य के धनी आर्यावर्त्त की दिशा में कदम बढ़ाओ। उसे सार्थक करो। इस हेतु हमारी शिक्षा व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन कर वैदिक शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा से ही लागू कर हमारी भावी पीढ़ी का निर्माण करो, मुस्लिम का बच्चा मदरसा जाकर अपनी संस्कृति का पाठ पढ़ता है तो हमारा बच्चा अपनी संस्कृति की शिक्षा कहां से प्राप्त करेगा? संस्कृत भाषा को योजनाबद्ध तरीके से समाप्त कर दिया गया है। रोजगार आदि की विवशता ने अंग्रेजी को इस तरह थोप दिया है कि हिन्दी भी सिसक रही है, **जब शास्त्रों को जानने-समझने की भाषा ही समाप्त हो जावेगी तो धर्म-संस्कृति कैसे बचेगी?**

वैदिक शिक्षा के अभाव में मनुष्य का निर्माण नहीं हो पा रहा है। आप कहते हैं न खाऊँगा, न खाने दूंगा। यहां तो वैदिक संस्कृति से अज्ञानी लोगों ने जीओ और जीने दो का अर्थ यह समझ लिया है कि खाओ और खाने दो। वैदिक संस्कृति के ज्ञान अभाव में समाज-राष्ट्र की सेवा हेतु आप जैसे समस्त ऐषणाओं से विरक्त लोग नहीं प्राप्त हो रहे हैं। लोकेषणा (पद-मान-सम्मान की भूख) वितैषणा (धन-सम्पदा की भूख), पुत्रैषणा (पुत्रादि परिवारजन की आसक्ति की भूख) के व्यक्ति विरक्त कैसे प्राप्त होंगे? और जो लोग इन ऐषणाओं में जकड़े होंगे वह तो खाने और खिलाने वाले ही होंगे। मैकाले जनित शिक्षा से आज इन्हीं लोगों की बाढ़ आई हुई है।

आप ऋषि दयानन्द को भी अच्छी तरह जानते हैं। उनके सन्देश **'वेदों की ओर लौटो'** तथा उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज से भी अच्छे से परिचित हैं, क्योंकि जब आप गुजरात के मुख्यमन्त्री पद पर थे तब ऋषि जन्म स्थान टंकारा के ऋषि बोधोत्सव में पधारे थे और आपने ऋषि जन्म स्थान में यज्ञ में आहूति प्रदान की थी तथा अपने उद्‌बोधन में अपने प्रथम मुख्य मन्त्रित्वकाल में ऋषि के परम भक्त श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा की अस्थियां लन्दन से लाकर उनके जन्म स्थान माँडवी (सौराष्ट्र) में स्मारक बनाने से अवगत करवाया था।

आपने वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ द्वारा प्रकाशित गुजराती भाषा में चारों वेदों के भाष्य को भी लोकर्पित किया है, किन्तु वर्तमान में लोकतन्त्र के स्थान पर भीड़तन्त्र है यहां सिर गिने जाते हैं सिर के अन्दर के तत्व की गणना नहीं होती। इस भीड़ तन्त्र में आपकी विवशता है। ऋषि द्वारा स्थापित आर्य समाज भीड़ पर उतना प्रभावी नहीं है जितना सत्ता पर पकड़ बनाने के लिए आवश्यक है।

वैसे देश की जनता और विशेषकर विपक्ष भी अच्छी तरह जानता है कि २०१४ के चुनावों के अच्छे दिन की तरह **'न्यू इण्डिया'** २०१९ का रही-सही कांग्रेस को निपटाकर पूर्ण दो तिहाई बहुमत से सशक्त रूप में राज्य सभा, लोकसभा में अपनी पकड़ सशक्त करने का अभियान है, किन्तु इसमें भी सन्देह नहीं है कि आपके कुशल नेतृत्व में ही भारत पुनः विश्वगुरु बन सकता है। प्राचीन आर्यावर्त्त का स्वप्न साकार हो सकता है। हृदय की गहराइयों के साथ वर्ष २०१९ के आम चुनाव में आपकी सशक्त वापसी हो, भाजपा के लम्बित विषय कामन सिविल कोड, कश्मीर में धारा ३७० की समाप्ति, पाक अधिकृत कश्मीर तथा चीन द्वारा दबाई गई भूमि की पुनः वापसी रामजन्म भूमि अयोध्या में भव्य मन्दिर निर्माण आदि के साथ **सशक्त आर्यावर्त्त की स्थापना तथा चक्रवर्ती अर्थात् सम्पूर्ण विश्व में भारत को विश्वगुरु का सम्मान प्राप्त हो तथा आपके दीर्घ स्वस्थ जीवन की शुभकामनाओं के साथ कोटिशः वन्दन- अभिनन्दन** ■

मोदी जी! हिन्दू युवाओं के नष्ट होते जीवन को भी बचाओ

श्रद्धेय मोदी जी आपके नेतृत्व में संचालित केन्द्र सरकार के सकारात्मक रुख से मुस्लिम महिलाओं को तीन तलाक की नारकीय पीड़ा से छुटकारा मिला उनके अच्छे दिन आए।

इसी प्रकार से हिन्दू विवाह अधिनियम की असंगत विधियों के चलते अनेक निर्दोष हिन्दू युवाओं का जीवन नष्ट हो रहा है। कृपया इस ओर भी ध्यान देकर हिन्दू युवाओं का जीवन बचाइये। मान्यवर, सम्भवतः आप भी यह सच स्वीकार करते होंगे कि वर्तमान में शिक्षा का स्तर बढ़ा है, किन्तु नैतिक मूल्यों का ह्रास हुआ है। इसके कारण सहनशीलता आदि के गुणों में गिरावट आई है। यह भी तथ्य ध्यान में लाना चाहूंगा कि मोबाइल, इन्टरनेट आदि की सुविधाएं बढ़ने से विवाहित युवतियों के परिवारजनों (माता-पिता आदि का) का नियमित सम्पर्क में रहने से अनावश्यक हस्तक्षेप में वृद्धि हुई है।

सहनशीलता के अभाव, माता-पिता के अनावश्यक पुत्री के दाम्पत्य जीवन में हस्तक्षेप, परिवार (सास-ससुर) से पृथक रहने की स्वच्छन्दता को स्वतन्त्रता समझने की मानसिकता, सेवाभाव का अभाव पति-पत्नी के मध्य मामूली मतभेद, भ्रान्तियों आदि के कारणों से पति पक्ष को मजा चखाने अथवा दबाव बनाने के उद्देश्य से दहेज प्रताड़ना अधिनियम ४९८ तथा घरेलू हिंसा धारा १२ आदि का दुरुपयोग बढ़ता जा रहा है, जिसमें पुलिस प्रशासन का भ्रष्ट तन्त्र भी सहायक है। यह भी निवेदन करना चाहूंगा कि अज्ञानता के चलते मामुली बातों में भी थाने पर शिकायत करना सामान्य सी बात वर्तमान में हो गई है, जिसके चलते आपसी रिश्तों में कड़ुवाहट पैदा होकर मामूली बातें भी कभी-कभी बड़े विवाद का रूप धारण कर लेती है तथा युवती पक्ष की नासमझी के कारण बगैर किसी उचित कारण के वास्तविक पीड़ितों के लिए बनाए गए कानूनों का दुरुपयोग करने से सामान्य सम्बन्ध भी टूटने के कगार पर पहुंचने लगे हैं। यह भी ध्यान दिलाना चाहूंगा कि वर्तमान में शिक्षा का स्तर बढ़ने से उच्चशिक्षित युवक का विवाह २५ से ३५वर्ष की आयु के मध्य में होता है तथा वर्तमान में व्यक्ति की औसत आयु ५० से ६० के मध्य हो गई है। अनेक मामलों में तो व्यक्ति ४०-४५ वर्ष में ही निपट जाता है तथा हमारे न्यायालयों में तारीख पर तारीख के चलते केस का निपटारा होने में १०-१५ साल मामूली रूप से ट्रायल कोर्ट में ही लग जाते हैं। अपील हो गई सो अलग। ऐसे में व्यक्ति का जीवन बर्बाद हो जाता है। हिन्दू विवाह अधिनियम की बाध्यता के चलते गलती किसी की भी हो किन्तु जब तक तलाक नहीं हो जाता युवक गुजारा भत्ता युवती को देने के लिए बाध्य होता है। जब तक तलाक नहीं होता तब तक वह दूसरा विवाह नहीं कर सकता। आपसी सहमति से तलाक में युवति पक्ष द्वारा लाखों रुपए मांगें जाते हैं जो देना सबके लिए सम्भव नहीं होता।

इस प्रकार उच्च शिक्षित अनेक युवकों का वैवाहिक जीवन कष्टप्रद होकर वे कोर्ट, कचहरी, थानों के चक्कर काटते रहते हैं तथा हीन भावना से ग्रसित होकर अवसाद ग्रस्त होकर आत्महत्या तक कर लेते हैं, अथवा दुर्व्यसनों की भेंट चढ़ जाते हैं।

मैं स्वयं अपने पुत्र के प्रकरण से पीड़ित हूं। मैंने अपने पुत्र का विवाह २६ वर्ष की आयु में जो कि एम.एस.सी. इलेक्ट्रानिक्स है का जाति समाज के सामूहिक विवाह में बगैर दहेज आदि के किया। विवाह के कुछ ही दिन पश्चात् से युवती पक्ष के लोग बगैर किसी कारण के हस्तक्षेप करने लगे। जिससे विवाद बढ़ता गया, एक दिन युवति ने हमें धमकाने की नीयत से जहरीली वस्तु का सेवन कर लिया। मैंने युवति के माता-पिता को बुलाकर युवति को उनके सुपुर्द सही सलामत कर दिया, उन्होंने थाने जाकर हम लोगों के विरुद्ध शिकायत कर दी। थाने पर पुलिस हस्तक्षेप से हमारे बीच समाधान हुआ कि युवक-युवति पृथक रहे तो हमें कोई आपत्ति नहीं है। उसके पश्चात् युवति अपने कपड़े-जेवरात आदि समस्त सामान लेकर अपने माता-पिता के साथ चली गई। उसके बाद उसने अनेक झूठी शिकायतें पुलिस प्रशासन में की। मेरे सुपुत्र ने थक हार कर धारा ९ वैवाहिक जीवन की पुनर्स्थापना हेतु पारिवारिक न्यायालय इंदौर में निवेदन किया। इसका पता चलते ही युवति ने पुलिस से मिलीभगत कर हम पिता-पुत्र के विरुद्ध दहेज प्रताड़ना अधिनियम ४९८ का मुकदमा दर्ज करवा दिया तथा अन्य न्यायालय में समस्त परिवार जन ८ सदस्यों के विरुद्ध घरेलू हिंसा १२ के अन्तर्गत प्रकरण पंजीबद्ध करवा दिया। लगभग ५ वर्ष होने को हैं किसी भी प्रकरण का निराकरण नहीं हुआ है। न्यायालय ने गुजारा भत्ते का आदेश जरूर युवति के पक्ष में दे दिया है। सुपुत्र की आयु दिन पर दिन बित रही है। ३१ वर्ष का हो चुका है। कब निराकरण होगा, कब उसका पुनर्विवाह होगा, कब उसके बच्चे होंगे, कब बच्चे व्यस्क हो अपने पैरों पर खड़े होंगे? भविष्य अंधकारमय है। यह व्यथा कथा मात्र मेरे सुपुत्र की ही नहीं। हिन्दू विवाह अधिनियम के चलते अनेकानेक युवकों की है। परिवार न्यायालयों में प्रतिदिन मेला लगता है। यह सर्वविदित है। यह माना कि कुछ असामाजिक प्रवृत्ति के लोग पत्नी अथवा बहू के रूप में आई हुई युवति के साथ अमानवीय व्यवहार कर प्रताड़ित करते हैं ऐसे लोगों को कठोर से कठोर दण्ड दिया जाना चाहिए। किन्तु इसका मतलब ये तो नहीं है कि समस्त पुरुष वर्ग को ही कटघरे में रख कर युवतियों द्वारा युवकों को प्रताड़ित करने का अधिकार दे दिया जावे। प्रश्न उठता है कि क्या इस उच्च शिक्षित सभ्य समाज में सारे पुरुष ही महिलाओं के प्रति संवेदनहीन तथा अपराधी मनोवृत्ति के हो गए हैं? इस प्रकार का व्यवहार अमानवीय तथा निर्दोष पुरुष वर्ग को प्रताड़ित कर उनके जीवन को नष्ट करने वाला है, जिसका व्यापक दुष्प्रभाव हिन्दू समाज पर पड़ रहा है। इन विवादों के कारण से भी हिन्दुओं की जनसंख्या में गिरावट आ रही है।

हिन्दू अधिनियम में त्वरित संशोधन किया जाकर या तो प्रकरणों के निराकरण की समय सीमा निर्धारित की जावे अथवा प्रकरणों का निराकरण नहीं हो तो भी एक अथवा दो वर्ष से पृथक-पृथक रह रहे युवक-युवति को उनके मांगने पर सम्बन्ध विच्छेद की अनुमति त्वरित दिए जाने बाबद् निर्धारण किया जावे। असत्य आधारों पर प्रकरण दर्ज करवाने वाले युवति पक्ष और सहायक पुलिस कर्मियों पर दोष सिद्ध होने पर न्यायालय द्वारा स्वयं संज्ञान लेकर दण्डित किया जाने का प्रावधान किया जावे।

सुखदेव शर्मा, प्रकाशक- वैदिक संसार

दयानन्द जी तुम बहुत याद आते हो-जग ने तुम्हारी बात नहीं मानी, आज पाखण्डी बाबाओं की भरमार हो गई है

एक और पाखण्डी बाबा गया जेल में

दिनांक २५ अगस्त को गुरमित राम-रहिम के दुष्कर्म केस में विशेष न्यायालय द्वारा दोषी करार दिए जाने पर अपराधी गुरमित के गिरोह के सदस्यों ने जो तांडव मचाया कष्टप्रद तथा शर्मसार करने वाला है। लगभग ३९ लोगों को जान से हाथ धोना पड़ा है। २५० लोग घायल हुए हैं। २०० वाहन फूंक दिए गए हैं। दो रेलवे स्टेशन, दो बस, दो ट्रेन बोगियों को जला दिया गया है। बहुत कुछ ऐसा भी होगा जो जानकारी में नहीं आ पाया। ये कृत्य किसी धार्मिक व्यक्ति, सन्त अथवा बाबा तथा उनके अनुयायी भक्तों के कैसे हो सकते हैं? यह सुसंगठित परिपक्व अपराधी गिरोह का कार्य है जो राजनैतिक पावर और अथाह धन तथा विशाल संख्या में प्रशिक्षित वेतनिक आदि सुविधा प्राप्त कर्मियों के सहभागियों से सुसज्जित है। ये सब धर्म, राजनीति और प्रशासन के भ्रष्ट गठजोड़ का परिणाम है। ये सब दयानन्द के सन्देश **'वेदों की ओर लौटो'** को ठीक से नहीं जानने और नहीं मानने के कारण है। वर्तमान की धर्म की दशा अगर दयानन्द न आए होते तो और विकराल होती। **दयानन्द के आने के पूर्व धर्म की कितनी दयनीय दशा धर्म के ठेकेदारों ने बना दी थी इसका पता ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें तथा बारहवें समुल्लास से चलता है। क्या यही हमारे धर्म का स्वरूप है? क्या इसी धर्म के बूते हम विश्व गुरु थे?**

न जाने कितने स्वयंभू ईश्वर जेलों में हैं और कहा जाता है कि वर्तमान में ८५० के लगभग चलते-फिरते जीवित ईश्वर अपने डेरों, मठों, आश्रमों, मन्दिरों के माध्यम से बढ़िया तरीके से अपनी दु:ख्कानदारी चला रहे हैं। जिनके लाखों-करोड़ों अनुयायी हैं जो उन्हें ईश्वर ही मानते हैं। आज कुछ अपवाद छोड़कर कोई भी व्यक्ति रिक्त नहीं है, किसी न किसी स्वयंभू ईश्वर की दु:ख्कान पर कान में मन्त्र फूंकवाकर पंजीकृत हैं। महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज मात्र एक ऐसी धार्मिक संस्था है जहां मैदान में मन्त्र दिया जाता है और दयानन्द को ईश्वर का अवतार नहीं बताया जाता और उनकी पूजा माला-अगरबत्ती से नहीं बल्कि उनकी आज्ञा का पालन वेदों को मानने से होती है। स्वयंभू ईश्वर स्वयं इस दुनिया में नहीं होगा तो उसके परिवार वालों तथा उनके गिरोह के किसी संगी-साथी ने उसकी विरासत को आगे बढ़ा दिया होगा। स्वयंभू ईश्वरों के निपटने (मृत्यु) के बाद तो उनकी दु:ख्कान उनके नाम से ज्यादा अच्छे से चल जाती है, क्योंकि उनके गिरोह के सदस्य उनके तथाकथित चमत्कारों का प्रचार- प्रसार इस तरह करते हैं कि अच्छे-अच्छे पढ़े लिखे (मैकाले के मानस पुत्र) कलेक्टर, कमिश्नर, इंजीनियर, डॉक्टर, वकील आदि-आदि तथा राजनीतिज्ञ भी झांसे में आ जाते हैं। सामान्य जन की तो बात ही क्या है और सामान्य जन का दोष क्या है जब वह इन स्वयंभू ईश्वरों के दरबार में सुविख्यात राजनेताओं, अधिकारियों को भी मत्था टेकते देखता है तो उसका भी गच्चा खा जाना स्वाभाविक है।

वेदानुकूल ईश्वर, प्रकृति, जीवात्मा, कर्मफल, पुनर्जन्म के ज्ञान से शून्य आज के व्यक्ति को जीवन में थोड़ी सी समस्या आने पर वह इन स्वयंभू ईश्वरों के शो रूम अथवा अड्डों (आश्रम, मन्दिर नहीं) का ही रुख करता है, क्योंकि वह वैदिक ज्ञान के आत्म बल से शून्य होता है, इन स्वयंभू ईश्वरों के तथाकथित चमत्कारों को बढ़ा-चढ़ाकर उसे अपने जाल में फंसाने वाले एजेण्ट (भक्त नहीं) आज गांव-गांव, गली-गली में प्रत्येक व्यक्ति के आसपास सक्रिय होते हैं। ये स्वयंभू ईश्वर वर्तमान राजनीतिज्ञों की संजीवनी है एक दूसरे के पूरक हैं। प्रत्येक राजनीतिज्ञ कहीं न कहीं किसी छोटे-मोटे ईश्वर से जुड़ा है, क्योंकि उन्हें भी कहां वैदिक ज्ञान है और उन्हें ज्ञान से ज्यादा वोटों और वोटों के बल पर नोटों की जरूरत है। इन स्वयंभू ईश्वरों की दु:ख्कान पर उसे वोटों की भीड़ की भीड़ मिलती है।

हरियाणा में भाजपा की जीत के पीछे गुरमित राम-रहिम का हाथ माना जाता है। भाजपा के एक महासचिव जो हरियाणा के प्रभारी थे के द्वारा उसे बीजेपी के पक्ष में लामबन्द किया गया था। नहीं तो क्या कारण था कि जिन पर दुष्कर्म-हत्या आदि के प्रकरण चल रहे हों ऐसे 'धूर्त' मक्कारों को फलने-फूलने को भरपूर अवसर प्रदान किए गए। स्थानीय मन्त्रियों और केन्द्रीय मन्त्री तक के द्वारा लाखों रुपए की वर्षा की गई। इनके प्रकरणों की त्वरित सुनवाई कर सम्बन्धित पक्षों को शीघ्र न्याय दिलवाना किसका दायित्व बनता है? इसके विपरीत जिन धूर्त मक्कारों से आम मानव पीड़त हो जो जन सामान्य के लिए खतरा बन चुके हों ऐसे अपराधी व्यक्ति को जेड प्लस सुरक्षा प्रदान की जा रही थी। उसे स्वच्छता अभियान का हरियाणा सरकार द्वारा ब्रांड एम्बेसेडर बनाया गया हो, आखिर क्यों? इसका जिम्मेदार कौन? जब पूर्वानुमान था कि फैसला

आध्यात्मिक जिज्ञासा समाधान

प्रश्न आपके उत्तर मूर्धन्य वैदिक विद्वानों के

अत्यन्त हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि वैदिक संसार में आगामी अंक से 'आध्यात्मिक जिज्ञासा समाधान' प्रारम्भ किया जा रहा है अत: समस्त पाठकगणों से अनुरोध है कि आपकी ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति, पुनर्जन्म, कर्मफल व्यवस्था, मनुष्य जीवन, धर्म- संस्कृति आदि विषयों से सम्बन्धित कोई जिज्ञासा, शंका, अथवा प्रश्न हो तो लिख भेजें। आपकी जिज्ञासा, शंका अथवा प्रश्नों का समाधान वेद शास्त्रों के मर्मज्ञ मूर्धन्य विद्वानों के द्वारा प्रस्तुत किया जावेगा।अपनी जिज्ञासाएं डाक से अथवा वाट्सएप नं. ७८६९०७३९१३ पर भेजें। उपरोक्त नं. पर अन्य कोई सामग्री न डालें तथा एक माह में मात्र एक जिज्ञासा शंका अथवा प्रश्न करें। उपरोक्त नम्बर पर वार्तालाप पूर्णत: निषेध है। **(पढ़े आगामी अंक से...)**

आने के बाद उपद्रवी तत्व उपद्रव कर सकते हैं निषेधाज्ञा लागू होने के उपरान्त भी लाखों लोग एकत्रित हो रहे हैं और प्रशासन पंगु बना हुआ मूक दर्शक बन देख रहा था। क्या घटना घटित होने की प्रतिक्षा थी? जो शान्ति घटना के बाद स्थापित की गई क्या वह प्रयास एक दिन पूर्व नहीं किये जा सकते थे? यह राजनीतिक प्रश्रय नहीं तो और क्या है? ऐसे अवांछित तत्वों को हीरों बनाने की जिम्मेदार आखिर कौन है?

जेलों में जाने वाले बाबा रूपी गुण्डों की विस्तृत जांच की जाना चाहिए कि उन्हें किन-किन राजनेताओं ने भूमियां आवंटित करवाने अथवा अतिक्रमण करने में मदद की। उन्हें किस-किसने सांसद विधायक निधि से उनके अड्डों के निर्माण तथा अन्य कार्यों में सहायता की अथवा पद का दुरुपयोग कर उद्योगपतियों को धमकाकर मोटी-मोटी धनराशियां वसूल (दान नहीं) की अथवा दिलवाई। इन सबको सह अपराधी मानकर इनके विरुद्ध भी सख्त कार्यवाई की जाना चाहिए, किन्तु यह सब करे कौन? कहावत है- **'सैंया भये कोतवाल तो डर काहे का।'** भ्रष्टता की इस दलदल में धन्यवाद के पात्र हैं दिवगंत रणदीप तथा रामचन्द्र जिन्होंने इस मामले को उठाया तथा विशेष धन्यवाद के पात्र हैं सी.बीआई. के जांच अधिकारी सतीश डागर जिन्होंने पीड़ित महिलाओं को खोजा, उन्हें पूर्ण सुरक्षा हेतु आश्वस्त कर उनके बयान करवाए और निर्भयता, निष्पक्षता, ईमानदारी पूर्वक अपने कर्त्तव्य का निर्वहन कर जांच को मुकाम तक पहुंचाकर एक उदाहरण प्रस्तुत किया। विशेष आभार तथा धन्यवाद के पात्र हैं सीबीआई न्यायालय के न्यायाधीश माननीय जगदीपसिंह जी जिन्होंने किसी भी प्रभाव में नहीं आकर दूध का दूध और पानी का पानी कर न्यायिक प्रक्रिया से आम आदमी के उठते विश्वास को बहाल किया।

वर्तमान में हालात इतने विकट हैं कि लाखों रुपयों की शिक्षा आदि में व्यय करने के बाद पढ़ा-लिखा डिग्रीधारी व्यक्ति पेट भरने के लिए दर-दर की ठोंकरे खा रहा है। अथवा आत्महत्या कर रहा है और जिनकी कोई योग्यता नहीं उनके लिए धर्म और राजनीति का व्यापक चारागाह खुला है। जहां चाहो मुंह मारो कोई रोकने-टोकने वाला नहीं, बस थोड़ी सी धूर्तता- चालाकी, मक्कारी आदि की जरूरत है, जितनी अधिक है उतने अधिक वारे-न्यारे, पैसा और पावर आने के बाद में सब अपनी जेब में कहीं किसी का भय नहीं। उपरोक्त दुष्कर्म घटना १९ वर्ष पूर्व घटित हुई थी। १५वर्ष से न्याय की प्रतिक्षा कर रही थी इस केस की पीड़िता के भाई जिसने आवाज उठाने में मदद की कि हत्या की जा चुकी है इस खबर को प्रथम प्रकाशित करने वाले '**पूरा सच**' के सम्पादक की हत्या की जा चुकी। इसी प्रकार आशाराम के मामले में भी अनेक गवाहों की हत्या की जा चुकी है।

विचार करो ये अपराधी तत्व कितने समर्थ शक्तिशाली हैं जिनके ऊपर हाथ डालने में सरकारें तक बेबस हैं हजारों सुरक्षा कर्मियों, सेना आदि के फ्लैगमार्च के उपरान्त भी जिनके गिरोह के सदस्यों को कोई भय नहीं, जो सड़कों पर मौत का नंगा नाच खेलते हैं आम जनजीवन को अस्त-व्यस्त, भयाक्रान्त कर देते हैं, अनेक निर्दोषों के प्राण हर लेते हैं उनकी सम्पत्तियों को लूट लेते हैं। जला देते हैं। किसी का कोई भय नहीं। ऐसे तत्वों के विरुद्ध एक आम व्यक्ति क्या आवाज उठाएगा, क्या गवाही देगा? आम व्यक्ति की तो छोड़ो बड़े से बड़े पद पर आसीन राजनेता तथा प्रथम श्रेणी अधिकारी भी इनके विरुद्ध आवाज नहीं उठा सकते और इस भ्रष्ट देश में जहां सब कुछ बिकता है वहां इन नासूरों का इलाज कितना मुश्किल होगा? **हमारी न्यायप्रणाली पर भी प्रश्न उठता है और विचार उत्पन्न होता है कि इस दुष्कर्म केस के पीड़िता को १९ वर्ष पश्चात् न्याय मिला है क्या यह न्याय है? इतने वर्षों में इस केस के पीड़ित पक्ष, गवाह आदि कितनी बार मरे होंगे?** कितना जटिल है ऐसे अपराधियों को उनके सही मुकाम पर पहुंचाना। इस लम्बे अन्तराल में उन अपराधियों के हौसले कितने बुलन्द रहे होंगे जो फैसले के आते ही इतना तांडव मचा सकते हैं। चार-पांच राज्यों की सरकारों के नाक में दम कर सकते है। केंद्र सरकार की सांस फूला सकते हैं।

सीमा पार के शत्रुओं और इन आन्तरिक शत्रुओं में क्या अन्तर है? समर्थ शक्तिशाली राजनीतिक संरक्षण प्राप्त जिन्होंने कानून व्यवस्था को अपनी रखैल समझ रखा हो। न्यायिक व्यवस्था को तो ऐसे लोग मखौल समझते हैं ऐसे अपराधियों के कृत्यों की सजा में १५ वर्ष लग गए इतने वर्षों तक ये बेखौफ खुले अपने मनोवांछित कुकृत्य करते रहे। इन अपराधियों ने १९ वर्षों के काल में कितने दुष्कृत्य किए होंगे, जिनकी आवाज को बड़ी सरलता से दबा दिया गया होगा अनुमान लगाना सहज है।

ऐसे आवांछित, असामाजिक, हिंसक जंगली जानवरों के सभ्य मानव समाज में फलने-फूलने का एकमात्र कोई कारण है तो वह है सर्वमानव हितकारी वैदिक धर्म संस्कृति के ज्ञान का अभाव। इसका मुख्य कारण है छद्म धर्म निरपेक्षता तथा तुष्टीकरण के चलते वैदिक धर्म संस्कृति के ज्ञान को शिक्षा में प्राथमिक स्तर पर स्थान नहीं देना। जिसके अभाव में आज का व्यक्ति ईश्वर विषयक ज्ञान नहीं होने से चाहे जिसको ईश्वर मान बैठता है। चेतन ईश्वर के स्थान पर जड़ पत्थरों पर अपना माथा पीटता रहता है, अपने लालन-पालन करने वाले माता-पिता को भले ही सम्मान न दे उनकी आज्ञा न माने, किन्तु इन धूर्त-मक्कारों के लिए मरने-मारने पर उतारू रहता है, इनके लिए उसके अन्तरमन में अपने देश, कानून व्यवस्था का भी सम्मान नहीं होता, उसका दिल नहीं पसीजता कि उनके कृत्यों के कारण कितने लोगों को कष्ट पहुंचेगा कितने रोगी चिकित्सा के अभाव में दम तोड़ देंगे। कितने विद्यार्थियों का भविष्य नष्ट हो जावेगा, कितने दिहाड़ी मजदूरों के घरों में चूल्हे नहीं जलेंगे कितने बच्चों को दूध नहीं मिल पावेगा अज्ञान, अन्धविश्वास, अन्ध भक्ति में वह यह सब पाप करता चला जाता है।

ईश्वर को ठीक-ठीक नहीं जानने के कारण ही वह ईश्वर की न्यायकारी व्यवस्था कर्मफल-पुर्नजन्म को नहीं जान पाता है। जानेगा भी कैसे? जब शिक्षा में उसका प्रबन्ध ही नहीं किया गया, उसके माता-पिता को ही जब ये सब पता नहीं तो उसका क्या दोष?

जब ईश्वर और ईश्वर की न्यायकारी व्यवस्था को नहीं जाना तो स्वाभाविक है प्रकृति और स्वयं (जीवात्मा) तथा उसके मुख्य लक्ष्य को भी कैसे कहां से जान पाएगा? ■

वैदिक ऋषिका- सुवेदा: शैरीषि

- शिवनारायण उपाध्याय -
७३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा, (राज)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

सुवेदा शैरीषि ऋग्वेद मण्डल १० सूक्त १४७ की दृष्टि है।

इस सूक्त में पांच ऋचाएं हैं। सूक्त का देवता इन्द्र है। इन ऋचाओं में सांसारिक वासनाओं से ऊपर उठकर ज्ञान प्राप्त कर शरीर को सुदृढ़ बनाना, धनार्जन करना तथा परमात्मा की उपासना करने का वर्णन हुआ है।

श्रते दधामि प्रथमाय मन्यवेऽहन्यद् वृत्रं नर्यं विवेरपः।
उभेयत्त्वा भवत्तो रोदसी अनु रेजति शुष्मात्पृथिवी चिरद्रिवः।।१।।

अर्थः- प्रभो ! मैं (ते) आपके (**प्रथमाय**) सृष्टि के प्रारम्भ में दिये जाने वाले (**मन्यवे**) वेदरूप ज्ञान के लिए (**श्रद् दधामि**) श्रद्धा को धारण करता हूं। (**यत्**) क्योंकि इस ज्ञान के द्वारा आप (**वृत्रम्**) ज्ञान की आवरणभूत वासना का (**अहन्**) विनाश करते हैं। (**नर्यं अपः**) नर हितकारी कर्मों को (**विवेः**) प्राप्त कराते हैं। हे (**अद्रिवः**) वज्र हस्त प्रभो (**यत्**) जब (**उभे रोदसी**) ये दोनों द्युलोक और पृथ्वी लोक (**त्वा अनुभवतः**) आपके अनुकूल होते हैं। आपके (**शुष्मात्**) बल से (**पृथिवी, चित्**) यह विस्तृत अन्तरिक्ष भी (**रेजते**) कम्पित हो उठता है।

भावार्थ- वेद ज्ञान को श्रद्धापूर्वक धारण करने से वासनाओं का विनाश हो जाता है और व्यक्ति लोकहित के कार्यों में जुट जाता है।

त्वं मायाभिरनवद्य मायिनं श्रवस्यता मनसा वृत्रमर्दयः।
त्वामिन्नरो वृणते गविष्टिषु त्वां विश्वासु हव्यास्विष्टिषु ।।२।।

अर्थः- हे (**अनवद्य**) पूर्णशुद्ध परमात्मा । (**त्वम्**) आप (**मायाभिः**) प्रज्ञानों के द्वारा (**मायिनं वृत्रम्**) इस प्रबल माया वाले कामदेव को (श्रवस्यता मनसा) ज्ञान वाले मन के कामना के द्वारा (**अर्दयः**) पीड़ित करते हैं। (**नरः**) वासना को नष्ट करके आगे बढ़ने वाले ये लोग (**इत्**) निश्चय से (**गविष्टिषु**) गोष्ठियों के अन्दर (**त्वां वृणते**) आपका वरण करते हैं। (**विश्वासु**) सब (**हव्यासु इष्टिषु**) आहुत्य प्रार्थनीय याग-क्रियाओं में (**त्वाम्**) आपका ही वरण करते हैं।

भावार्थ - वेद ज्ञान की प्राप्ति से मन शिव संकल्प वाला हो जाता है। विषय वासनाओं से दूर हटकर गोष्ठियों में परमात्मा के यश का कीर्तन करते हैं।

एषु चाकन्धि पुरुहूत सूरिषु वृधासो ये मघवन्नान शुर्मधम् ।
अर्चन्ति तोके तनये परिष्टिषु मेधसाता वाजिनमह्वये धने।।३।।

अर्थः- हे (**पुरुहूत**) बहुतों द्वारा पुकारे जाने वाले प्रभु। आप (**एषु**) इन (**सूरिषु**) ज्ञानी पुरुषों में (**आचाकन्धि**) विशेष रूप से दीप्त होइये। हे (**मधवन्**) ऐश्वर्य शालीन प्रभो ! आप उन ज्ञानियों में दीप्त होइये। (**ये**) जो (**वृधास**) वृद्धि को प्राप्त होते हुए (**मधं आनशुः**) धन को व्याप्त करते हैं। ये ज्ञानी पुरुष (**वाजिनम्**) शक्तिवान आपको (**अर्चन्ति**) पूजते हैं। जिससे कि (**तोकतनयो**) उत्तम पुत्र-पौत्र वाले बनें। (**परिष्टिषु**) इष्यमाण अन्य फलों के लिए वे प्रभु को पूजते हैं। (**मेधासाता**) यज्ञों के लिए वे प्रभु को पूजते हैं (**अह्वये धने**) अलज्जाकर धन के लिए वे प्रभु को पूजते हैं।

भावार्थ- ज्ञानी पुरुष सदैव परमात्मा का ही पूजन करते हैं जिससे कि उन्हें उत्तम सन्तान प्राप्त हो, उनकी मनोकामनापूर्ण होवे, वे यज्ञ करते रहें और सदैव अलज्जाकर धन प्राप्त करते रहें।

स इन्नु रायः सुभृतस्य चाकनन्मदं यो अस्य रंह्यं चिकेतति।
त्वा वृधो मधवन्दाश्वध्वरो मक्षू स वाजं भरते धना नृभिः ।।४।।

अर्थः- (**यः**) जो (**अस्य**) इस प्रभु के (**रंह्यम्**) वेग से युक्त (**मदम्**) हर्ष को (**चिकेतति**) जानता है, (**सः**) वह (**इत् नु**) निश्चय से (**सुभृतस्य रायः**) उत्तम उपायों से प्राप्त धन की (चाकन्) कामना करता है। (**त्वा वृधः**) आपकी भावना को अपने में बढ़ाने वाला (**दाश्वध्वरः**) दान युक्त यज्ञों वाला (सः) वह उपासक (**मधवन्**) हे ऐश्वर्यवान् प्रभो। (**मक्षु**) शीघ्र ही (**नृभिः**) मनुष्यों के साथ (**वाजम्**) शक्ति को तथा (**धना**) धनों को (**भरते**) प्राप्त कर लेता है।

भावार्थः जो उपासक परमात्मा के हर्ष से युक्त वेग को जानता है, वह उत्तम उपायों से प्राप्त धन की कामना करता है। परमात्मा की कृपा से वह शीघ्र ही शक्ति और धन को प्राप्त कर लेता है।

त्वं शर्धाय महिना गृणान उरू कृधि मधवञ्छुग्धि रायः।
त्वं नो मित्रो वरुणो न मायी पित्वो न दस्म दय से विभक्ता।।५।।

अर्थः- हे (**मधवन्**) ऐश्वर्यवान् प्रभो। (**महिनागृणानःत्वम्**) खूब ही स्तुति किये जाते आप। (**शर्धाय**) बल के लिए हमें (**उरू**) खूब (**कृधि**) करिये। हे (**दस्म**) हे कष्ट निवारक प्रभो। (**त्वम्**) आप (**नः**) हमारे लिए (**मित्रः वरुण्न**) मित्र और वरुण होते हुए (**मायी**) सम्पूर्ण माया के स्वामी होते हुए (**न**) अब (**विभक्ता**) सब धनों का उचित विभाग करते हुए (**पित्वः दयसे**) पालक अन्न को देते हैं। आप (**रायःशग्धि**) हमारे लिन धनों को भी दीजिए। इतिशम् । ■

व्यंग्य नहीं, वर्तमान के धर्म की वास्तविकता

मेम साहब बोली-'भैया, हर सोमवार को दूध बहुत पतला आता है' ग्वाला बोला, बहनजी, गाय-भैसें तो सोमवार को भी उतना ही दूध देती है, सोमवार को शिव मन्दिर के बाहर दूध शिवजी को स्नान कराने के लिए मुंहमांगे पैसों पर बेचना होता है, वे महिलाएं तो कोई शिकायत नहीं करती, अब क्या करूं, बेटी शादी लायक हो रही है, कुछ तो ऊपर की कमाई मैं भी कर लूं, बहनजी।'

दिलीप भाटिया, रावतभाटा (राज.) चलभाष-९४६१५९१४९८

लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल

स्मृति शेष- रतनलाल आर्य
बूढ़ा, जिला- मन्दसौर (म.प्र.)

सरदार पटेल आधुनिक समय के श्रीकृष्ण कहलाते हैं, जिस प्रकार श्रीकृष्ण ने खण्डित भारत को संगठित करके सुदृढ़ भारत बनाया, उसी प्रकार सरदार पटेल ने ५६२ रिसायतों को मिलाकर एक विशाल भारत बनाया। सरदार पटेल की विलक्षण बुद्धि, दृढ़ निश्चय, अपरिमित साहस, संगठन शक्ति को देखकर ही जनता ने उन्हें लौह पुरुष की उपाधि से विभूषित किया। सरदार पटेल एक ऐसे दृढ़ विश्वासी व्यक्ति थे कि जो काम करने ठान ली उसे पूरा करके ही रहे।

अंग्रेजों ने हमें १५ अगस्त १९४७ को आजादी तो जरूर दी परन्तु वह अधूरी आजादी थी। उस अधूरी आजादी को पूर्ण आजादी में परिवर्तन करने का श्रेय सरदार पटेल को ही जाता है। अंग्रेज जब भारत छोड़कर गए थे, तब भारत में ५६२ देशी रियासते व रजवाड़े थे। वे सभी को स्वतन्त्र छोड़कर गए थे। सभी रियासते चाहे तो भारत में मिलें या चाहे पाकिस्तान में मिलें या स्वतन्त्र रहें। सब छूट देकर गए थे। वे तो यही उम्मीद रख कर गए थे कि ५६२ रियासतों व रजवाड़ों को भारत कभी नहीं मिला सकेगा और परस्पर लड़ाई- झगड़ा चलता रहेगा जिससे देश में अशान्ति बनी रहेगी। अन्त में हम ही आकर राज्य सम्भालेंगे, पर सरदार पटेल ने उनकी उम्मीदों पर पानी फेर दिया। पटेलजी ने इतनी होशियारी व चातुर्य से सब राजाओं को समझाकर, डराकर या किसी से युद्ध करके सबको भारत में मिला लिया। जूनागढ़ व ग्वालियर महाराज ने कुछ आनाकानी की थी, परन्तु उनको भी समझा बुझाकर मना लिया। केवल हैदराबाद का बादशाह नहीं मिलना चाहता था, उसको भी सेना भेजकर चार घण्टों में भारत में मिला लिया। अब केवल कश्मीर की एक समस्या आ गई। जब पाकिस्तान ने कश्मीर पर चढ़ाई कर दी, तब वहां के राजा हरिसिंह ने दिल्ली आकर पटेल जी से सन्धि कर ली, तब पटेल जी ने कश्मीर पर चढ़ाई कर कर दी और दो तिहाई हिस्सा कश्मीर का भी जीत लिया। तभी नेहरू जी ने बीच में टांग लगाकर सेना को आगे बढ़ने से रोक दिया और कश्मीर की समस्या को जहां की तहां रखकर केस को यू.एन.ए.(राष्ट्रसंघ) में दे दिया। यदि ऐसा न होता तो कश्मीर की समस्या भी हल हो गई होती और आज भारत विश्व के मजबूत और सुदृढ़ देशों में गिना जाता। आज हमें पाकिस्तान जैसा छोटा देश भी आंख दिखा रहा है। यदि कश्मीर समस्या हल हो जाती तो चीन और अमेरिका भी हमें आंख नहीं दिखा सकते थे और भारत एक सुदृढ़ देश के रूप में खड़ा हुआ दिखता और हम भारतवासी सुख और आनन्द की नींद सोते। ■

प्रेमचन्द आज भी सबसे लोकप्रिय हिन्दी लेखक

उपन्यास सम्राट के तौर पर विख्यात प्रेमचन्द आज भी सर्वाधिक पढ़े जाने वाले हिन्दी के साहित्यकार हैं। इतने लम्बे समय तक लोगों के बीच लोकप्रियता का कारण साहित्य जगत् से जुड़े लोग उनकी रचनाओं की खूबियों को बताते हैं। गोदान जैसा कालजयी उपन्यास लिखने वाले रचनाकार के बारे में साहित्यकार सुधीश पचौरी ने कहा- '**वाकई प्रेमचन्द आज भी हिन्दी के सबसे लोकप्रिय साहित्यकार हैं। ऐसा यूं ही नहीं है, वह अपनी रचनाओं में सिर्फ समस्याओं को उभारने का काम नहीं करते, बल्कि उनसे कैसे निपटा जाए उसे भी बखूबी बताते हैं। वह भावनाओं को सींचने वाले साहित्यकार थे। यही बात उन्हें भरोसेमंद बनाती है।**' उन्होंने कहा- '**वह साहित्य में सिर्फ संघर्ष की बात नहीं करते,बल्कि सृजनात्मकता और सौहार्द्र पर भी जोर देते हैं।**'

प्रख्यात साहित्यकार और प्रेमचंद द्वारा शुरू की गई पत्रिका '**हंस**' के सम्पादक राजेन्द्र यादव ने कहा- '**प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में जिन समस्याओं और चुनौतियों को उभारा है, व आज भी मौजूद है। चाहे आम व्यक्ति की दीनहीन दशा हो अथवा दूसरी परिस्थितियां। यही वजह है कि वह आज भी सामयिक बने हुए हैं।**' साहित्यकार निर्मल वर्मा ने भी कहा है कि प्रेमचंद की कहानियां आज भी प्रासंगिक हैं, क्योंकि उन्होंने भावी परिस्तिथियों को एक संदर्भ के रूप में लिया था। पचौरी ने कहा- 'आज के साहित्यकार संघर्ष और समस्याओं की बात तो करते हैं, लेकिन उनका समाधान क्या और कैसे होगा, वह नहीं बता पाते। प्रेमचंद अपनी रचनाओं में समस्याओं के साथ-साथ उम्दा समाधान भी बताते हैं। आज भी उनकी कहानियों को पढ़ने के बाद लोग आस्था बनाए रखते हैं।'

जुलाई १८८० में वाराणसी के निकट लमही गांव में जन्मे प्रेमचंद का मूल नाम धनपत राय था। **उनका मानना था कि व्यक्ति बुरा नहीं होता बल्कि परिस्थितियां उसे बुरा बना देती है।** यूं तो प्रेमचंद के साहित्यिक जीवन का प्रारम्भ १९०९ में ही हो चुका था। पर उनकी पहली हिन्दी कहानी '**सरस्वती पत्रिका**' में १९१५ में '**सौत**' नाम से प्रकाशित हुई थी। आगे वह कहानी और उपन्यास की विषयवस्तु में मूलभूत परिवर्तन करते हैं और काल्पनिक तथा अय्यारी रचनाओं की जगह यथार्थवाद को अपनी रचना के केन्द्र में रखते हैं। प्रेमचंद ने भारतीय समाज में मौजूद लगभग सभी समस्याओं और कुरीतियों पर बखूबी लिखा है। राजनीतिक सामाजिक, पारिवारिक सभी को उन्होंने जिस तरह अपनी रचनाओं में समेटा और खास करके एक आम आदमी को, एक किसान को और दलित वर्ग को लोगों को.... वह अपने आप में मिसाल है। उन्होंने सेवासदन, प्रेमाश्रय, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, कर्मभूमि और गोदान जैसे चर्चित उपन्यास की रचना की। उनकी कहानियों में ईदगाह, बड़े भाई साहब, पूस की रात, कफन, दूध का दाम आदि उल्लेखनीय है। इसके अलावा उन्होंने नाटक और अनुवाद का काम भी बखूबी किया। उनकी अनेक रचनाओं का अंग्रेजी, चीनी, रूसी समेत अनेक विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद किया गया। प्रेमचंद मात्र ५६ वर्ष की आयु में ८ अक्टूबर १९३६ को इस दुनिया से विदा हो गए।

साभार-रिवाड़ी रिफार्मर

वीरता की मूरत दुर्गा भाभी

- डोंगरलाल वर्मा -
पूर्व प्रधानाध्यापक, प्रधान-आर्य समाज
कसरावद, जिला-खरगोन (म.प्र.)
चलभाष-८९५९०५९०९९

विख्यात वे जौहर यहां के आज भी लोक में।
हम मग्न है पद्‌मिनी-सी देवियों के शोक में।।
आर्य -स्त्रियां निज धर्म पर मिटती हुई डरती नहीं।
साद्यन्त सर्व सतीत्व शिक्षा विश्व में मिलती नहीं।। (गुप्तजी)

स्वतंत्रता के महासमर में बालक-बालिका, युवा-वृद्ध और वीरता की नारियों की क्रान्ति और कुर्बानी भारत वर्ष में अजर-अमर है। विन्तूर (कर्नाटक) की रानी चेन्नम्मा ने अंग्रेजी हुकूमत के समक्ष कभी भी हथियार न डालते हुए आमने-सामने की लड़ाइयां लड़ते हुए फिरंगियों को मुंह की खानी पड़ी। किन्तु बागी शिव बासप्पा अंग्रेजों से मिल गया। इसने रानी के बारूद में सूखा गोबर मिलाना और किले के अनेक भेद बताने के कारण रानी चेन्नम्मा की पराजय होने से गिरफ्तार कर ली गई। तत्पश्चात् रानी ने अपने आत्मबल के माध्यम से प्राण न्यौछावर कर दिये। स्वाधीनता की जिस ज्योति की अर्चना रानी चेन्नम्मा ने की उसी की आराधना आगे चल झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने की जो कि सुभद्रा कु. चौहान ने अपने हिन्दी साहित्य की रचनाओं में-

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी।।

इस कविता ने खूब ख्याति पाई है, लक्ष्मीबाई की वीरता की लड़ाई और अपनी वीरगति पाने के पूर्व रानी की सलाहकार, सैनिक, नायिका और अनेक गुणों से सम्पन्न, जिसने लक्ष्मीबाई के प्राणों की रक्षा करके स्वयं और पति ने रणभूमि में वीरगति पाई। ऐसी वीरता की वीरांगना पर पंक्तियां इस प्रकार हैं-

चमक उठी सत्तावन में, बन्दूक-तोपों की कहानी थी।
बुन्देले हर बोलो के मुंख, सुनी नहीं हमने कहानी थी।।
स्व-विवेक से उसने लक्ष्मी की, जान बचाई थी।
फिरंगी-सेना का कर संहार, बनी वह महाकाली थी।।
वीरता की वह चमत्कारिणी, दलित पिता की बेटी थी।
चण्डी बन अंग्रेज सेना को, किलकारी मारी थी।।
वीरता की देवी, वह लक्ष्मी सी झलकारी थी।
खूब लड़ी भवानी वह, भोजला गांव की बेटी थी।।

कानपुर के नाना साहब की बेटी बालिका मैना ने किले में अकेली रहते हुए अपने पिताजी और उनके साथियों के पते-ठिकाने नहीं बताने के कारण अंग्रेज सेनापति ने वृक्ष से बांधकर जिन्दा जला दिया। ऐसे वीर पिता की वीर बेटी कुर्बानी देकर अमर हो गई। **क्रान्तिकारिणी वीणादास** ने तानाशाही गवर्नर पर गोलियां चला कर नारी ने अपने शौर्य को प्रस्तुत किया तो **सुनीति घोष** ने अन्यायी अंग्रेज-जज पर गोलियां दाग न्याय का पथ दिखाया। **शहीद प्रीतिलता वादेदार** ने फिरंगियों के क्लब पर आक्रमण कर अपने अदम्य साहस को प्रस्तुत किया तो **कु. जयावती संघवी** ने रणभूमि में गोलों की गैस में अपने प्राणों की आहुति दी। इस प्रकार आजादी की बलि वेदी पर सुनामी, गुमनामी नारियों अपने जीवन का बलिदान करने में कभी पीछे नहीं रहीं है।

ऐसी वीरांगना नारियों में **'दुर्गा भाभी'** नाम से विख्यात नारी ने अपने ९२वर्ष के जीवन काल में क्रान्ति की इबारत प्रस्तुत की। दुर्गादेवी का जन्म दिनांक ०७.१०.१९०७ को उ.प्र. के शाहजादपुर गांव में पं. बाँके बिहारी भट्ट के यहां हुआ। इनके पिता इलाहाबाद कलेक्ट्रेट में नाजिर थे और इनके बाबा महेश प्रसाद भट्ट जालौन जिला में थानेदार पद पर तैनात थे। इनके दादाजी पं. शिवशंकर शाहजादपुर में जमींदार थे, जिन्होंने बचपन से ही दुर्गादेवी की सभी बातों को पूर्ण करते थे। दस वर्ष की अल्पायु में ही दुर्गा का विवाह लाहौर के भगवतीचरण वोहरा के साथ हो गया। इनके ससुर शिवचरण जी रेलवे में अधिकारी थे। अंग्रेज सरकार ने इनको रायसाहब का खिताब दिया था। भगवतीचरण रायसाहब का पुत्र होने के बावजूद अंग्रेजों की गुलामी से देश को मुक्त कराना चाहते थे। भगवतीचरण क्रान्तिकारी संगठन के प्रचार मन्त्री थे। सन् १९२० में पिताजी की मृत्यु पश्चात् भगवती चरण खुलकर क्रान्ति में आ गए और पत्नी दुर्गादेवी ने पूर्णरूपेण सहयोग दिया। दुर्गा देवी का मायका और ससुराल दोनों सम्पन्न थे। ससुर शिवचरण ने दुर्गादेवी को चालीस हजार और पिता बांके बिहारी ने पांच रुपए संकट के वक्त काम आने के लिए दिए थे, किन्तु इस दम्पत्ती ने इन रुपए का उपयोग क्रान्तिकारियों की गतिविधियों में खर्च किए।

दिनांक १७.११.१९२८ को लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला लेने के उद्देश्य से चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, राजगुरु आदि ने लालाजी की मौत के दोषी साण्डर्स को लाहौर में गोलियों से मौत के घाट उतार दिया, किन्तु क्रान्तिकारी लाहौर से कैसे बाहर भाग निकले? एक रात्रि ११.०० बजे सुखदेव अपने साथियों के साथ दुर्गाभाभी के घर पहुंचे। सुखदेव ने कहा-भाभी! तुमने इन व्यक्तियों को पहचाना। भाभी ने कहा- सुखदेव भैया! इन्हें नहीं पहचान पाई, किन्तु एक क्रान्तिकारी जिसने कीमती सूट पहना था, पैरों में चमचमाते हुए बूट, सिर पर फैल्ट हैड पहने थे। दुर्गाभाभी के इस कथन को सुन भगतसिंह जोर से हंस पड़ा। भगतसिंह की हंसी को पहचानकर दुर्गा भाभी ने आश्चर्य के साथ

कहा- कौन भगतसिंह? हाँ भाभी! मैं भगतसिंह हूं, पहली परीक्षा में मैं पास हो गया। जब तुम ही मुझे पहचान नहीं सकी तो गोरी चमड़ी वाली पुलिस मुझे क्या पहचानेगी? सुबह होते ही दिनांक १८.१२.१९२८ को सर्वप्रथम चन्द्रशेखर एक पण्डे का रूप धारण कर हरे रामा, हरे कृष्णा कहते हुए निकल पड़ा। भगतसिंह ने अपने सूट के ऊपर सर्दी से बचने के लिए चैस्टर भी पहन रखा था। जिसकी जेब में रिवाल्वर रखा था। दुर्गा भाभी ने तीन वर्षीय बच्चे शचीन्द्र को इस प्रकार उठा रखा था कि जिसके कारण चेहरा कुछ ढंक गया। भगतसिंह के पीछे ऊंची ऐड़ी के सैण्डिल पहन दुर्गाभाभी खट-खट की आवाज करती ऐसी चल रही थी मानो कोई बड़े अफसर की मेम साहिबा की ठसक भरी चाल हो। कन्धे से एक कीमती पर्स लटक रहा था, जिसमें एक पिस्तौल भी रखा था। इन दोनों के पीछे नौकर के वेष में राजगुरु सामान उठाये चल रहा था। ये क्रान्तिकारी लाहौर से कलकत्ता सुरक्षित पहुंचने पर भगवतीचरण वोहरा ने बड़े गर्व से कहा-अरी दुर्गे! मैं तो तुम्हें एक देहातिन नारी ही समझा था। तुमने अपने आपको और नन्हे बच्चे को जोखिम में डाल एक क्रान्तिकारीणी के रूप में प्रस्तुत करके तुमने मुझे बहुत हर्षित किया है। आज तुम सही अर्थों में मेरी क्रान्तिकारी, साहसी पत्नी सिद्ध हुई।

जिस प्रकार सर्वप्रथम जननायक टन्ट्या मामा ने अपनी वीरता, साहस के बलबूते पर केन्द्रीय जेल जबलपुर से सभी क्रान्तिकारी कैदियों को निकाल भगा दिया था। ठीक ऐसा ही भगवतीचरण वोहरा ने भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु आदि क्रान्तिकारियों को लाहौर जेल से भागने की योजना के अन्तर्गत बम बना लिए थे। क्योंकि भगवतीचरण बम बनाने एवं विस्फोट के मामले में नामी और पारंगत थे। दिनांक ०१.०६.१९३० को जेल पर आक्रमण करना था, अस्तु दिनांक २८.०५.१९३० को दुर्गाभाभी ने भगवतीचरण, सुखदेवराज, वैशपायन आदि क्रान्तिकारियों को चन्दन, रौली से तिलक कर एक बम का परीक्षण करने के लिए रावी नदी के एक निर्जन स्थान पहुंचे। भगवतीचरण अपने साथियों से दूर हटकर बम फेंकने की तैयारी में ही थे कि दुर्भाग्य से बम हाथ में ही फट गया। जो कि इस हादसे में भगवती चरण वोहरा शहीद हो गए। दुर्गा भाभी के जीवन पर बहुत बड़ा वज्रपात हुआ, उनका संसार उजड़ चुका था। फिर भी धैर्य और साहस के साथ अपने कलेजे पर पत्थर रख, वीरतापूर्वक अपने क्रान्ति-पथ पर अडिग रही। दिनांक ९-१०-१९३० को अत्याचारी गवर्नर हैली पर दुर्गाभाभी ने गोली चलाई। जिसमें हैली तो बच गया लेकिन सैनिक अधिकारी टेलर घायल हो गया। क्रान्तिकारी पार्टी के लिए दूसरा वज्रपात यह हुआ कि भगतसिंह, सुखदेव तथा राजगुरु को जेल से मुक्त न कर सके। अन्ततः दिनांक २३.०३.१९३१ को फाँसी हो गई। इनकी फाँसी के विरोध में अंग्रेजी शासन के लिए दुर्गाभाभी ने रणचण्डी का रूप धारण कर लिया। बम्बई के पुलिस कमिश्नर को दुर्गाभाभी ने गोली मारी, जिसके कारण अंग्रेज पुलिस इनके पीछे पड़ गई। बम्बई के एक फ्लैट में दुर्गाभाभी और साथी यशपाल को गिरफ्तार कर लिया गया। इन्हें एक साल की कठोर कारावास की सजा मिली। इनके बाद तीन वर्ष तक इन्हें नजर बन्द रखा गया।

दुर्गाभाभी के त्याग और वीरता के अन्य कार्यों में क्रान्तिकारियों के लिए राजस्थान से पिस्तौल लाना और ले जाना था। चन्द्रशेखर आजाद अंग्रेजों से लड़ते समय जिस पिस्तौल से खुद को गोली मारी थी उसे दुर्गाभाभी ने ही लाकर प्रदान की थी। जब भगतसिंह और बटुकेश्वरदत्त केन्द्रीय असेम्बली में बम फेंकने के लिए जाने से पहले दुर्गाभाभी और सुशीला दीदी ने अपने रक्त से इनका तिलक किया था।

दिनांक १०-११-१९१६ को शहीद करतार सिंह को फांसी हो जाने के बाद इनकी पुण्यतिथि को एक खुले उत्सव के रूप में मनाया तो सनसनी फैल गई। क्योंकि दुर्गा भाभी और सुशीला दीदी ने शहीद करतारसिंह सराबा की तस्वीर पर जो तिलक किया गया वह कुमकुम या चन्दन से नहीं वरन् अपने-अपने हाथ के रक्त से तिलक करके श्रद्धांजलि अर्पित की गई थी। दुर्गा भाभी को सामाजिक, राष्ट्रीय गतिविधियों के अलावा स्वयं से कहीं अधिक चिन्ता अपने पुत्र शचीन्द्र की थी। पुत्र को अपने शुभचिन्तकों को यहां छोड़ा जाता था। किसी स्थान पर अपने पुत्र को रखती थी तो स्वयं किसी स्थान पर वह रहती थी। साहस और सूझ-बूझ ने दुर्गाभाभी का कभी साथ नहीं छोड़ा। अपने पुत्र को परेशानी से बचाने तथा उसकी शिक्षा का प्रबन्ध करने की दृष्टि से वह दिल्ली में खुले रूप से रहने लगी। यहां पुलिस ने उन्हें कितना परेशान कर रही थी, इस सम्बन्ध में दुर्गा भाभी ने एक वक्तव्य 'फ्री प्रेस' संवाददाता को दिया। दिल्ली से लाहौर आने पर यहां उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें छह महीने तक नजरबन्द रखा गया। नजर बन्दी की अवधि समाप्त होने पर दुर्गा भाभी गाजियाबाद आ गई। यहां प्यारेलाल कन्या विद्यालय में अध्यापिका नियुक्त हो गई। गाजियाबाद में कुछ दिन रहने के बाद दुर्गा भाभी दिल्ली पहुंच गई। और कांग्रेस में कार्य करने लगी। इनके तप-त्याग और कर्मठता से प्रभावित होकर दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित किया गया। इस पद पर बहुत समय कार्य करने के बाद स्वाधीन भारत में लखनऊ को अपना स्थायी निवास बनाया और यहां नन्हे-मुन्नों में राष्ट्रीय संस्कार डालने के उद्देश्य से एक मान्टेसरी विद्यालय खोलकर अपनी सारी शक्ति उसके संचालन में अर्पित कर दी जो आज भी लखनऊ में इन्टर कॉलेज के नाम से जाना जाता है। आजादी के बाद पंजाब के मुख्यमन्त्री दरबारसिंह ने एक समारोह में दुर्गाभाभी को पंजाब सरकार की ओर से भेंट प्रदान की।

दुर्गा भाभी ने मुख्यमन्त्री को रुपए वापिस करके कहा- यह धन शहीदों की कीर्ति गाथा में व्यय किये जाएं। बाद में किसी ने भाभी से पूछा- भाभी! आप की दो बेटियां जो कि विवाह योग्य हैं, फिर भी आपने रुपए क्यों लौटाए? भाभी ने कहा- 'शहीद किसी एक प्रान्त में बसे नहीं होते, शहीदों ने पंजाब में नहीं वरन सम्पूर्ण देश में काम किया है। अतः राजघाट की तर्ज पर उनकी स्मृति में 'काल घाट' बनाया जाए। जीवन के अंतिम वर्षों में दुर्गा भाभी गजियाबाद आ गई और मृत्यु पर्यन्त यहीं रहीं। दिनांक १४-१०-१९९९ को ९२ वर्ष की आयु में वीरता की देवी दुर्गा देवी बनाम दुर्गा भाभी का स्वर्गवास हुआ। राष्ट्र के हित में भाभी का जीवन प्रेरणा का स्त्रोत रहा है।

जो त्याग किया माँ-बहनों ने, वह रंग शीघ्र ही आएगा।
निश्चित ही लाल किले पर माँ, अपना झण्डा लहराएगा।। ■

आज हमारी असली शादी हुई है

- खुशहालचन्द्र आर्य -
१८० महात्मा गान्धी रोड (दो तल्ला)
कोलकत्ता (पश्चिम बंगाल)
चलभाष - ०९८३०१६५७९४

यह शब्द है एक महान् क्रान्तिकारी अमर बलिदानी भगवतीचरण वोहरा की धर्म पत्नी दुर्गा भाभी जिस समय अमर शहीद भगतसिंह की धर्म पत्नी बनकर अपने बेटे शचीन्द्र को गोद में लेकर लाहौर से कलकत्ता सकुशल पहुंची थी, तब भगवती चरण वोहरा ने प्रसन्न होकर अपनी धर्म पत्नी की पीठ ठोंकते हुए कहा था कि '**आज हमारी असली शादी हुई है।**' घटनाक्रम इस भाँति है-

भारत के इतिहास में एक परिवार के दो या तीन भाई एक साथ देश के लिए बलिदान हुए हैं, ऐसी तो कई घटनाएं हैं जिनमें चापेकर परिवार के तीन बन्धु जिनके नाम दामोदर चापेकर, बालकृष्ण चापेकर व वासुदेव चापेकर तथा सावरकर परिवार के तीन भाई जिनके नाम गणेश पन्त सावरकर, विनायक सावरकर व नारायण सावरकर, देश के लिए बलिदान होने में प्रमुख है परन्तु किसी एक पति-पत्नी ने क्रान्तिकारी के रूप में अपना पूरा जीवन देश की बलिवेदी पर अर्पित कर दिया हो, ऐसा उदाहरण केवल भगवतीचरण वोहरा और दुर्गा भाभी का ही मिलता है। ये केवल क्रान्तिकारी ही नहीं थे, बल्कि इनका जीवन लोकैषणा, वित्तैषणा और पुत्रैषणा इन तीनों से ऊपर उठकर एक संन्यासी के रूप में था, इनका अपना कुछ भी नहीं था, तन, मन, धन तथा यौवन सब कुछ देश के लिए था। दुर्गा भाभी के वंशज कौशम्बी जनपद में रहते थे तथा यहीं पर श्री बांके बिहारी भट्ट जी की पहली पत्नी को इस विरांगना की माँ बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इनका जन्म ७ अक्टूबर १९०७ को प्रात:काल हुआ। यह दुर्गा पूजा का समय था इसलिए पुत्री का नाम दुर्गा ही रख दिया गया। पिताजी ने दूसरी शादी कर ली। सौतेली माँ का व्यवहार दुर्गा के साथ अच्छा नहीं था, इसी कारण सम्भवत: बचपन से ही वे विद्रोही स्वभाव की बन गई। इनका पालन पोषण इनकी बुआ कृष्णा ने किया। इसका विवाह मात्र ग्यारह वर्ष की आयु में क्रान्तिकारी भगवतीचरण वोहरा के साथ हो गया। वोहरा जी के पिता शिवचरण जी थे, जो रेलवे में कार्यालय में ऊंचे पद पर लाहौर में कार्यरत थे। इनकी शिक्षा लाहौर के नेशनल कालेज में हुई। वहीं इनकी मित्रता कई क्रान्तिकारियों से हो गई। २७ जुलाई १९२० को जब वोहरा जी के पिता का देहान्त हो गया तब वे खुलकर भारत को स्वतन्त्र कराने के अभियान में क्रान्तिकारियों के साथ जुड़ गए। अंग्रेजों से परेशान होकर दुर्गा भाभी अपने पति के साथ छुपकर अपनी जन्म स्थली कौशम्बी जनपद में शहजादपुर अपने मायके कृष्णा बुआ के पास आ गई। दो महीने सुसराल में रहकर भगवती चरण वहीं से क्रान्तिकारियों का उत्साहवर्धन करते रहे। फिर २६ सितम्बर २९२० को वे पत्नी सहित लाहौर चले आए। यहां पर दुर्गाजी दसवीं की परीक्षा पास करके एक निजी विद्यालय में शिक्षिका बन गई। साथ ही संस्कृत सीखने के लिए शिक्षक भी रख लिया तथा क्रान्तिकारी गतिविधियों में भी भाग लेती रहीं। लाहौर उन दिनों क्रान्तिकारियों का गढ़ माना जाता था। यहां पर उनका सम्पर्क भाई परमानन्द, लाला लाजपतराय आदि से हो गया एवं भगतसिंह, सुखदेव व यशपाल आदि क्राान्तिकारियों से भी घनिष्ठता और अधिक बढ़ गई। लाहौर में ''**नौजवान भारत सभा**'' का गठन किया गया। यह मुख्य रूप से छात्र युवकों का संगठन था तथा इसकी स्थापना भगवतीचरण वोहरा और भगतसिंह ने की थी। दुर्गा भाभी सभा का काम करने के लिए स्वेच्छा से समर्पित हो गई। जब लाहौर में क्रान्तिकारियों के गुप्त अड्डों पर क्रान्तिकारियों की अंग्रेजों के विरुद्ध योजनाएं बनती थी तो दुर्गाभाभी क्रान्तिकारियों के संकेत पर गुप्त रूप से संदेश व शस्त्र इधर से उधर पहुंचाने का काम करती थी।

भगवती चरण बोहरा क्रान्तिकारियों में सबसे बड़े थे इसलिए सभी दुर्गा जी को भाभी कहकर प्रेम से सम्बोधित करते थे। इस प्रकार वे क्रान्तिकारियों की प्रिय भाभी बन गई। हालांकि इनके पेट में जब शचीन्द्र पल रहा था तो एक बार पुन: शाहजादपुर आ गई मगर अंग्रेज पुलिस ने यहां भी उनका पीछा नहीं छोड़ा तब दुर्गा जी को पड़ोस के कन्हैयालाल अग्रवाल के घर छिपाया गया जहां उन्होंने बच्चे को जन्म दिया। सरकार ने जब इनका पीछा नहीं छोड़ा तो ये पुन: लाहौर आ गई और क्रान्तिकारियों की सहायता के लिए समर्पित हो गई। अपने नन्हें से शिशु को गोद में लिए पुलिस से छुपते-छुपाते पूरी तरह क्रान्तिकारी गतिविधियों में सक्रिय बनी रही।

८ अप्रैल १९२७ को दिल्ली असम्बेली में दमनकारी '**पब्लिक सेफ्टी**' बिल प्रस्तुत करते समय भगतसिंह तथा बटुकेश्वर दत्त ने '**इन्कलाब जिन्दाबाद**' व '**सामाज्यवाद का नाश हो**' के नारे लगाकर वहीं पर बम फेंके तथा ये दोनों जानबूझकर वहीं पर गिरफ्तार भी हो गए। उन्हें जेल जाते समय पुलिस से छुड़ाने के लिए चन्द्रशेखर आजाद, भगवती चरण वोहरा, यशपाल धन्वतरी, वैशम्पायन ने बम फोड़ कर आतंकित करने की योजना बनाई, पर सफल नहीं हो सकी। २८ दिसम्बर १८२८ को लाला लाजपतराय की शहादत का बदला लेने के लिए चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह तथा राजगुरु ने लाहौर के बाजार में साण्डर्स को गोलियों से भून दिया।

शेष भाग पृष्ठ २८ पर

ऋषि दयानन्द तुमको जग याद करता है

हे ऋषि दयानन्द तुमको, यह जग याद करता है।
बहता है जल आंखों से, दु:ख की आहें भरता है।।
सवा शताब्दी बीती, किया प्रयाण था तुमने,
संतप्त मानव के दु:खों का किया त्राण था तुमने,
सुषुप्त आर्यवर्त्त में, फूंका प्राण था तुमने,
मधुर वेद वाणी सुनने को मन फिर से करता है।। १।। **हे ऋषि...**

हजारों वर्षों से आर्य जनता पड़ी थी सोई,
गैरत सब मिट चुकी थी, न सुनने वाला था कोई,
दुर्दशा देख आर्यों की, ऋषि की आत्मा थी रोई,
मिटाने मानवता के कष्टों को, ऋषि हुंकार भरता है।।२।। **हे ऋषि...**

दक्षिणा में गुरु विरजानन्द का कहना स्वीकार किया,
परोपकार की खातिर ऋषि ने निज जीवन वार दिया,
फहरा पाखण्ड खण्डन ध्वजा, पण्डों को ललकार दिया,
ईश्वर की वेदवाणी से दुष्टों पर वज्रपात करता है ।।३।। **हे ऋषि...**

चल पड़ा अकेला लेकर ओम् ध्वजा कर में,
वैदिक शंखनाद का उमड़ा अरमान उर में,
डर गये सब ढोंगी मची थी धूम जग भर में,
आर्ष विधि से वेदों का, सद्भाष्य करता है ।।४।। **हे ऋषि...**

दिया स्वराज का नारा, स्वाभिमान को बढ़ाया,
मिटा ऊंच-नीच का भेद, समता का पाठ पढ़ाया,
जादू-टोने टोटकों और ओझों का गढ़ था ढाया,
विधर्मियों के षड्यन्त्र से नहीं ऋषि कभी डरता है ।।५।। **हे ऋषि...**

आज फिर से आर्यवर्त्त में, आ गई पुन: खराबी,
मर्यादा नष्ट हो गई, नहीं रही आंखों में शर्म जरा भी,
नैतिकता अब कहां? सर्वत्र हो गए व्यसनी व दुर्गुणी।
बिगड़ी दशा 'देश' राष्ट्र की, ऋषि भक्तों का दिल रोता है।।६।।
हे ऋषि दयानन्द तुमको यह जग याद करता है।

- देशराज आर्य -
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य
म.नं. ७२५ सैक्टर- ४ रेवाड़ी
चलभाष- ९४१६३३७६०९

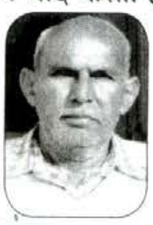

अन्धश्रद्धा-कब तक?

२५ अगस्त २०१७ को डेरा सच्चा सौदा के प्रमुख राम-रहीम के खिलाफ यौन शोषण मामले में फैसले के दौरान अन्ध समर्थकों के आतंक एवं बेहयाई कार्यों तोड़-फोड़, नुकसान और आगजनी जैसे करने पर काव्य, रूप में लिखने का प्रयास किया जो प्रस्तुत है-

जन्म लिया श्री कृष्ण राम ने, धर्म मर्यादा सिखलाया।
वीर शिवा, राणा, प्रताप ने, देश प्रेम को दर्शाया।।
गोविन्द सिंह के बेटों ने, बादशाह का खौफ नहीं खाया।
जल्लादों ने मासूमों को, दीवारों में चुनवाया।।

वतन की खातिर वीरों ने, हंस चूमा फांसी का फन्दा।
उसी राष्ट्र में आज हो रहा है, पाखण्डी गोरख धन्धा।।
अन्ध भक्त होकर लोगों ने, गुरु प्रथा को पनपाया।
कुकर्मी सन्तों ने देखो, कैसा पाखण्ड फैलाया।।

धर्म के नाम पे नामदान दे, मूर्खों की फौज बना डाली।
शक्ति प्रदर्शन करवा कर, कइयों की जान गवां डाली।।
राजनीति में पैठ जमा, राम-रहीम ऐसा छाया।
धर्म मर्यादा छोड़, हत्या-यौन शोषण मन भाया।।

गृहयुद्ध सा माहौल बना, पंचकूला को आ घेरा।
आग लगा आतंक फैलाकर, झूठ हुआ सच्चा डेरा।।
न्यायालय का आदेश हुआ, सम्पत्ति कुर्क कर ली जाए।
नुकसानी की भरपाई कर, गुरमीत को जेल भेजा जाए।।

पहले भी अधर्मियों ने, ऐसे षड्यन्त्र चलाये हैं।
समर्थकों को अपने हित, कई बार यूं ही मरवाये हैं।।
मान खरा सोना पीतल को, जीवन दांव पे लगा बैठे।
''वैदिक'' सत्य ज्ञान से वंचित हो,
हर बार ही धोखा खा बैठे।।

- राधेश्याम गोयल 'श्याम'
कोदरिया (महू), जिला-इंदौर (म.प्र.)
चलभाष- ९६१७५९७९१०

युग प्रवर्तक-गुरु-शिष्य

गुरु स्वामी विरजानन्द जी एवं योग्य शिष्य दिव्य विभूति दयानन्द सरस्वती जी सत्य वैचारिक, आध्यात्मिक, सामाजिक सुधार व स्वतन्त्रता क्रान्ति के पुरोधा

- पं. उम्मेदसिंह विशारद -
गढ़निवास, मोहक्कमपुर, देहरादून
(उत्तराखण्ड)
चलभाष- ०९४११५१२०१९

गुरु श्री दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती

सोते संसार को जगाने वाले महर्षि दयानन्द के गुरु विरजानन्द जी का नाम इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में उल्लेखनीय है। आपने ही संसार को अज्ञान गर्त में पड़ने से बचाया और अस्त हुए वेद सूर्य को फिर से संसार में चमकाया। जब तक सूर्य और चन्द्रमा प्रकाशवान हैं, तब तक मानव आकाशमण्डल में विरजानन्द सूर्य भी चमकता रहेगा।

वेद श्रोत्र की खोज गुरु विरजानन्द जी ने की थी। ऋषि–मुनियों के प्राचीन संसार को वास्तविक श्रोत्र वेद की वास्तविकता को कैसे जान सकते थे, श्री विरजानन्द ने पारस पत्थर के सदृश्य अष्टाध्यायी–महाभाष्य–निघन्टु– और निरुक्त शास्त्रों की खोज की। इसलिए गुरु विरजानन्द जी का नाम संसार के इतिहास में सदैव सम्मानपूर्वक लिया जाएगा। इसके कारण ही संसार को पता चला कि वेदों में मूर्ति पूजा, मनुष्य पूजा, अग्नि और महाभूतों की पूजा नहीं है। ऋषियों की भाषा और वेदों के अर्थ समझने के लिए प्रत्येक अन्वेषक को इस पारसमणि की आवश्यकता है। इन शास्त्रों के बिना, विद्वान, मैक्समूलर, महीधर, विलसन आदि ने वेद भाष्य किये वह अन्धकार मय लोह काल में ले जाते हैं।

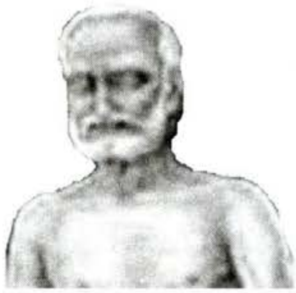

यह उस ब्रह्म ऋषि विरजानन्द जी की जीवन गाथा है, जिनका जन्म १७७९ में पंजाब में करतारपुर के निकट हुआ था। ५ वर्ष की आयु में चेचक के कारण नेत्र दृष्टि हीन हो गए थे, और १३ वर्ष की आयु में माता-पिता की छत्र छाया से वंचित हो गए थे। इन समस्त बाधाओं के होते हुए भी उन्होंने साहस व धीरज का पल्लू नहीं छोड़ा और अपने युग के संस्कृत व्याकरण के अद्वितीय विद्वान बने।

अष्टाध्यायी अध्ययन का पुनरुद्धार करने और आर्ष पद्धति का पुन: अविष्कार करके इतिहास में अपना स्थान बनाया। वे राष्ट्रभक्ति, निभर्यता और आत्म सम्मान की साक्षत् दिव्य मूर्ति थे। उन्होंने युगों पश्चात वेदों को स्वत: प्रमाण घोषित किया और विश्व को महर्षि दयानन्द जैसा शिष्य दिया।

स्वामी विरजानन्द जी के चित्त में एक बड़ी भारी चिन्ता बनी रहती थी, वह यह थी कि संसार का उद्धार किस प्रकार से हो सकता है। स्वामीजी का अनेक राजा महाराजाओं से सम्बन्ध था। वे उनको आर्ष वैदिक धर्मावलम्बी बनाना चाहते थे। वह समझते थे कि राजा लोग सुधर जाए तो प्रजा का सुधार सरल है। साथ-साथ ही भारत का परतन्त्रता रूपी कण्टक भी उनके हृदय को बहुत क्लेश देता रहता था। वे इसी चिन्ता में रहते थे कि प्रिय भारत को परतन्त्रता से कैसे मुक्त कराये किस प्रकार से फिर संसार में वैदिक धर्म का प्रचार हो।

स्वामी विरजानन्द के हृदय पर आर्ष ग्रन्थ का गहरा प्रभाव

स्वामी विरजानन्द जी का एक दक्षिणात्य ब्राह्मण पड़ोसी था जो अष्टाध्यायी का पाठ किया करता था। एक दिन उसके पाठ को स्वामीजी ने ध्यान से सुना। जब उन्हें '**अजाद्युक्ति**' पद में अपने पक्ष को पुष्ट करने वाला प्रबल प्रमाण अष्टाध्यायी का सूत्र '**कृर्तुकर्मणो कृति**' (२१३,६४) मिला तब स्वामीजी के हृदय में हर्ष का पारावार न रहा। उसी दिन से स्वामीजी के हृदय में कौमुदी आदि ग्रन्थों के प्रति प्रबल घृणा उत्पन्न हो गई और तत्काल ही अपनी पाठशाला से अनार्ष ग्रन्थों का बहिष्कार कर दिया और अष्टाध्यायी महाभाष्य आदि आर्ष ग्रन्थों को पढ़ाने लगे। अर्थात्

वेद वाणी

सभी वर्गों के स्त्री-पुरुष वेद पढ़ सकते हैं

परमपिता परमेश्वर ने वेदों की रचना मानव मात्र के लिए की है। यजुर्वेद के अध्याय २६ के मन्त्र सं. २ में लिखा है।

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्य:
ब्रह्मराजन्याय शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।

परमेश्वर कहते है- हे मनुष्यों! मैंने यह सर्वज्ञ कल्याणकारिणी वेदवाणी सभी मनुष्यों के लिए कही है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्रों के लिए स्त्री, सेवक आदि के लिए तथा उत्तम गुण युक्त पिछड़े लोगों के लिए इन सभी के लिए, मानव मात्र के लिए मैंने चारों वेदों का उपदेश दिया।

उपरोक्त मन्त्र में ईश्वर का स्पष्ट आदेश है कि उनके द्वारा उपदिष्ट वेदवाणी को सभी धड़े और सभी जातियों के स्त्री एवं पुरुष बिना किसी भेदभाव के पढ़ सकते हैं तथा अन्यों को पढ़ा सकते हैं।

- आचार्य रामगोपाल सैनी -
फतेहपुर शेखावाटी, जिला-सीकर
(राज.) चलभाष - ९८८७३९३७१३

संसार में व्याकरण के दो ही सत्य ग्रन्थ हैं, एक अष्टाध्यायी और दूसरा महाभाष्य। इनके अतिरिक्त और जो पुस्तकें हैं वे सब अनार्ष लीला मात्र हैं। स्वामी विरजानन्द जी को आर्ष ग्रन्थों के प्रचार की एक ही धुन थी। आर्ष ज्ञान का यह सूर्य संसार में फिर चमकने लगा।

स्वतन्त्रता संग्राम के सूत्रधार स्वामी विरजानन्द

१९१४ विक्रमी तदानुसार १८५७ ई. में जो स्वतन्त्रता संग्राम लड़ा गया उसके जन्मदाता महर्षि विरजानन्द जी महाराज ही थे। क्योंकि जिन राजाओं ने उस स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया वे स्वामी विरजानन्द जी के शिष्य थे। स्वामी विरजानन्द जी को इस पवित्र कार्य में प्रेरणा करने वाले उनके गुरु श्री पूर्णानन्द सरस्वती जी थे। यह नितान्त सत्य है कि जिसे सारे संसार के उद्धार की गम्भीर चिन्ता है जिसने सारे संसार को जगाने का बीड़ा उठाया है वह किस प्रकार से अपनी जन्मभूमि भारत वर्ष को म्लेच्छों के हाथ में देख सकता था। वे शरीर से अत्यन्त वृद्ध हो चुके थे। किन्तु ईश्वर को ऐसा अभिप्रेत न था। कृपालु ईश्वर ने स्वामी विरजानन्द जी के योजना वृक्ष को फलीभूत करने के लिए तथा उनके निराश हृदय में आशा जल सींचने के लिए एक दिव्य विभूति को उनकी पाठशाला में भेजा। उस दिव्य विभूति का नाम दयानन्द सरस्वती था। जिसे पाकर स्वामी विरजानन्द जी ने कहा था कि '**अंधेन याष्टिका लब्धा**' अर्थात् अन्धे को लाठी मिल गई।

स्वामी दयानन्द सरस्वती युग प्रवर्तक शिष्य

सवंत १९१७ वि. तदानुसार १८६०ई. में स्वामी दयानन्द विरजानन्द जी की मथुरा पाठशाला में पहुंचे। स्वामी विरजानन्द जी से दयानन्द जी ने अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निरूक्त आदि आर्ष ग्रन्थों का गम्भीर अध्ययन किया और अपनी पूर्व ज्ञान पिपासा को पूर्णतः शान्त किया। स्वामी विरजानन्द जी ने स्वामी दयानन्द को अपने तुल्य विद्यासागर बनाया और आर्ष ग्रन्थों का प्रचार एवं वैदिक धर्म का प्रसार, भारत स्वातन्त्रय योजना आदि महत्वपूर्ण कार्यों का भार अपने कन्धों से उतार पर स्वामी दयानन्द जी को सौंप दिया। अपने जीवन के अन्तिम समय में विरजानन्द जी ने योग्य शिष्य को प्राप्त करके सुख और शान्ति का अनुभव किया। भारत के इतिहास में युग परिवर्तन के लिए यह अद्‌भुत घटना थी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की देन

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तथा अन्तिम चरण में भारत का भविष्य नया मोड़ ले रहा था, सदियों से सुसुप्त पड़ी देश की चेतना अव्यक्त से व्यक्त और सुसुप्ति से जागृत, जड़ता से प्रगति की ओर अग्रसर हो रही थी। उसी काल में १७७२ में बंगाल में राजा राममोहन राय, १८३४ में रामकृष्ण परम हंस, १८२४ में महर्षि दयानन्द, १८९३ में विवेकानन्द जी, १८९३ में मद्रास में थियोसोफिकल सोसाइटी, १८८४ में महाराष्ट्र में प्रार्थना सभा, इसी काल में मुसलमानों को जगाने पर सर सैय्यद अहमद ने जन्म लिया।

विशेष ध्यानाकर्षण: महर्षि दयानन्द जी को छोड़कर उक्त सभी विभूतियों ने समय व रूढ़ियों के साथ समझौता करके रुढ़ी संस्कृति को ही आगे बढ़ाया, इन्होंने माना वेदों में पशु बलि है, नारी को वेद न पढ़ना, शिक्षा से वंचित रखना, जाति-पाति, छुआ-छूत मूर्ति पूजा वेदों में लिखा है, क्योंकि वेदों के शब्दों के अर्थों का इतिहास परक अनर्थ किया गया था, किन्तु महर्षि दयानन्द जी ने सर्वप्रथम वेदों के रुढ़ी इतिहास परक अर्थों पर प्रहार किया और संसार के सामने निरुक्त भाष्य के अनुसार वेदों के ईश्वर परक अर्थ किये, वेदों में मूर्ति पूजा नहीं है, वेदों में जाति व्यवस्था नहीं है, वेदों में बलिप्रथा नहीं है, वेदों में अनेक सामाजिक कुरुतियां नहीं है। इन्होंने वेदों के अर्थ सृष्टि क्रमानुसार रखकर एक नई वैचारिक क्रान्ति को जन्म दिया, एक नई लहर पैदा कर दी, सबको झकझोर कर रख दिया। सारे महापुरुष समय के साथ चले किन्तु दयानन्द जी ने समय को अपनी तरफ चलाया, जमाने की गर्दन पकड़ कर अपनी ओर चलाया। सत्यार्थ प्रकाश लिखकर नई क्रान्ति को जन्म दिया। आर्य समाज खोलकर सारे संसार को नई वैचरिक धारा प्रदान की, इसीलिए उन्नीसवीं शताब्दि भारत का भविष्य बदलने वाली हुई और स्वतन्त्रता का मूल पाठ महर्षि दयानन्द जी ने ही पढ़ाया था।

प्राचीन ऋषियों के लेखन शैली का अनुकरण तथा भारतीय संस्कृति का पुनःउद्धार

• प्राचीन काल में गुरु-शिष्यों का संवाद व ज्ञानार्जन एवं शंका समाधान में प्रश्नोत्तर के रूप में होता था, क्योंकि मनुष्य की प्रवृत्ति है कि वह प्रत्येक जिज्ञासा के लिए प्रश्न करता है, तभी उसकी संतुष्टि होती है। यही पद्धति महर्षि दयानन्द जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश व ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका व अन्य ग्रन्थों में अपनाई, जो अपने आप में एक प्रेरणास्त्रोत्र है।

• सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द जी ने त्रेतवाद का सिद्धान्त दिया, जीव ब्रह्म, प्रकृति को नित्य माना और उसको वेदानुसार सिद्ध किया।

• महर्षि ने वेदों के अर्थ इतिहास परक नहीं, ईश्वर परक किये और जहां जिस मन्त्र में जो संगति लगती है उसको शुद्ध रूप में लगाया।

• महर्षि जी ने सिद्ध किया कि शिक्षा का अधिकार सभी स्त्री पुरुषों को है, नारी और शूद्रों को भी पढ़ने का समान अधिकार है। समाज सुधार का यह बहुत बड़ा कदम था।

• महर्षि जी ने सिद्ध किया कि ईश्वर ने सृष्टि के सारे तत्व सब प्राणियों के लिए बनाए हैं। ईश्वर कभी भेदभाव नहीं करते तो मानव जगत् में भेदभाव क्यों होता। उन्होंने ऊंच, नीच, छुआ-छूत, शास्त्रों में नहीं है सिद्ध किया।

• महर्षि दयानन्द जी ने सिद्ध किया, वेदों में जाति व्यवस्था नहीं है, अपितु गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था है, उन्होंने कहा जाति उसको कहते हैं जो जन्म से मृत्यु तक बनी रहे जैसे मनुष्य, घोड़ा, गाय व करोड़ों पशु-पक्षी ये प्रभु कृत जातियां हैं।

• महर्षि जी ने तमाम धार्मिक व सामाजिक अन्धविश्वासों को मिटाया। स्वराज्य का बोध कराया और स्वतन्त्रता आन्दोलन की नींव रखी। महर्षि दयानन्द जी ने सारा सामाजिक ढांचा ही बदल दिया।

(लेख का अधिकांश भाग आर्य '**समाज के बलिदानी**' ग्रन्थ, लेखक स्वामी ओमानन्द सरस्वती से लिया गया है।) ■

अकल्पनीय परमात्मा के अकल्पनीय ब्रह्माण्ड का वैज्ञानिक चिन्तन

- ओमप्रकाश आर्य -
मन्त्री-आर्य समाज रावतभाटा
व्हाया कोटा (राजस्थान)
चलभाष- ९४६२३१३७९७

महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में '**ब्रह्म**' शब्द की सिद्धि करते हुए इस शब्द की उत्पत्ति '**बृह, बृहि**' धातु से बताई है, जिसका अर्थ होता है वृद्धि। वे लिखते हैं- **जो सबके ऊपर विराजमान, सबसे बड़ा अनन्तबलयुक्त परमात्मा है, उस ब्रह्म को हम नमस्कार करते हैं।** वे उल्लेख करते हैं- '**निरन्तर व्यापक होने से परमेश्वर का नाम ब्रह्म है।**' वे पुनः लिखते हैं- '**योऽखिलं जगन्निर्माणेन बर्हति वर्द्धयति स ब्रह्मा।**' अर्थात् जो सम्पूर्ण जगत् को रच के बढ़ाता है इसलिए परमेश्वर का नाम '**ब्रह्मा**' है।

ब्रह्म+ अण्ड अथवा ब्रह्मा+अण्ड= ब्रह्माण्ड। इसका अर्थ हुआ- ब्रह्म का अण्डा। अण्डे से क्या उत्पन्न होता है? प्राणी। ब्रह्म का अण्डा क्या है? ब्रह्म का अण्डा है- नाना दृश्य-अदृश्य लोक-लोकान्तर। इन्हीं लोक-लोकान्तरों में प्राणियों की उत्पत्ति व स्थिति होती है। ये अण्डे कितने हैं? हम इनकी कल्पना नहीं कर सकते। इसलिए इनके लिए असंख्य शब्द उचित है। समस्त लोक-लोकान्तरों को ब्रह्माण्ड कहा गया है। वेद भगवान कहते हैं-

एते सोमास आशवो रथा इव प्र वाजिनः।
सर्गाः सृष्टा अहेषत् ।। ऋ.९/२२/१

पदार्थ- (**एते सोमासः**) यह परमात्मा (**रथा इव**) विद्युत के समान (**आशवः**) शीघ्रगामी है और (**प्रवाजिनः**) अत्यन्त बलवान है। (**सर्गाः सृष्टा अहेषत्**) उसने सृष्टियों को शब्दायमान रचा है।'

भावार्थ- परमात्मा में अनन्त शक्तियां पाई जाती है, उसकी शक्तियां विद्युत के समान क्रिया प्रधान है, उसने कोटानुकोटि ब्रह्माण्डों को रचा है जो शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध इन पांच तन्मात्राओं के कार्य हैं और उनकी ऐसी अचिन्त्य रचना है जिसका अनुशीलन मनुष्य मन से भी भलीभांति नहीं कर सकता।'

इस मन्त्र के कहने का तात्पर्य यह है कि ब्रह्माण्ड कोटानुकोटि है अर्थात् इनकी संख्या अनन्त है। ये गणना से परे है, क्योंकि न जाने कितने ब्रह्माण्ड है जो दूरवीक्षण यन्त्र से भी नहीं देखे जा सकते। ये समस्त ब्रह्माण्ड शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध इन पंचतन्मात्र या पांच सूक्ष्मभूतों के परिणाम है। ये सूक्ष्मभूतों से बने हुए हैं। असंख्य और आंखों से न दिखलाई पड़ने के कारण इनकी संख्या का अनुमान हम मन से भी नहीं कर सकते। इनकी अनन्तता पर विचार करने पर मनुष्य का मन चकरा जाता है। ये तो मन की गति की पहुंच से भी बाहर है। इतना होते हुए ये सभी क्रियाप्रधान हैं, क्योंकि ये सब द्रव्य हैं। द्रव्य उसको कहते हैं जिसमें क्रिया, गुण और केवल गुण भी रहे। देखें सत्यार्थ प्रकाश तृ समु-११ समस्त सृष्टि शब्दायमान है अर्थात् इन सृष्टियों में शब्द है। शब्द किसका हो सकता है? शब्द हो सकता है- प्राणियों का इससे यह अर्थ ध्वनित हो रहा है कि पृथ्वी के अलावा अन्य लोकों में प्राणियों का निवास है, क्योंकि परमात्मा की सृष्टि निरुद्देश्य नहीं हो सकती। वेद भगवान कहते हैं-

एते पूता विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः।
विपा व्यानशुर्धियः।। ऋ. ९/२२/३

पदार्थ- (**पूता**) पवित्र (**एते सोमासः**) ये सब उत्पन्न हुए ब्रह्मण्ड (**दध्याशिरः**) सबके धारक आश्रयभूत (**विपा**) ज्ञान द्वारा (**विपश्चितः**) विद्वानों की (**धियः**) बुद्धि का (**व्यानशुः**) विषय होते हैं।'

भावार्थ- "परमात्मा की रचना में कोटानुकोटि ब्रह्माण्ड हैं। वे सब ज्ञानी-विज्ञानियों की ही समझ में आ सकते हैं अन्यों की नहीं।"

वेदमन्त्र कह रहा है कि ब्रह्माण्ड कोटानुकोटि है अर्थात् इनकी संख्या का पता करना मनुष्य की कल्पनाशक्ति से परे है। इन सबका आश्रयभूत परमात्मा है। विद्वानजन ही इस रचना को समझ सकते हैं। अज्ञ नहीं समझ सकते। विद्वानजन ही इसके बारे में चिन्तन कर सकते हैं, क्योंकि परमात्मा की सारी रचना बुद्धिपूर्वक है। वेद भगवान कहते हैं-

एते पृष्ठानि रोदसोर्विप्रयन्तो व्यानुशः।
उतेदमुत्तमं रजः।। ९/२२/५

पदार्थ- (**एते**) ये सब नक्षत्रादि (**रोद सोः पृष्ठानि**) पृथिवी और द्युलोक के मध्य में (**विप्रयन्तः**) चलते हुए (**इदं उत्तमं रजः**) इस

गायन

दीप जला दो जोश बढ़ा दो भारत के नौजवानों का।
समय आ गया आज देख लो वीरों के बलिदान का।।

आज हमारी मातृभूमि की रक्षा करें जी जान से।
दुश्मन से हम लोहा लेंगे हिम्मत के तीर कमान से।।

चाहें हम चौपट हो जाएं जीव माल धन ज्यान से।
पर भारत का बच्चा-बच्चा जीवेगा ऊँची शान से।।

होश उड़ा देंगे हम दुश्मन के तीर कमान का।
आज हमारी सीमा पर नारा है वीर जवान का।।

मजा चखा देंगे इसको सीमा की बम्बार का।
हमें किसी का डर क्या है, जब गौरव अपनी शान का।

- श्री गंगाराम जांगिड़
नेहा सेल्स कार्पोरेशन,
माधौ बिहारी का अहाता, जयपुर (राज.)

उत्तम रजोगुण को (उत्त व्यानशुः) व्याप्त होते हैं।'

भावार्थ- "उक्त ब्रह्माण्डों की विविध रचना में परमात्मा ने इस प्रकार का आकर्षण और निकर्षण उत्पन्न किया है कि जिसमें एक -दूसरे के आश्रित होकर वे प्रतिक्षण गतिशील बन रहे हैं। या यों कहें कि सत्व, रज और तम प्रकृति के ये तीनों गुण अर्थात् प्रकृति की तीनों अवस्थाएं जिस प्रकार एक दूसरे का आश्रयण करती है, इस प्रकार एक दूसरे को आश्रयण करता हुआ प्रत्येक ब्रह्माण्ड इस नभोमण्डल में वायुवेग के उत्तेजित तृण के समान प्रतिक्षण चल रहा है, कोई स्थिर नहीं है।"

भाव यह है कि ब्रह्माण्डों में आकर्षण और विकर्षण है। आकर्षण और विकर्षण के कारण ये एक निश्चित दूरी पर आश्रित होकर गतिमान हो रहे हैं। कोई भी ब्रह्माण्ड स्थिर नहीं है। सब हवा के वेग से हिलते हुए तृण के समान चल रहे हैं। इन सबकी गतिरचना में परमात्मा की बुद्धिमत्ता समाविष्ट है। वेद भगवान कहते हैं-

सोमा असृग्रमाशवो मधोर्मदस्य धारया।
अभि विश्वानि काव्या। ऋ. ९/२३/१

पदार्थ- (सोमा) अनन्त प्रकार के कार्यक्रम ब्रह्माण्ड **(मधोः मदस्य)** प्रकृति के हर्षजनक भावों की **(धारया)** सूक्ष्म अवस्था से **(आशवः)** शीघ्र गति वाले **(असृग्रम)** बनाये गए हैं और **(अभि विश्वानि काव्या)** तदनन्तर सब प्रकार के वेदादि शास्त्रों की रचना हुई।'

भावार्थ- 'परमात्मा ने प्रकृति की सूक्ष्मावस्था से कोटि-कोटि ब्रह्मण्डों को उत्पन्न किया और तदनन्तर उसने विधि निषेधात्मक सब विद्याभण्डार वेदों को रचा।'

वेद कहता है कि कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड प्रकृति की सूक्ष्मावस्था से स्थूलावस्था में आए हैं। कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड का अर्थ है असंख्य ब्रह्माण्ड। इनकी गणना मनुष्य की बुद्धि से परे है। कारण यह है कि नभोमण्डल को देखकर और उनकी दूरी और बृहता पर चिन्तन करने पर बुद्धि चकरा जाती है। अकल्पनीय ब्रह्माण्ड अकल्पनीय परमात्मा की अकल्पनीय प्रमाण है। इन्हें देखकर उस परमात्मा का सहज ही अनुमान किया जा सकता है। वेद भगवान कहते हैं-

सोमो अर्षति धर्णसिर्दधान इन्द्रियं रसम् ।
सुवीरो अभिशस्तियाः।। ऋ. ९/२३/५

पदार्थ- (सोम) सब पदार्थों का उत्पत्ति स्थान यह ब्रह्माण्ड **(अर्षति)** गति कर रहा है। **(धर्णसि)** सबके धारण करने वाला है और **(इन्द्रियं रसम्)** इन्द्रियों के शब्दस्पर्शादि रसों को **(दधानः)** धारण करता हुआ विराजमान है और उसका **(सुवीरः)** सर्वशक्तिमान परमात्मा **(अभि शस्तिपाः)** सब ओर से रक्षक है।'

भावार्थ- जो ब्रह्माण्ड कोटि-कोटि नक्षत्रों को धारण किए हुए है और जिनमें नाना प्रकार के रस उत्पन्न होते हैं उनका जन्मदाता एकमात्र परमात्मा ही है अन्य कोई नहीं।

वेद कहता है कि ब्रह्माण्ड कोटि-कोटि नक्षत्रों को धारण किए हुए है। अर्थात् दृश्यादृश्य सौरमण्डल या दृश्यादृश्य आकाशगंगा में जितने लोक-लोकान्तर हैं उन सबको ब्रह्म का अण्डा कह सकते हैं, जिस प्रकार मुर्गी अण्डा देती है उस अण्डे से जीवधारी निकलता है। उसी प्रकार ब्रह्मा के अण्डे से सारे के सारे जड़ पिण्ड हैं। इनकी अनन्त संख्या है। हमारे चिन्तन से ये बहुत दूर है।

इन ब्रह्माण्डों की कल्पना अब लिखित वैज्ञानिक चिन्तन के आधार पर करने का प्रयत्न करें- अगर प्रकाश की गति से अन्तिरक्ष की यात्रा सम्भव हो जाए तो कब कहां पहुंचेंगे? प्रकाश की गति यानी लगभग ३० करोड़ मीटर प्रति सेकेण्ड। इस गति से यात्रा करने पर चन्द्रमा पर पहुंचने में १.२८ सेकेण्ड का समय लगेगा। मंगल पर पहुंचने में ४.३६ मिनट, शनि पर पहुंचने में १.१८ घण्टे का समय लगेगा। सूर्य का सबसे करीबी तारा प्रॉक्सिमा सेंचुरी पर पहुंचने में ४.३ साल लगेंगे। जीवन का सबसे अधिक उम्मीद वाला ग्रह वोल्फ १०६१ सी पर पहुंचने में १३.७८ साल का समय लगेगा। मिल्की वे का केन्द्र गैलेक्सी पर पहुंचने में ३०,००० साल लगेंगे। १००० गैलेक्सियों का समूह कॉमा क्लस्टर तक पहुंचने में ३४० मिलियन साल लगेंगे। सबसे बड़ी अज्ञात गैलेक्सी आई.सी. ११०१ तक पहुंचने में १.०३८ बिलियन साल लगेंगे। देखे जा सकने वाले ब्रह्माण्ड के छोर तक पहुंचने में ४६.५ बिलियन साल लगेंगे। (राजस्थान पत्रिका १३.१२.२०१६)

राजस्थान पत्रिका २२.११.२०१६ के अनुसार वैज्ञानिकों ने पृथ्वी से ३४० प्रकाश वर्ष की दूरी पर एक नए ग्रह की खोज की है जो तीन तारों की परिक्रमा करता है और इस ग्रह पर हर दिन तीन बार सूर्यास्त होता है। इसका नाम एचडी- १३१३९९ बी रखा गया है। इसे काफी युवा ग्रह बताया है। मात्र १.६ करोड़ वर्ष। वैज्ञानिक हमारी पृथ्वी की आयु ४.५ अरब वर्ष मानते हैं जो वैदिक विचारधारा के काफी निकट है।

राजस्थान पत्रिका १५.७.२०१७ व २५.७.२०१७ ज्ञान-विज्ञान कॉलम के अनुसार वैज्ञानिकों ने अरबों सूर्य के बराबर सरस्वती नामक सूर्य की खोज किया है। यह हमारी पृथ्वी से ४०० लाख प्रकाशवर्ष दूर है और लगभग १० अरब वर्ष से भी अधिक पुराना है। वैज्ञानिकों ने अपनी आकाशगंगा से १००० गुना ज्यादा चमकीली आकाशगंगा की खोज की है। इस आकाशगंगा में सालाना १००० सौर द्रव्यमान के बराबर तारों का निर्माण हो रहा है। इस उदाहरण से यह बात सिद्ध हो रही है कि सृष्टि का प्रलय (समस्त दृश्यादृश्य सृष्टि) एक साथ नहीं होता। यदि ऐसा होता तो वर्तमान में तारों के बनने की बात नहीं आती। कहीं सृजन होता है तो कहीं प्रलय। यह चलता रहता है। मोक्षप्राप्त आत्माओं को प्रलयावस्था में कोई अन्तर नहीं आता, सिर्फ बुद्ध आत्माएं मूर्च्छित-सी पड़ी रहती है। मुक्त आत्माएं अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड में निर्बन्ध विचरण करती है।

उपर्युक्त विवरण के आधार पर ब्रह्माण्डों के बारे में कल्पना करें तो पता चलेगा कि ये मानव के चिन्तन से बहुत दूर हैं। सर्वशक्तिमान परमात्मा ही इनका नियन्ता है। वेदमन्त्रों के भावार्थों में बार-बार कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड शब्दों का प्रयोग उक्त उदाहरण को परिपुष्ट करता है। हम वैज्ञानिक आधार पर ब्रह्माण्ड और परमात्मा का चिन्तन करेंगे तो अवश्य ही हम एक परमसत्ता की सर्वव्यापकता का अनुमान कर सकेंगे। वेद और विज्ञान एक सिक्के के दो पहलू सिद्ध होंगे। ■

वैदिक ध्यान पद्धति

- डॉ. अशोक कुमार -
वैदिक ध्यान एवं योग प्रशिक्षक
सहारनपुर (उत्तरप्रदेश)
चलभाष- ९६२७४२२३५४

बहुत समय से आर्य समाज में संध्या के मन्त्रों के द्वारा ध्यान उपासना की जा रही है, जिसमें मुख्य रूप से मन्त्र उच्चारण व सीमित समय ही मुख्य विषय रहता है। अर्थ भावना, समर्पण, प्राणायाम का प्रायः अभाव सा रहता है। उसी अभाव को देखते हुए आर्य समाज के वैदिक विद्वानों ने स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित परोपकारी सभा अजमेर के सानिध्य में अनेक गोष्ठियों के द्वारा एक वैदिक ध्यान पद्धति (१५ व ३० मिनट) का सृजन किया, जिससे आर्य बन्धु व उनके परिवार ईधर- उधर न भटककर वेद व ऋषियों के मार्ग का अनुसरण करते हुए विभिन्न दुःखों की निवृत्ति व आनन्द की प्राप्ति कर सके ।

उपरोक्त वैदिक ध्यान पद्धति की मुख्य विशेषताएं-

१. वैदिक सिद्धान्तों के अनुकूल है।

२. यह पद्धति तात्कालिक लाभ के लिए नहीं बनाई गई है।

३. इसमें शरीर के साथ-साथ मन पर भी प्रभाव पड़ता है, जो समाधि तक ले जाने में सहायक है।

४. इसको करने पर जितनी यह दिखती है, उससे अधिक गहरी है।

५. इसमें मुख्य विषय ईश्वर है। उसे ध्यान का विषय बनाया गया है। अन्य ध्यान पद्धतियों में प्रायः ईश्वर के यथार्थ स्वरूप का अभाव है।

६. इसमें विद्वान व बालक भी भावना बना सकता है, जैसे ईश्वर के सर्वव्यापक अर्थ की भावना से गहराई बढ़ती ही जाती है। जिसको बड़े कर सकते हैं व सर्वरक्षक की अर्थ भावना में गहराई भिन्न स्तर की होती है। अतः बालक भी कर सकते हैं।

(७) यह किसी व्यक्ति विशेष से जुड़ी हुई नहीं है। न ही इसमें कोई काल्पनिकता है।

(८) यह हमारे व्यवहार काल से जुड़ी है। इसकी आवश्यकता आजीवन रहेगी। जैसे ईश्वर रक्षा दिनभर करता है। व उसकी सर्वव्यापकता जीवन भर रहती है।

(९) समाधि देर से लगती है, पर लगती अवश्य है।

(१०) इसमें त्रेतवाद को आधार बनाया गया है।

(११) यह स्थुलता से सूक्ष्मता की ओर ले जाती है। (जैसे- शरीर से प्राण, प्राण से इन्द्रियां, मन, आत्मा व परमात्मा तक पहुंचा जाता है।)

(१२) आलम्बन रहित ध्यान करने का अवसर देती है।

(१३) ध्यान में पहुंचने के लिए चित्त को शान्त करने का अवसर देकर फिर ध्यान में ले जाती है। (दीर्घ- श्वसन व प्राणायाम द्वारा)

(१४) यम नियमों को अभिन्न अंग रखा गया है।

(१५) महर्षि पतंजलि व महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का निर्वाह किया गया है।

वैदिक ध्यान पद्धति के लाभ

सिर्फ ज्ञान ही आपको आपका अधिकार दिलाता है

जीवन पथ जटिल है ये, काल चक्र कठिन है ये,
पग-पग पर भेदभाव है, रक्तरंजित पांव है,
जन्म से किसी के सर, वंश की छांव है,
झूठ के रथ पे सवार, डाकुओं का गांव है,
किसी के पास है छल-कपट, किसी को रूप का वरदान है,
ये सोच के मत बैठ जा कि, ये विधि का विधान है,
बज रहा मृदंङ्ग है, ये कहता अंग-अंग है,
कि प्राण अभी शेष है, मान अभी शेष है,
उठा ले ज्ञान का धनुष,
एक कण भी और कुछ मांग मत भगवान से,
ज्ञान की कमान पे लगा दे, तू विजय तिलक,
काल के कपाल पे लिख दे, तू ये गुलाल से,
कि रोक सकता है कोई तो, रोक के दिखा मुझे,
अधिकार छीनता आया है जो, अब छीन के बता मुझे।
ज्ञान के मंच पर सब एक समान हैं।
विधि का विधान पलट दे वो ब्रह्मस्त्र ज्ञान है।
तो आज से ये ठान ले, ये बात गांठ बांध ले,
कि कर्म के कुरुक्षेत्र में,
ना रूप काम आता है, ना झूठ काम आता है,
ना जाति काम आती है, ना पिता का नाम काम आता है,
सिर्फ ज्ञान ही आपको, आपका अधिकार दिलाता है।

ब्रह्मस्त्र ज्ञान के सौजन्य से

कपिल शर्मार्य
आर्य समाज देहरी,
जिला-मंदसौर (म.प्र.)
चलभाष- ९७५४१०८९०४

१. दिनभर शान्त व प्रसन्न रहने के लिए।

२. कुशाग्र व तीव्र बुद्धि होती है (आई क्यू लेबल बढ़ता है)।

३. स्मृति बढ़ाता है।

४. शीघ्र निर्णय लेने व कार्य क्षमता बढ़ाने के लिए।

५. उत्साह पराक्रम से युक्त आशावादी बनने के लिए।

६. अधिकारी बनने के लिए।

७. उज्जवल भविष्य के लिए।

८. धनवान व धैर्यवान (सन्तोषी) बनने के लिए।

९. प्रत्येक क्षेत्र व उद्देश्य में शीघ्र सफलता के लिए।

१०. अपनी स्वभाविक आदत (हैबिट पटर्न) को बदलने के लिए।

११. तनाव (टेंशन), अवसाद (डिप्रेशन), अनिद्रा, कब्ज, गैस आदि को नियंत्रण के लिए।

१२. मन के 'रूपान्तरण' के लिए (ट्रांसफोरमेशन)

१३. कृत्रिमता से वास्तविकता में जीने के लिए।

१४. आत्मा व परमात्मा को जानने के लिए।

नोट- (वैदिक ध्यान का प्रारूप अगले पृष्ठ पर है)

वैदिक ध्यान का संक्षिप्त प्रारूप

१. स्थिर आसन (शरीर की शिथिलता, मन की शान्ति) १ मिनट

२. ओ३म् व गायत्री मन्त्र १ मिनट

३. संकल्प (आत्मचिंतन) १ मिनट = कुल- ३ मिनट

४. दीर्घ श्वसन- १ मिनट

५. बाह्य- प्राणायाम (ओंकार सहित) ३ मिनट = कुल-४ मिनट

६. प्रत्याहार (इन्द्रिय निग्रह) १ मिनट

७. धारणा १ मिनट

८. ध्यान= ओ३म् +अर्थ चिन्तन (उच्च स्वर-सर्वव्यापक, मन्द स्वर-सर्वरक्षक, मौन- निर्विकार) ५ मिनट = कुल- ७ मिनट

९. समर्पण- धन्यवाद कृतज्ञता- १ मिनट

वैदिक ध्यान १५ मिनट का विस्तृत प्रारूप

१. स्थिर आसन (शरीर को शिथिलता, मनत की शान्ति)-स्थिरता एवं सुखपूर्वक बैठना, सुखासन, स्वस्तिकासन, सिद्धासन, पद्मासन या अन्य आसन में बैठना जिसमें स्थिरता भी रहे व सुखपूर्वक (कष्ट रहित) भी हो। आसन लगाकर सम्पूर्ण शरीर को शिथिल करना है, तनाव खिंचाव रहित करना है, मुख पर प्रसन्नता और मन में शान्ति का भाव लाना है। इससे आसन अधिक स्थिर एवं अधिक सुखपूर्वक हो सकेगा।- १ मिनट

२. ओ३म् व गायत्री मन्त्र- ओ३म् के दीर्घ उच्चारण के बाद धीमी गति से गायत्री मन्त्र का उच्चारण। इसे इच्छानुसार मध्यम स्वर में, मन्द स्वर में या मानसिक रूप से जिससे भी अच्छी अनुभूति व एकाग्रता होती है कर सकते हैं। १ मिनट

३. संकल्प- हे परमात्मन् । मैं विविध दुःखों की निवृत्ति और आनन्द की प्राप्ति के लिए अपने सम्पूर्ण सामर्थ्य से आपका ध्यान करने के लिए आपकी शरण में आया हूँ। मुझे इस कार्य में सफलता मिले, ऐसी कृपा कीजिए। १ मिनट

४. दीर्घ श्वसन- नासिका से लम्बा गहरा लयबद्ध श्वास सहजता से लेना और छोड़ना। १ मिनट।

५. बाह्य- प्राणायाम- (ओंकार सहित) पूरा श्वास भरना, मूलेन्द्रिय को संकुचित कर उसे ऊपर की ओर खींचकर श्वास को बलपूर्वक एक बार में ही पूरा बाहर फेंकना (किन्तु झटका न लगे) और उसे बाहर ही रोक देना। नाभि के नीचे के भाग को पीछे थोड़ा ऊपर की ओर आकर्षित करना और पेट को सिकोड़कर पीठ की ओर दबाए रखना। साथ ही मन में ओ३म् का जाप करते रहना। यथाशक्ति श्वास को बाहर ही रोके रखना। फिर पेट व मूलेन्द्रिय को ढीला छोड़ते हुए धीरे से (बिना झटके के) श्वास को अन्दर भरना। एक-दो सामान्य श्वास लेकर पुनःबल पूर्वक उसे बाहर फेंक कर पूर्ववत् बाहर ही रोके रखना। इस प्रकार तीन प्राणायाम करना। तत्पश्चात् कुछ समय तक शान्त बैठना।

६. प्रत्याहार (इन्द्रियों को विषयों से हटाना)-शरीर- ३ मिनट। को शिथिल रखते हुए मन को निराकार सर्वव्यापक परमेश्वर के स्मरण में लगाना। यदि इन्द्रियों का शब्द स्पर्श, रूप, रस व गंध आदि कोई विषय में आ ही जाता है तो उसे चिन्तन का विषय न बनाकर मन को परमेश्वर में ही लगाए रखना। मन में ईश्वर-चिन्तन करते हुए रहने पर इन्द्रियों की विषयों में प्रवृत्त होने की प्रवृत्ति शान्त हो जाएगी। १ मिनट

७. धारणा- नाभि, हृदय, कण्ठ, जिह्वाग्र, भ्रूमध्य, मूर्धा आदि शरीर के किसी एक स्थान पर अन्दर ही अन्दर मन को एकाग्र करना। मन को यहीं टिकाए रखना (संवेदना देखनी है) १ मिनट।

८. ध्यान-ओ३म् (प्रणव जाप) + अर्थ चिन्तन (सर्वव्यापक, सर्वरक्षक, निर्विकार)- नासिका से धीमा लम्बा और गहरा लयबद्ध श्वास लेकर इसी तरह छोड़ते हुए 'ओ३म्' का ऊंचे-स्वर से मधुर उच्चारण, साथ में ईश्वर के सर्वव्यापक अर्थ की भावना। दूसरी बार मन्द स्वर से मधुर उषांश उच्चारण, साथ में ईश्वर के सर्वरक्षक अर्थ की भावना। तीसरी बार 'ओ३म् ' का श्रद्धापूर्वक मानसिक जप करना, साथ में ईश्वर के निर्विकार अर्थ की भावना। परमेश्वर को सर्वव्यापक, सर्वरक्षक, निर्विकार रूप में विचार व न स्वीकारना एक समय में इनमें से किसी एक अर्थ का विचार रखना।

इसी विचार को अधिक गम्भीरता व प्रेम-भक्ति से करते हुए आत्मा को निराकार, सर्वव्यापक सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा में निमग्न अनुभव करना। निर्विकार परमात्मा की सानिध्य में स्वयं को निर्विकार करते जाना, निर्विकार रहने की प्रार्थना करना। अपने में शुद्ध, पवित्र, शान्त स्थिति को अनुभव करना। ५ मिनट

९. समर्पण- धन्यवाद-कृतज्ञता- '**हे परमेश्वर दयानिधे**' आपकी कृपा से जप, उपासना, रूप कर्मो को करते हुए हम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को शीघ्र प्राप्त होवे। इसके बाद कुछ क्षण अर्न्तमुखी रहते हुए गहन व पूर्ण मौन अन्त में ईश्वर को धन्यवाद करके एक बार '**ओ३म्**' व तीन बार '**शान्ति**' का लम्बा धीमा मधुर उच्चारण। १ मिनट ■

दीपावली पर्व-ऋषि निर्वाण दिवस

विश्वकर्मा कुल गौरव
- आचार्य रामज्ञानी आर्य -
लार चौक, जनपद-देवरिया (उ.प्र.)
चलभाष: ९९५६३२६७५६

दीपावली पर्व भारत ही नहीं अपितु विश्व में भी प्रकाश-पुञ्ज यज्ञोपरान्त आर्यजन अपने घरों पर घृत का दीपक जलाकर ज्योति रूप में मनाते थे। भारत में राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया जाता है।

आज से ठीक १३४ वर्ष पहले ३० अक्टूबर १८८३ की सन्ध्या को समस्त आर्यावर्त्त देश दीपावली मना रहा था, उसी समय वेद के सार्वभौम, सनातन तथा स्वतन्त्र सत्यों को संसार में पुनर्जीवित करने वाले वैदिक विद्या के अद्वितीय विद्वान, ब्रह्मचारी, निर्भिक, सत्यनिष्ठ संन्यासी और महान् तत्वदर्शी महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने निर्वाण पद प्राप्त किया एवं साथ ही मृत्यु पर विजय प्राप्त की।

विश्व में जितने महापुरुष हुए हैं, उनमें से अद्वितीय समाज सुधारक ऋषिवर दयानन्द सरस्वती एक थे। उनके विचार आज भी प्रासंगिक एवं ग्राह्य हैं।

आज के दौर में जो चतुर्दिक अन्धविश्वास, ढोंग पाखण्ड अन्ध विश्वास फैला हुआ है, बुद्धिजीवी वर्ग आज म. दयानन्द सरस्वती को याद कर रहे हैं। महर्षि ने समाज में व्याप्त सती-प्रथा, बाल-विवाह, दहेज, मूर्तिपूजा, श्राद्ध, पिण्डदान आदि जैसी कुप्रथाओं के प्रतिकूल एक अद्वितीय आन्दोलन छेड़ा था।

अमृतसर में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पंड़ितों को शास्थार्थ का चैलेन्ज दिया तो वे बहुत अधिक संख्या में जय-जय की आवाज करते हुए उनकी सभा में आए। वे सब तिलक लगाए, पुस्तकें बगल में दाबे स्वामीजी के सामने बड़ी अकड़ के साथ बैठ गए। उन्होंने शास्त्रार्थ विचार-विनिमय तो कुछ नहीं किया। एकाएक उनके चेलों ने स्वामीजी पर ईंट-पत्थर फेंकना आरम्भ कर दिया। इससे स्वामीजी के भक्तों में बड़ा क्षोभ उत्पन्न हुआ, उसी समय जवाब में दण्ड देने को उद्यत हो गये। स्वामीजी ने कहा- यह ईंट-पत्थर नहीं-फूलों की वर्षा है, मत (सम्प्रदाय) रूपी मदिरा से उन्मत्त जनों पर कोप नहीं करना चाहिए। हमारा काम एक वैद्य जैसा है, उन्मत्त मनुष्य को वैद्य, औषधि देता है, न कि उसके पागलपन के कारण मारपीट करता है। आज जो लोग मुझ पर ईंट-पत्थर और धूल बरसाते हैं, वे ही एक दिन फूलों की वर्षा करने लगेंगे। व्याख्यान तो समय पर ही बन्द करूंगा। स्वामीजी ने कहा कि मेरे ऊपर अनेक बार विष आदि घातक पदार्थों का प्रयोग किया गया। मैंने उसे योग क्रियाओं से बाहर निकाल दिया। शरीर में कुछ न कुछ उसका दूषित प्रभाव रह जाता है। यही कारण है कि अब मुझे अपने शरीर के अधिक ठहरने का भरोसा नहीं है, अन्यथा मैं एक शताब्दी तक तो पूर्ण स्वस्थ अवस्था में जीवित रह ही सकता था।

अनेक बार प्राणघातक विष देने पर भी स्वामीजी ने कहा- "यदि मुझे तोप के मुंह से बांध दिया जाए और तोप चलाने से पूर्व मुझसे बोलने के लिए कहा जाए, उस समय भी मैं सत्य का मण्डन करूंगा और असत्य का खण्डन करूंगा। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी साइन्स के उच्चकोटि के विद्वान थे। इन्हें ईश्वर के सत्ता में विश्वास नहीं था। इनको नास्तिक से आस्तिक बनाया। अन्त में मैं यही कहना चाहता हूं कि स्वामीजी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि उनके बताये और बनाये गये नियमों, सिद्धान्तों एवं उद्देश्यों को अपने जीवन में लागू कर ईर्ष्या-द्वेष, मिटाकर समाज में व्याप्त ढोंग, पाखण्ड एवं अन्धविश्वासों को दूर कर आर्य जन ऋषि के अधूरे स्वप्नों को साकार करने में उद्यत हो। (इत्योम) ■

छलनी से छानकर वाणी बोले

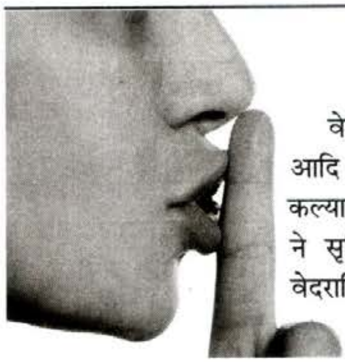

-डॉ. शिवदत्त पाण्डे -
वेद वेदाङ्ग विद्यापीठ, गुरुकुल, आश्रम
धनपतगंज, जिला-सुल्तानपुर, (उ.प्र.)
चलभाष- ९९५६२३८२८३

वेद सत्य सनातन ज्ञान विज्ञान का आदि स्त्रोत है। जगत् में रचयिता सबके कल्याण के सेतु परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के आदि में सर्वकल्याणकृत, वेदराशि को चार तपःपूत ऋषियों के पवित्र अन्तःकरण में निःश्वासत् स्वाभाविक रूप से प्रकाशित किया था। समस्त वेदराशि विषयभाग के दृष्टिकोण से चार भागों में विभक्त किए गए हैं। ज्ञान-कर्म- उपासना और विज्ञान विषयों को क्रमशः ऋग, यजु, साम और अथर्व नाम से जाना जाता है। भारतीय परम्परा में वेदों में पौर्वापर्य भाव नहीं माना जाता, किन्तु पाश्चात्य परम्परा वेदों में पौर्वापर्य मानती है। वे ऋग्वेद को विश्व पुस्तकालय की प्रथम पुस्तक मानते हैं। कहा गया है-Rigved is the oldest book of world library . अर्थात् ऋग्वेद संसार के पुस्तकालय की प्रथम पुस्तक है। दस मण्डल,

आठ अष्टक, चौसठ अध्याय, एक हजार अट्ठाईस सूक्तों में सुबद्ध यह ज्ञान भण्डार दस हजार पांच सौ बावन मन्त्रों में निहित है। कलेवर के दृष्टिकोण से यह सबसे बड़ा वेद है। इसमें गायत्री, उष्णिक, अनुष्टुप्, वृहती पंक्ति, त्रिष्टुप्, जगती सभी सातों छन्दों में मन्त्रों का पाठ प्राप्त होता है। अग्नि के गुण वर्णन से प्रारम्भ होकर समता के सन्देश के साथ इस वेद का समापन हुआ है। इस वेद में संज्ञान, नासदीय, पुरुष सूक्त इत्यादि प्रमुख सूक्त हैं। वृहदाकार इस वेद राशि का उपवेद आयुर्वेद है। इसका ऐतरेय ब्राह्मण, ऐतरेय आरण्यक, ऐतरेय और कौषीतकि उपनिषदें इस वेद के वाङ्मय ग्रन्थ हैं। शाकल, बाष्कल और कौषीतकि शाखाएं प्रसिद्ध हैं। ऋचाओं के सन्निधान से गुम्फित यह वेद अनेक विद्याओं का स्रोत है। इसी वेद का एक मन्त्र है-

सक्तुमिव तित उना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत।
अत्रा सखाय: सख्यानि जानते भद्रैवां लक्ष्मी निर्हिताधि वाचि।।

इस मन्त्र में वाग्देवता की समुपासना का वर्णन है। उपमा देते हुए मन्त्र में प्रभु ने कहा है कि व्यक्ति को जैसे छलनी से सत्तू को छानकर प्रयोग किया जाता है, उसी प्रकार शब्दों को हृदय की छलनी से छानकर प्रयोग करना चाहिए। शब्द और अपशब्द तथा शब्द और अर्थ परस्पर उसी तरह से सम्प्रक्त हैं जैसे जौ का छिलका जौ से अत्यन्त चिपका हुआ रहता है। बिना उस छिलके को छांटे सत्तू का प्रयोग नहीं कर सकते। उसी प्रकार बिना छाने शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। कौन-सा शब्द किसके हृदय पर कैसा प्रभाव डालेगा इसका विचार बिना किए कभी भी शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

जो व्यक्ति बोलने से पूर्व विचार कर लेता है, वह व्यक्ति धीर कहलाता है। धीर व्यक्ति ही मन से मनन करके छान-छान कर शब्दों का प्रयोग करने में समर्थ हो पाता है, जो व्यक्ति धैर्यपूर्वक, पूर्वा पर विचार करके शब्दों का प्रयोग करता है। वह सबका सखा बन जाता है और मित्रता को वह ठीक से समझता है, वही सबका मित्र बन जाता है। मित्र बन जाने का ओर बना लेने का मुख्य कारण है कि उनकी वाणी पर कल्याणकारी (भडा) लक्ष्मी विराजमान हो जाती है।

मन्त्र में मन से विचार कर सत्तू के समान छानकर शब्दों के प्रयोग का विधान किया गया है। शब्द संसार का सबसे घातक हथियार है और शब्द संसार का सबसे रामबाण मरहम भी है। विचार का पुट लग जाए तो मरहम और विचार से परे हो जाए तो हथियार। अपने मुख को शीशे के समान खड़े होकर देखिए। नीचे वाला होंठ धनुष। अब बीच में जीभ को रखकर देखिए। एकदम बाण चढ़ा हुआ धनुष। यह बाण जब बिना छाने चल जाता है तो जहां लगता है वहीं घाव कर देता है। और यदि विचार कर लें तो यही बाण वाणी बन जाता है और हृदय की ज्वाला को शान्त कर देता है। चाहें तो वाणी को बाण बना दें और चाहें तो मरहम।

कवियों ने कहा है-

वाणी ऐसी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे आपहु शीतल होय।।

यह वाणी एक ऐसा अस्त्र है जो अमोद्य है। यह वशीकरण है। यजुर्वेद के तेरहवें अध्याय में वाणी को विश्वकर्मा ऋषि की संज्ञा दी गई है। विश्वकर्मा जो अनेक कर्म करता है। जो अनेक कर्म करने में समर्थ है वह विश्वकर्मा हमारी वाणी ही है। यह वाणी कल्याणकारी भी है। नाशकारिणी भी इसीलिए मन्त्र में कहा गया है कि इसे कल्याणकारिणी बनाने के लिए छानकर प्रयोग करना चाहिए। महर्षि मनु ने लिखा है-

दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं जलं पिबेत् ।
सत्यपूतां वदेद्वाचं मनःपूतं समाचरेत् ।।

वाणी को सत्य से पवित्र करके बोलना चाहिए। सत्यासत्य पर विचार करें। दोनों को यथावत् जानकर असत्य को छानकर निकाल दें और सत्य के साथ वाणी का व्यवहार करना चाहिए।

आचार्य चाणक्य के पास एक व्यक्ति आया। प्रणाम करके बैठ गया और बोला आचार्य जी। यह संसार सारा मेरे वश में हो जाए ऐसा कोई उपाय बताओ। आचार्य जी ने पूछा तुम्हारा गांव, तुम्हारी बात मानता है? वह बोला कदापि नहीं। तो आचार्य जी बोले- तुम्हारा परिवार तुम्हारी बात मानता है? वह बोला नहीं, आचार्य जी सभी अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग अलापते हैं। कोई किसी की बात नहीं मानता। तो आचार्य ने पूछा- बेटे-बेटियां बात मानते हैं? नहीं जी आप भी कैसी बात करते हैं? आचार्य जी बोले- तुम्हारी पत्नी तुम्हारी बात मानती है? व्यक्ति बोला- पत्नी? पूरब कहो तो पश्चिम जावे। पश्चिम कहो तो पूरब। बिलकुल नहीं मानती। अच्छा एक बात बताओ तुम्हारी जिह्वा तुम्हारे वश में है? वह बोला- भगवान ने जिह्वा में हड्डी नहीं लगाई, इसलिए फिसल जाती है बाद में बहुत सोचता हूं पछताता हूं। परन्तु वश में नहीं रख पाता हूँ। तब आचार्य चाणक्य ने कहा-

यदि वाञ्छसि वशीकर्त्तुं जगदेकेन कर्मणा।
परापवा दसस्येभ्यो गांयचरन्ती निवारम ।।

वत्स! यदि एकमात्र काम करके तुम संसार को वश करना चाहते हो तो सुनो। एक काम करो, दूसरों की बुराई रूपी फसल लहलहा रही है और उसमें तुम्हारी वाणी रूपी गाय चरने चली गई है। उस गाय को हांककर सत्यरूपी खूंटे से बांध लो सारा संसार वश में हो जाएगा। संसार को वश में करना हो तो वाणी को वश में करना होगा और वाणी को वश में करना हो तो एक मात्र तरीका है धैर्यपूर्वक विचार करना और छानकर वाणी का प्रयोग करना। यह वेद का सूत्र है जो हमें सुखी रहने का मार्ग दिखलाता है।

वैदिक संस्कृति में व्यवहार की शिक्षा के अन्तर्गत वाणी संयम पर बहुत जोर दिया गया है। हम प्रतिदिन यज्ञ करते हुए '**वाचस्पतिर्वाच नः स्वदतु**' यह प्रार्थना करते हैं। वाचस्पति परमात्मा हमारी वाणी में स्वाद भर दे। हम यह भी प्रार्थना करते हैं- '**प्रब्रवाम शरदः शतम् ।**' हम वाणी से सदैव सद्वचन बोलें। वस्तुतः वाणी संसार में समस्त व्यवहारों का मुख्य आधार है। यह वाणी हमारे लिए कल्याणकारिणी है इसका प्रयोग अपने और जगत् के कल्याण के लिए करके सबको सुखी करने की चेष्टा करनी चाहिए। इतना ही लिखकर मैं अपनी लेखनी को विराम दूंगा। इति ■

खजूर और अंगूर कितने पास-कितने दूर

- देवनारायण भारद्वाज -
'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ.प्र.
चलभाष -०५७१-२७४२०६१

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पन्थी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।

खजूर के फल तो मधुर स्वादिष्ट गुणकारी होते हैं। उनकी लालसा से एक व्यक्ति खजूर के पेड़ पर चढ़ता ही चला गया। बहुत ऊपर पहुंचने के बाद खजूर अब भी उसकी पकड़ से दूर थे, तब उसने नीचे की ओर देखा और दंग रह गया। हाय! मैं इतने ऊपर और धरती कितनी नीचे। अब तो मैं गिर ही पड़ूंगा? ईश्वर! मुझे बचाओ, दया करो। फल नहीं चाहिए, मुझे नीचे उतरने में सफल बनाइए।। चढ़ते समय तो उसने अपने किसी परिजन-पुरजन की झलक नहीं स्वीकार की, क्योंकि उसके खजूर बँट जाते और उसे कम पड़ जाते। पर यदि वे पेड़ के नीचे भी खड़े रहते तो उसे इतना अधिक भय नहीं रहता, किन्तु अब अकेले पड़ जाने पर उसका भय बढ़ता ही जा रहा था। इसीलिए अब उसने परमेश्वर को साझीदार बनाने का निश्चय कर लिया था। खजूर न सही, ईश्वर मुझे बचा लो, मुझे नीचे उतार दो। मैं घर से रुपए लाकर तुम्हारा भोग लगाऊंगा और सबको प्रसाद वितरित कर खिलाऊंगा। प्रभु स्मरण संकल्प से उसका भय कम हुआ और वह पेड़ के आधे भाग तक उतर आया। सोचने लगा बोल दिया तो सोचे हुए रुपयों के आधे भाग का प्रसाद तो चढ़ा ही दूंगा। ज्यों-ज्यों वह नीचे उतरता गया उसके बोले गये प्रसाद की मात्रा कम होती गई। अब जब वह कूद कर एकदम नीचे उतर गया, तब बोला-"**जान बची खजूर भुलाये। उतर बुद्ध नीचे आए, चढ़ गये हम, उतर गए हम। व्यर्थ बुलाये ईश्वर तुम।**"

जो लोग ऊपर ही ऊपर देखते हैं और नीचे की ओर मुड़ कर झांकते नहीं तो उनकी यही दशा होती है कि वे शरीर से नीचे गिरते है तो उन्हें थाम लेती है धरती, और जब वे चरित्रहीनता, अनैतिकता, भ्रष्टाचार, दुराचार के कारण पतित होकर नीचे गिरते हैं तो धरतीमाता भी उन्हें स्थान नहीं देती है और उन्हें अपने कलंकित मुख को छिपाने के लिए हथकड़ी में जकड़कर जाना पड़ता है बन्दीगृह। वेदमाता का कथन है-

विशां च वै स सबन्धूनां चान्नस्य चान्नाद्यस्य
च प्रियं धाम भवति य एवं वेद।। अथर्व १५.८.३।।

मनत्राशय यही है कि मनुष्य होने की विद्वता-योग्यता उसके मात्र स्वपोषण में नहीं। प्रत्युत पहले पर पोषण फिर स्वयं पोषण के व्यवहार से परिलक्षित होती है। इसके लिए वह पुरुषार्थपूर्वक जो अन्न-धन अर्जित करता है, उसे अधिकाधिक स्वादिष्ट ही नहीं स्वास्थ्यवर्धक व्यंञ्जनों का रूप देकर अकेला ही नहीं, अपने बन्धु-बान्धवों के साथ मिलकर उपभोग करता है। इसको परमात्मा का आश्रय तो मिलता ही है सर्वहितकारी होने से संसार में भी प्रतिष्ठित हो जाता है। गांव देहात में रहने वाले श्रमजीवी लोग '**मेरे बीसों नाखूनों की कमाई है।**' कहकर अपने उत्पादन व उपलब्धि पर गर्व करते हैं। वे झोपड़ी में रह लेते हैं, साधारण शाक रोटी खा लेते हैं, किन्तु सायंकाल विश्राम के क्षणों में प्रायः दूरदर्शन कम, रामायण चर्चा व कीर्तन पर प्रसन्न रहते हैं और गहन निद्रा प्राप्त करते व ब्रह्म मुहूर्त में उठकर कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर होते हैं। उनका आत्म सन्तोष निम्नांकित दोहे में उमड़ पड़ता है-

देख परायी चू पड़ी, मत ललचावे जीभ।
रूखा-सूखा खाय के, तू ठण्डा पानी पीव।।

उनको लक्कड़ हजम, पत्थर हजम, जो करते शारीरिक श्रम। इसे आप उनके साथ मत जोड़ देना जो किसी भी रूप में सड़क, पुल व भवन निर्माण कार्य से जुड़े होते, भरपूर वेतन, भत्ता, ग्रहण करते हुए भी लक्कड़-पत्थर- लोहा भी हजम कर जाते हैं, किन्तु उन्हें पचता नहीं, और अनन्ततः बेड़ियों में जकड़ कर मुंह छुपाते हुए पकड़े जाते हैं। एक किसान प्रभातबेला में अपने खेत पर काम करने को निकला। उसकी पत्नी ने मोटे-मोटे आठ टिक्कड (रोटी) प्याज-चटनी सहित उसके प्रातराश एवं मध्यांह्न प्राश के लिए बांध दिये थे। उसके खेतों के समीप एक कुआं व गलियारा था, जहां बैठकर यात्री किंचित विश्राम करके आगे प्रस्थान कर जाते थे, वहीं पर बैठकर योग्य वैद्य जी अपनी थकान मिटा रहे थे, उन्होंने देखा कि किसान ने स्वादपूर्वक चार रोटी खा ली और ऊपर से एक लोटा पानी पी लिया। वैद्य जी ने किसान को परामर्श दिया- जो भोजन के तत्काल बाद भरपूर पानी पीता है वह बीमार होकर अल्प काल में मर जाता है। किसान ने पूछा- वैद्य जी बताइए फिर किस समय पानी पीना चाहिए। वैद्य जी ने कहा -प्यास लगे तो भोजन के बीच में पानी पी सकते हैं। किसान ने शेष बची चारों रोटी खा ली और बोला- अब ठीक है वैद्य जी। उन्होंने हंसते हुए कहा- तुझे कुछ नहीं होगा मित्र- श्रमजीवी, दीर्घजीवी होता है। किंचित चिन्ता मत कर।

सायंकाल को उसी गलियारे से बचपन के दो मित्र जिधर जा रहे थे, उधर से एक सन्त इधर आ रहे थे। मित्रों ने पूछा- महात्मन आगे कोई खतरा तो नहीं है। महात्मा ने बताया- खतरा है, मार्ग में दो नागिन पड़ी हैं, उनसे बचकर निकल जाना अन्यथा वे तुम्हें डस लेगी। यहां पर दोहे का एक शब्द 'चू पड़ी' ने अपना अर्थ बदल लिया। किसी महिला यात्री की एक अंगूठी-एक जंजीर उसके शरीर से चू पड़ी अर्थात् गिर गई थी। मित्रों ने कहा- महात्मा भी कितने मूर्ख होते हैं। यहां नागिन तो कहीं नहीं है, शायद इन आभूषणों को ही महात्मा नागिन बता रहे होंगे। पुराने मित्र परस्पर इस बात पर गुर्राने लगे कौन सोने के जंजीर लेगा और कौन अंगूठी। इसी बंटवारे में दोनों लड़ मरे। चू पड़ी के इसी आशय को आगे बढ़ाते हैं। पहले जो खजूर को ऊपर जाकर तोड़ने के खतरे की चर्चा हुई,

आगे उनकी चर्चा है, जिनको तोड़ने के लिए खजूर की भाँति ऊपर चढ़ना नहीं पड़ता। इनमें से एक है अंगूर-जिसकी लता होती है, इसके फलों को सुगमता से तोड़ लिया जाता है, दूसरा महुआ जो होता तो पूरा वृक्ष है, किन्तु इसके फल पककर मधुर हो जाते हैं और स्वतः ही टपकते रहते हैं। इन्हें तोड़ने के लिए खजूर पर चढ़कर लंगूर नहीं बनना पड़ता है। सभी वृक्ष-वनस्पतियां, मानव प्राणियों की संजीवनी ऊर्जा का आधार व जीवन माधुर्य प्रदाता है, उनका यथोचित उपयोग चाहिए।

मधु वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।। (यजु. १३.२७)

पं. हरिशरण सिद्धान्तालङ्कार ने मनोहारी सार यों प्रस्तुत किया है। जो अपने जीवन में सब क्रियाएं ऋतु के अनुसार करते हैं वही ऋतायन हैं। (**ऋत-Right**) उनकी सब क्रियाएं ठीक स्थान व ठीक समय पर होती हैं। ऋत का अर्थ यज्ञ भी है। इनका जीवन यज्ञिय होता है। ये लोग स्वार्थ से ऊपर उठकर यज्ञमय जीवन वाले होते हैं। '**सर्वभूत हिते रत**' होते हैं। इस (**ऋतायते**) ऋतमय जीवन वाले के लिए (**वाताः**) वायुयें मधुर होकर बहती हैं, हानिकर नहीं होती। (**सिन्धव**) नदियां भी इनके लिए मधुर बनकर (**छरन्ति**)चलती है। नदियों का जल सदा स्वास्थ्य वर्धक होता है। (**नः**) हम ऋत का पालन करने वालों के लिए (**ओषधीः**) औषधियां (**माध्वीः**) माधुर्यवाली (**सन्तु**) हो। यह तो रही वेद की दिशा, किन्तु किसी मान्य हिन्दी कोश को उठाकर देख लीजिए, तो वहां लिखा मिलेगा- माध्वी अर्थात् मद्य, महुए की बनी मदिरा। इसी प्रकार अंगूर के पर्याय द्राक्षा से शारीरिक क्षीणता निवारक द्राक्षासव तो कम बनता है, मदिरा अधिक बनती है, जिसकी सर्व प्रचलित संज्ञा पड़ गई है अंगूर की बेटी।

मदिरा के कारण देश में सर्वत्र हाहाकार मचा हुआ है, जिसका पता आप दूरदर्शन, श्रृंखलाओं से लगा सकते हैं। जहां ग्राम, नगर की नारियां-पुत्री-पुत्रवधुएं हाथों में लाठी-डण्डा लेकर इसके विरोध में सत्याग्रह करती हैं। वे राजनेता भी हैं जो शासनासन से मद्यः पर प्रतिबन्ध लगाते हैं तो विपक्षी प्रतिबन्ध में रोड़े अटकाते हैं। इन्हीं दुर्व्यवस्थाओं के कारण एक मदिरा ही क्या अपमिश्रण से ग्रस्त सभी खाद्य विषैले हो रहे हैं। पापनाशिनी गंगा को धनलोलुप लोगों ने तापशापिनी बना दिया है। अतिथि परिव्राट महात्मा से उपदेश की इच्छा से सम्राट उद्यान में पहुंच गए। अभिवादन के बाद बोले- स्वामिन मुझे कुछ शिक्षा दीजिए। महात्मा ने कहा- ठीक है, शिक्षा मैं नहीं आप स्वयं देंगे।' यदि आप रेगिस्तान में असह्य प्यास के मारे व्याकुल हो उठें और श्रीमान को कोई आधे राज्य के बदले एक लोटा पानी दे तो लोगे कि नहीं? सम्राट बोल पड़े अवश्य ही लेना पड़ेगा।महात्मा ने फिर पूछा- यदि उस पानी को पीकर आपका पेट फूलन लगे और मूत्र रुक जाए, वेदना से आप कराह उठे। आपको स्वस्थ करने के लिए कोई वैद्याचार्य आपके आधे राज्य की मांग करे तो आप क्या करेंगे? स्वामिन ऐसी दशा में शेष बचा आधा राज्य भी दे दूंगा। महात्मा बोले ऐसे राज्य-ऐश्वर्य पर कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए जो एक लोटे पानी और फिर शरीर से उसका विकार दूर करने के लिए बिक जाए। राज्य करना चाहिए किन्तु निरभिमानता के साथ राज्य प्रजा की पितृवत पालना के लिए करना चाहिए। कवि ने यही सीख दी है।

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी बिना न ऊबरे मोती-मानुष-चून।। ■

पृष्ठ १७ का शेष भाग

...आज हमारी असली शादी हुई है

जब साण्डर्स को गोलियां मारी गई थी तब दुर्गा भाभी कमरे में संस्कृत का अध्ययन कर रही थी। अंग्रेजी सिपाहियों की नजर से क्रान्तिकारियों को लाहौर से सुरक्षित निकाल ले जाना उस समय एक टेढ़ी खीर थी। रात के ग्यारह बजे अचानक सुखदेव ने दरवाजा खटखटाया और जब पूरी बात भाभीजी को बताई तो वह जरा सी भी नहीं घबराई, बल्कि तुरन्त सुखदेव को पांच सौ रुपए दिए और यही नहीं एक योजना के तहत उस रुढ़िग्रस्त युग में भी भगतसिंह की पत्नी बनकर तथा अढाई वर्ष के अपने बेटे शचीन्द्र को गोद में लेकर अगले दिन ही प्रातःकाल की रेल से कलकत्ता के लिए रवाना हो गई। उस समय इस विरांगना की आयु मात्र बाईस वर्ष की थी। भगतसिंह अंग्रेजी पोशाक में हेड लगाए हुए थे तथा सुखदेव इस तथाकथित दम्पत्ति के नौकर के रूप में चल रहे थे। रेल के उसी डिब्बे में रामनामी चद्दर ओढ़े हुए चन्द्रशेखर आजाद भी पहले से ही मौजूद थे। चन्द्रशेखर आजाद तो पूर्व योजना के अनुसार बड़ी चतुराई से मथुरा में उतर गए, मगर दुर्गा भाभी ने समूचे अंग्रेजी प्रशासन की आंखों में धूल झोंककर क्रान्तिकारियों को कलकत्ता सुरक्षित पहुंचा दिया। इस साहसिक कार्य से भाभीजी का आत्मविश्वास बहुत अधिक बढ़ गया तथा वह क्रान्तिकारियों के हृदय में बस गई। कलकत्ता स्टेशन पर उनके पति वोहरा जी इतने अधिक प्रसन्न हुए कि उन्होंने अपनी पत्नी की पीठ ठोंकते हुए कहा कि- '**आज हमारी असली शादी हुई है।**'

मेरा इस लेख के लिखने का अभिप्राय यही है कि आज के नवयुवक पश्चिमी सभ्यता की ओर बड़ी तेजी से भाग रहे हैं। इनको केवल दो-चार क्रान्तिकारियों जैसे सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, राजगुरु, सुखदेव आदि के नाम से याद हैं। बाकी इनसे कुछ कम या अधिक सैकड़ों नहीं सहस्त्रों क्रान्तिकारी भाइयों और बहनों ने अपना जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित किया है, उनको भी हमारे नवयुवक याद करें। इस भावना से यह इतिहास की एक प्रमुख घटना लिखी है, जिसको पढ़कर नवयुवकों में बाकी और क्रान्तिकारियों की जीवनी पढ़ने की रुचि बढ़े। आशा है कि मेरा उद्देश्य आवश्य सफल होगा।

मुझे प्रसन्नता है कि आर्य समाजियों ने जहां क्रान्तिकारी कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लिया, वहीं आर्य समाज के मन्दिर भी क्रान्तिकारियों के आश्रय स्थल रहे हैं। इसी श्रृंखला में मुझे गर्व है कि अमर शहीद भगतसिंह इसी यात्रा क दौरान आर्य समाज कलकत्ता में भी कुछ दिन ठहरे थे और अपनी यादगार के लिए एक लोटा तथा एक थाली भी आर्य समाज कलकत्ता को दे गए थे, जो अभी तक सुरक्षित है। मैंने इस लेख को लिखने में '**क्रान्ति के अग्रदूत**' पुस्तक जो आदरणीय आचार्य भगवान देव चैतन्य द्वारा लिखित है उससे काफी सहयोग लिया है इसलिए चैतन्य जी का भी मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं। ■

वेदोक्त ज्योतिष एवं वेदार्थ -पुस्तक समीक्षा

- आचार्य सोमदेव आर्य -
ऋषि उद्यान, अजमेर (राज.)
चलभाष - ८६१९६३५३०७

पुस्तक- वेदोक्त ज्योतिष एवं वेदार्थ पृष्ठ- ३३४

लेखक- स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

प्रकाशक- डॉ. राजेन्द्र विद्यालंङ्कार

सचिव- सत्यप्रकाशन न्यास, १४२५ सै. १३ अर्यन इस्टेट कुरुक्षेत्र

वेद समस्त सत्य विद्याओं से पूरित है। वेद में मनुष्य के व्यवहार व परमार्थ विषयक सब ज्ञान है। भौतिक व अध्यात्मिक ज्ञान का भण्डार वेद ही है। वेद को जानने के लिए वेद के अंग- उपांगों को जानना आवश्यक है। अंगों में व्याकरण आदि छह अंग हैं, इन छह अंगों में ज्योतिष अपना विशेष महत्व रखता है। महर्षि दयानन्द ने आजकल जो फलित ज्योतिष चल रहा है उसका खण्डन किया है और जो अंक गणित, भूगोल, खगोल आदि की विचार से युक्त ज्योतिष है को पढ़ने, जानने के लिए कहा है। महर्षि लिखते हैं- **''दो वर्ष में ज्योतिशास्त्र, सूर्य सिद्धान्तादि जिसमें बीज गणित, अंक, भूगोल, खगोल, भूगर्भविद्या है इसको यथावत् सीखें। तत्पश्चात् सब प्रकार की हस्तक्रिया, यन्त्र कलादि को सीखें, परन्तु जितने ग्रह-नक्षत्र, जन्मपत्र, राशि, मुहूर्त आदि के विधायक ग्रन्थ हैं, उनको झूठ समझ के कभी न पढ़े और न पढ़ावें।''**

आकाशगत सूर्यमण्डल में सम्बन्ध रखने वाले नक्षत्र विज्ञान को ज्योतिष कहते हैं, यहीं ज्योतिषशास्त्र, ज्योतिर्विज्ञान या नक्षत्रविज्ञान वेद का छठा अंग है और गणित पर आधारित होने से वह सत्यविद्याओं के अन्तर्गत है। ज्योतिष का यथार्थ रूप सब लोग जान पावें इसके लिए आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान, स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती (पूर्व नाम आचार्य वेदव्रत मीमांसक) ने '**वेदोक्त ज्योतिष एवं वेदार्थ**' नामक पुस्तक लिखकर जनमानस को उपकृत किया है। यथार्थ में ज्योतिष क्या है, ज्योतिष का विषय क्या है, ज्योतिष शास्त्र वेदार्थ में कैसे उपयोगी है आदि-आदि बातें पुस्तक में विस्तार से वर्णित की हैं और **आज जो कि ज्योतिष के नाम पर ठग विद्या प्रचलित है उसका वैज्ञानिक व तर्कपूर्वक निषेध इस पुस्तक में है।**

यह पुस्तक पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध दो भागों में विभक्त ४२ समुल्लासों से युक्त ४२ विषयों को लिए हुए है। लेखक ने पुस्तक के विषय में इस प्रकार लिखा -१ प्रस्तुत ग्रन्थ में वेदोक्त ज्योतिर्विद्या से वेदार्थबोध में सहायता का विषय दिग्दर्शन मात्र है।

२. इस ग्रन्थ में ज्योतिष के स्वरूप का सप्रमाण प्रतिपादन किया है। उसको जानने से होने वाले प्रयोजनों को न जानने से होने वाले अनर्थों को सप्रमाण लिखा है।

३. वेदों में जगत् की उत्पत्ति स्थिति उनका विस्तार नक्षत्रीय, नक्षत्र, गृह, उपग्रह, धूमकेतू, उत्तक एवं प्रलय का वैज्ञानिक प्रतिपादन है।

४. वेदोक्त जगत् का स्वरूप अनन्त एवं गोल है। नक्षत्रीय, नक्षत्र, ग्रह, उपग्रह, जीव, परमाणु, सत्व, रजस् , तमस, गोल एवं भ्रमणशील है।

५. वेदों में विद्यामन आकर्षण विद्या त्रैकालिक है अतः सत्य है, क्योंकि वैज्ञानिक है। उसका उसमें उल्लेख है। वह न्यूटन के द्वारा प्रतिपादित आकर्षण सिद्धान्त से भिन्न है, जब कि न्यूटन का सिद्धान्त अब परिक्षण की कोटि में आ गया है।

६. वेदों में सूर्य को सौर परिवार (ब्रह्माण्ड) के मध्य में बतलाया है न कि पृथिवी के।

७. वेदों में ऋतुओं की संख्या १,२,३,५,६,७ तथा १२ लिखी है।

८. सौर कालगणना, चान्द्र कालगणना, सावन कालगणना आदि कई कालगणनाओं का उल्लेख है।

९. नक्षत्रों का नाम व उनकी संख्या नहीं है। वारों का उल्लेख नहीं है।

१०. कल्पित ज्योतिष (जिस को आजकल फलित ज्योतिष कहा जाता है) [विदों में] नहीं है।

इस पुस्तक का प्रकाशन श्री डॉ. राजेन्द्र विद्यालंङ्कार ने करवाया है जो कि एक पुण्य का कार्य है। सुन्दर आवरण, दृढ़ जिल्द, छपाई व कागज से युक्त पुस्तक को प्राप्त कर पाठक अपना ज्ञानवर्धन करेंगे। ■

वीर बनो

- नरेंद्र आहूजा 'विवेक' -
६०२ जी.एच. ५३, सेक्टर-२०
पंचकूला, हरियाणा
चलभाष- ९४६७६०८६८६

मरणधर्मा मनुष्य को जीवन में भय पर विजय पाने के लिए और विशेष रूप से जीवन के सबसे बड़े भय अपनी मृत्यु पर विजय पाने के लिए वीर बनना पड़ता है। और यदि मनुष्य इन नाना प्रकार के डर पर विजय पाकर निर्भय होकर जीना चाहता है तो उसे वीरोचित गुण धारण करने पड़ते हैं। जीवन में पल-पल हर पल अनजाने भय से मरने से कहीं अच्छा है कि वीर बनकर उस भय को मार दें जो हमें मार रहा है। **वैसे भी मुर्दा को फूंकने से कही ज्यादा जरूरी मुर्दों में प्राण फूंकने का काम है। वेद का ज्ञान सही मायने में मुर्दा जाति में प्राण फूंकने का काम करता है, इसीलिए देव दयानन्द ने वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना आर्यों का परम धर्म बताया है।**

सामवेद के मन्त्र में मरणधर्मा मनुष्य को मृत्यु पर विजय पाकर

निर्भय होने और वीरोचित गुण धारण करके अलौकिक सुख शान्ति पाने का सुन्दर सन्देश दिया गया है।

यदि वीरो अनुष्यात् अग्निं इन्धीत मर्त्यः।
आजुहवत हव्यम् आनुषक शर्म भक्षीत दैव्यम् ।।

इसका अर्थ है- हे मरणधर्मा मनुष्य मृत्यु पर विजय पाने के लिए यदि वीर होना चाहे तो अग्निस्वरूप प्रकाशमान परमेश्वर को अग्न्याध्यान करते हुए अपने अन्दर प्रदीप्त करे और फिर श्रेष्ठ कर्मों की हवि निरन्तर समर्पित करते हुए प्राप्त दैवी सम्पदाओं दिव्यताओं को प्राप्त कर आलौकिक सुख शान्ति का सेवन करें।

अब इस मन्त्र की विस्तार से चर्चा करते हैं। मर्त्यः अर्थात् मनुष्य मरणधर्मा है। मनुष्य का जीवन कबीर जी के शब्दों में '**पानी केरा बुदबुदा जस मानुष की जात**' अर्थात् मनुष्य का जीवन पानी के बुलबुले या पानी पर खिंची लकीर की तरह जो कि केवल एक सीमित आयु के लिए ही मिलता है। वेद भगवान ने भी '**मृत्युरीशे**' अर्थात् मृत्यु की देवी हम सब पर शासन करती है कहकर मनुष्य को मरणधर्मा बतलाया तो वहीं '**जातस्य ही ध्रुवो मृत्युः**' कहकर योगेश्वर कृष्ण ने गीता में जिसका भी जन्म हुआ उसकी मृत्यु अवश्यंभावी कहा।

अब इस मन्त्र में '**यदि वीरो अनुष्यात्** ' अर्थात् मरणधर्मा मनुष्य को यदि वह मृत्यु पर विजय पाकर वीर बनना चाहे तो कहकर कुछ आवश्यक गुण धारण करने का संदेश दिया। इन गुणों की चर्चा करने से पूर्व इस मन्त्र के प्रारम्भ में आए '**यदि**' शब्द के महत्व को जान लेना हमारे लिए आवश्यक हो जाता है। '**यदि**' शब्द के प्रयोग से दो बातें स्पष्ट होती है। प्रथम यह शब्द हम मनुष्यों में कर्मों की स्वतन्त्रता का प्रतीक है अर्थात् पाणिनि अष्टध्यायी के सूक्त '**स्वतंत्रकर्ता**' के अनुसार हम मनुष्य किसी भी कार्य को करने ना करने व अन्य किसी भी प्रकार से करने के लिए स्वतन्त्र हैं। द्वितीय '**यदि**' शब्द यह भी संदेश देता है कि कर्म की स्वतन्त्रता के उपरान्त हम जीवन में जो भी बनना चाहें उसके लिए हमारे अन्दर एक उत्कट इच्छा शक्ति अवश्य होनी चाहिए। यदि सरल शब्दों में इसे समझना हो तो हम कह सकते हैं कि **हम मरणधर्मा मनुष्यों को अपने जीवन में ही ऐसे सद्कर्म कर लेने चाहिए कि मृत्यु के उपरांत हमारी आत्मा की शान्ति व सद्गति के लिए किसी को प्रार्थना करने की आवश्यकता ना पड़े, क्योंकि दूसरों द्वारा की गई प्रार्थना हमारे किसी काम नहीं आने वाली केवल हमारे अपने कर्म ही मृत्यु उपरांत न्यायकर्ता ईश्वर के समक्ष स्वयं उपस्थित होकर गवाही देते हैं और हमारे कर्मों की गवाही पर ही हमारा प्रारब्ध, नियति व किस्मत ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के अन्तर्गत नियत होता है।** हमें अपने मन की भूमि पर कभी ऐसे बीज नहीं बोने चाहिए कि कल उनकी फसल काटते समय हमें रोना पड़े। 'यदि' के उपरान्त '**वीरो**' शब्द आया है जिसका अर्थ है वीरोचित गुण जिसके लिए शारीरिक, चारित्रिक और आत्मिक बल तीनों को प्राप्त करना आवश्यक है। इसके लिए एक वीर मनुष्य को सद्बुद्धि, श्रद्धा अर्थात् सत्य के प्रति आस्था, संकल्पशक्ति, धैर्य, उत्साह, साहस, कर्मठता, कार्यकुशता, दक्षता इत्यादि अनेक गुणों को धारण करना पड़ता है।

अब यदि हमने मृत्यु पर विजय पाने का दृढ़ संकल्प कर लिया तो मन्त्र कहता है कि "**अग्निं इन्धीत**" अर्थाते हे मनुष्य तू अपने अन्दर अग्निस्वरूप प्रकाशपुंज परमेश्वर को प्रदीप्त कर। इसके लिए हमें समझना होगा कि हम मनुष्यों का आत्म त्य का आग्रही है और वह परमपिता परमेश्वर अति सूक्ष्म रूप में हम सभी जीवात्माओं के अन्दर '**ईश्वर सर्वभूतानां हृदयेशे तिष्ठति**' विद्यमान है। वह अग्निस्वरूप परमेश्वर सत्यस्वरूप है और जब हम अपने भीतर सत्य ज्ञान की अग्नि को उद्बुध कर लेंगे तो हम भी उस प्रकाश स्वरूप परमेश्वर के प्रकाश से प्रकाशित हो जाएंगे और फिर जैसे एक जलता हुआ दीपक सैकड़ों हजारों बुझे हुए दीपकों को जलाकर प्रकाशित करने में सक्षम हो जाता है। वैसे भी हम सत्यस्वरूप सर्वज्ञ ईश्वर के ज्ञान को पाकर बांटते हुए पूरी मानवता को 'तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतं गमय' अंधकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर और मृत्यु से अमृत की ओर ले जाने में सक्षम हो पाएंगे, यहां यह भी प्रश्न उठता है कि इस सत्यज्ञान के प्रकाश की अग्नि को कौन धारण कर सकता है तो इसका उत्तर हमें अग्न्याधान मन्त्र के अर्थ से स्पष्ट होता है कि जिसमें द्यौ जैसी विशलता और महानता, पृथ्वी जैसा धैर्य और सहनशीलता हो वही अपने अन्दर सत्यज्ञान के प्रकाश की अग्नि को प्रदीप्त करने का सामर्थ्य रखता है।

अग्नि के उद्बुध हो जाने के उपरांत सामवेद के इस मन्त्र में वेद भगवान संदेश देते हैं '**आजुहवत् हव्यम् आनुषक्**' अर्थात् - इस सत्यज्ञान की उद्बुध अग्नि में अपने जीवन के प्रत्येक श्वास प्रतिश्वास के साथ सद्कर्मों की आहुति प्रदान करते हुए जीवन को यज्ञमय बना लें। सरल शब्दों में हम कह सकते हैं कि हमारे जीवन का प्रत्येक कार्य निष्काम भाव से किया गया परोपकार का यज्ञीय कार्य हो जिसके फलस्वरूप ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में हमें प्राप्त दैवीय सम्पदाओं, दिव्यताओं से आलोकित सुख और शान्ति प्राप्त हो और इन गुणों से सज्जित हम वीर बन कर मृत्यु पर विजय प्राप्त करें और जीवन के लक्ष्य अर्थात् ईश्वर की अनुभूति को पाकर मोक्ष के आनन्द को भोगें। ■

१३४वां ऋषि बलिदान समारोह

ऋषि मेला

दिनांक २७ से २९ अक्टूबर २०१७ तक

परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्वावधान में १३४ वां ऋषि बलिदान समारोह प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी दिनांक २७ से २९ अक्टूबर तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर ऋग्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहूति दिनांक २९ को प्रात:काल होगी यज्ञ के ब्रह्म श्री सत्यानन्द जी वेदवागीश होंगे। इस अवसर पर वेदोपदेशक भजन के अतिरिक्त वेदगोष्ठी तथा चतुर्वेद कंठस्थीकरण वेदकरण वेद प्रतियोगिता भी आयोजित की जावेगी। विस्तृत जानकारी हेतु सभा की पत्रिका परोपकारी देखें अथवा ऋषि उद्यान में ०१४५-२६२२१२७० पर सम्पर्क करें। **निवेदकः गजानन्द आर्य** (संरक्षक), **डॉ. सुरेन्द्र कुमार** (कार्यकारी प्रधान), **ओम मुनि** (मन्त्री)

पशुन् पाहि- पशुओं की रक्षा करो (यजुर्वेद १/१), **सुखम्मेषाय मेष्यै- भेड़ बकरियों को सुखी करो** (यजुर्वेद ३/५९)

सुखमय जीवन का आधार शाकाहार- अहिंसा परमोधर्मः

- स्वामी शान्तानन्द सरस्वती -
(एम.ए. दर्शनाचार्य)
सन्त ओधवराम वैदिक गुरुकुल,
भवानीपुर अबडासा कच्छ (गुजरात)

मांसाहार क्यों नहीं?, इसलिए कि-

१. मांसाहार करना ईश्वर आज्ञा के विरुद्ध है तथा वेद, दर्शन आदि ग्रन्थों में इसका निषेध किया गया है।

२. मांसाहार करना महापाप है, घोर अधर्म है।

३. मांसाहार से निर्दयता, क्रूरता, बर्बरता आदि दोष उत्पन्न होते हैं.

४. मांसाहार से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं।

५. मांसाहार तामसिक आहार है इससे आत्मिक व मानसिक शक्ति का नाश होता है।

६. मांसाहार से मन में काम-क्रोध, विषय भोग आदि की भावना बढ़ती है।

७. मांसाहार के कारण मदिरापान, बलात्कार, भ्रष्टाचार आदि दोषों में वृद्धि होती है।

८. मांसाहार के कारण निर्दोष प्राणियों की हत्या होती है।

९. मांसाहार के कारण प्रकृति का संतुलन बिगड़ता है।

१०. मांस एक घृणित पदार्थ है, उसको आग पर रखने मात्र से अत्यन्त दुर्गन्ध आती है जो हमारे स्वभाव के विरुद्ध है।

११. मांसाहारी व्यक्ति को मरने के बाद मनुष्य जन्म नहीं मिलता है, परिणाम स्वरूप अगले जन्म में शेर, चीता, कुत्ता, बिल्ली आदि के शरीर में जाना पड़ सकता है।

सोच-सोच कर सोचो

अण्डे का सेवन मांसाहार है, शाकाहार नहीं है। मुर्गी और मुर्गा के अशुद्ध पदार्थों के मिलने से अण्डा बनता है, क्या ऐसे अशुद्ध, अभक्ष्य पदार्थ को खाना पवित्रता और बुद्धिमत्ता है।

मांसाहार के विषय में दृष्टिकोण

जो दूसरों के मांस से अपना मांस बढ़ाना चाहता है, वह जहां कहीं भी जन्म लेता है चैन से नहीं रह पाता। (महाभारत)

- जो मांस खाते हैं और शराब पीते हैं उन पुरुष रूपी पशुओं के बोझ से पृथ्वी दुःख पाती है। (चाणक्य)

जरा विचार करें

१. मनुष्य का पाचन तन्त्र शाकाहार हेतु जितना अनुकूल है उतना मांसाहार के लिए नहीं है।

२. मांस के पाचन में बहुत समय लगता है किन्तु साग-सब्जी के पाचन में उतना समय नहीं लगता है।

३. मनुष्य के दांत शाकाहारी भोजन के अनुरूप हैं मांसाहारी भोजन के अनुरूप नहीं है।

४. मांसाहारी जीवों के दांत व नाखुन नुकीले तथा घातक होते हैं, किन्तु मनुष्यों के दांत ऐसे नहीं होते हैं।

५. मांसाहारी जीव यथा कुत्ता, बिल्ली, शेर आदि जीभ से पानी पीते हैं मनुष्य वैसे नहीं पीते हैं।

६. मांसाहारी प्राणी जन्म लेने के बाद अनेक दिनों बाद आंख खोलते हैं किन्तु मनुष्य वैसे नहीं।

७. हमारे ऋषि, मुनि, संत, महात्मा, साग-सब्जी, फल-मूल खाते हैं थे, मांस नहीं खाते थे।

८. योगीराज श्री कृष्णचन्द्र, श्री रामचन्द्र, राजा हरिशचन्द्र आदि शाकाहारी थे, मांसाहारी नहीं थे।

९. वीर हनुमान, महाबली भीम, स्वामी दयानन्द, प्रो. राममूर्ति आदि शाकाहारी होते हुए भी जितने बलवान थे, उतने मांसाहारी नहीं।

१०. व्यक्ति जीवन भर केवल शाकाहार से रह सकता है किन्तु केवल मांसाहार से नहीं रह सकता है।

११. मांसाहारी जीव थोड़े से परिश्रम से हांफने लगते हैं किन्तु शाकाहारी ऐसे नहीं।

हे मनुष्य! थोड़ा मनन कर

१. मछली गंदगी को खाकर जल की सफाई करती है।

२. मुर्गी गंदगी खाकर गली की सफाई करती है।

३. सुअर गंदगी खाकर नाली व शौच की सफाई करता है, किन्तु **आज का मनुष्य गंदगी खाने वाले जीवों को खाकर किसकी**

सफाई करना चाहता है?

निर्णय करें देव बनना है कि दानव

हे मनुष्य! तुम्हारी दया की भावना कहां चली गई है? क्या तुम्हें कसाई के हाथों कटते हुए मूक बकरियों, मुर्गियों की वेदनामय चीख, करुण क्रन्दन, असहाय पुकार सुनाई नहीं देती? गीली आंखों से प्राणरक्षा की भीख मांगते इन अबोल जीवों पर दया नहीं आती? मानो मुर्गी कह रही है मुझे मत मारो, मुझे छोड़ दो, मेरी भी जीने की इच्छा है, मेरे छोटे-छोटे बच्चे मेरे साथ घूमते हैं। बकरी कह रही है- हे मनुष्यों! मुझे भी जीने दो, जैसे तुम्हें अपने बच्चों से प्रेम है वैसे मुझे भी अपने बच्चों से प्रेम है। प्रायः सभी प्राणी मरने से डरते हैं, हमें भी मरने से डर लगता है। कोई भी शरीरधारी जीव मरना नहीं चाहता है, हम भी नहीं मरना चाहते हैं। हम निरीह पशु-पक्षियों को अपने स्वार्थ के लिए मारना या मरे हुए जीवों को अपने स्वाद के लिए खाना निर्दयता की चरम सीमा है, मनुष्यों की स्वतन्त्रता का दुरुपयोग है, जघन्य अपराध है दानवता का व्यवहार है।

अतः हम पर दया करें, अपने जीवन में मोड़ लायें तथा जीवहत्या, मांसाहार आदि का सर्वथा त्याग कर दे और जीवन को दया, धर्म, सत्य, न्याय, सेवा, परोपकार आदि दिव्य गुणों से सुशोभित कर देव बने तथा स्वयं सुख से जीयें और हम दया के पात्र जीवों को भी सुख से जीने दें।

आण्डा मा- अण्डों (गर्भों) को नष्ट मत करो।

(ऋग्वेद १/७/१९/८)

मा हिंसीः- हिंसा मत करो (यजुर्वेद १३/४९)

जब मनुष्य किसी को जीवन दे नहीं सकता तो, उसे जीवन लेने का क्या अधिकार है।

मांसाहार के विषय में कुछ विख्यात डॉक्टरों की सम्मतियां

१. जिन जातियों में जितना अधिक मांस खाया जाता है उनमें उतनी अधिक कैंसर की बीमारी होती है। (डॉ. रसेल)

२. मांस से यूरिक एसिड व गैस बहुत बनती है इससे कई रोग उत्पन्न होते हैं। (डॉ. वाचमेन)

३. अण्डों में केल्सीयम की कमी और कार्बोहाइड्रेट्स का अभाव होता है इस कारण ये बड़ी आंत में जाकर सड़ांध और बदबू पैदा करते हैं। (डॉ. ई.वी. मैक कोलम)

४. अण्डे अनेक मनुष्यों की आंतड़ियों में पाये जाने वाले कासन व कोलाई कीटाणुओं को विषैला बना देते हैं। जिसके कारण भयानक रोग पैदा होते हैं। (डॉ. जे.ई. मैकडोनाल्ड)

विश्व स्वास्थ्य संगठन (w.h.o.) के वर्ल्ड हैल्थ मेग्जीन, अनेक देशी विदेशी डॉक्टर और नोबल पुरस्कार विजेता डॉ. ब्राउन आदि का यही निर्णय है कि मांसाहार से हृदयरोग, कैन्सर, टीबी, अपेन्डिक्स, मोटापा, ब्लड प्रेशर आदि अनेक रोग होते हैं अतः स्वस्थ, सुन्दर शरीर तथा दीर्घायु की प्राप्ति हेतु शाकाहारी भोजन, गाय का दूध, घी, फल, सलाद आदि का सेवन करें और मांस का त्याग करें।

बलि प्रथा वेद विरुद्ध है

देवी-देवता के सामने जीव हत्या करने (बलि चढ़ाने) से देवी-देवता प्रसन्न होते हैं यह मान्यता ईश्वर तथा वेद आदि शास्त्रों के विरुद्ध है। यह स्वार्थी, मांसाहारी, धर्म-ज्ञान से रहित लोगों द्वारा चलाई गई गलत परम्परा है। इससे मांसाहार को बढ़ावा मिलता है। अतः जीव हत्या बन्द करके इन्हें खिला-पिला कर इनका संरक्षण करें।

भ्रान्ति-निवारण- मांसाहार करते रहने पर और इस जीवन में रोगों से बच जाने पर यह मत समझे कि मांसाहार उचित है, क्योंकि ईश्वर, धर्म, व प्राकृतिक दृष्टि से मनुष्य के लिए मांसाहार सर्वदा-सर्वथा अनुचित है, अमानवीय है। मांसाहारी लोग कभी भी ईश्वर के भयानक दण्ड से बच नहीं सकते हैं। मांसाहार करने पर एक दिन ईश्वर इसे दारुण दुःख भोगना ही पड़ेगा अतः समय रहते सावधान हो जाएं तथा अपने कल्याण के साथ-साथ परिवार, समाज व राष्ट्र के कल्याण के लिए मांसाहार का त्याग कर व शाकाहार को अपना कर इस लोक और परलोक में सुख शान्ति की प्राप्ति करें।

मांसाहार विषयक आठ प्रकार के घातक

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी।

संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकः।। मनुस्मृति ५/१२

अर्थ- जीव हत्या का समर्थन करने वाला, मारने वाला, मांस खरीदने वाला, बेचने वाला, पकाने वाला, परोसने वाला तथा खाने वाला ये आठ प्रकार के घातक बताए हैं। अतः ये सभी पाप के भागी बनते हैं।

पशु-पक्षियों की करुण पुकार

धार्मिक बनें, दयालु बने, पशु-पक्षियों पर दया सब करें।
पशु-पक्षियों की करुण पुकार, दया करो हम हैं लाचार।
हम भी धरती में जीना चाहते हैं, हमको भी है जीने का अधिकार।।

शाकाहार से सुस्वास्थ्य मिलता, बन्द करो सब मांसाहार।
दूध, घी, फल-मिठाई खाओ, बन्द करो हमपे अत्याचार।।

जैसे तुम्हारे अपने बच्चे हैं, हम भी किसी के हैं संतान।
तुम्हारे बच्चे दीर्घायु बनें, हम को भी दो जीवन का दान।।

मांसाहार से पाप ही बढ़ता, धर्म का मिटती नामो निशान।
मांसाहार से हिंसा बढ़ती, शाकाहार ही मानव की पहचान।।

मांसाहारी मनुष्य मरने पर, बनता नहीं फिर से इन्सान।
ईश्वर से घोर कष्ट पाता, बनकर के कीट पतंग नादान।।

जीव हत्या धर्म नहीं है, धर्म होता इससे बदनाम।
पशु-पक्षियों की सेवा करके, कर लो कुछ नेकी के काम।। ■

क्या हनुमान ने सूर्य को निगल लिया था?

- डॉ. गंगाशरण आर्य -
ग्राम- शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली
चलभाष - ९८७१६४४१९५

कथा- जब लंका में युद्ध के समय लक्ष्मण को शक्तिबाण लगा था तो वे मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े थे। उस समय राम बहुत शोकातुर थे और विलाप कर रहे थे। लंका के राज्यवैद्य सुषैण से लक्ष्मण का उपचार चल रहा था कि सुषैण ने हनुमान को बूटी लाने को कहा और कहा कि सूर्योदय से पहले यदि संजीवनी बूटी आ जाएगी तो लक्ष्मण के प्राण बच जाएंगे, अन्यथा नहीं बचेंगे। हनुमान जी तीव्रगति से द्रोणगिरी पर्वत पर गए, संजीवनी बूटी खोजने में विलम्ब हो गया। इतने में सूर्य उदय हो गया, बतलाते हैं कि हनुमान जी ने उछल कर सूर्य को मुंह में दबा लिया और संजीवनी बूटी का पहाड़ लेकर रामदल में चले गए।

समीक्षा- वेदादि सद्ग्रन्थों एवं वैज्ञानिक खोज के आधार पर यह निर्विवाद सिद्ध हो गया है कि सूर्य अपनी कीली (धुरी) पर भ्रमण करता है जो पृथ्वी से कई लाख गुणा बड़ा है। पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है। सूर्य और पृथ्वी के बीच चुम्बकीय आकर्षण की बहुत मोटी और दृढ़ (मजबूत) पर्त(भीत+ दीवार) है जिससे सभी नक्षत्रादि आकर्षण से अपनी-अपनी परिधि में घूम रहे हैं। इस चुम्बकीय आकर्षण की मोटी पर्त से नीचे पृथ्वी का आकर्षण (खिंचाव) है और ऊपर सूर्य का खिंचाव है जैसे आप गेंद ऊपर फेंकते हैं तो थोड़ी देर में वह पृथ्वी पर गिर जाती है। आम का फल पृथ्वी की ओर आता है। इसका कारण यह है कि पृथ्वी का आकर्षण अपनी ओर खींचता है। सूर्य पृथ्वी से बहुत बड़ा है और तेज पुंज है तो आइये और विचारिये।

विचार करो- माना कि हनुमान ने सूर्य को निगल लिया था। हनुमान ने जिस समय सूर्य गाल में दबाया होगा, उस समय सूर्य का आकर्षण समाप्त हो गया होगा, पृथ्वीमय हनुमान तथा पृथ्वी पर रहने वालों के साथ पृथिवी कहां गई होगी? उस समय न राम बचे होंगे न उनका दल बचा होगा न सुषैण बचे होंगे। न अयोध्या न लंका कुछ भी शेष नहीं होंगे। क्योंकि जब सूर्य और पृथ्वी का आपसी खिंचाव समाप्त हो गया तो पृथ्वी कैसे ठहर सकती है, अर्थात् नहीं ठहर सकती और विचार कीजिए सूर्य के पास तभी पहुंचेंगे जब पृथ्वी और सूर्य के मध्य जो चुम्बकीय खिंचाव की मोटी पर्त को तोड़ डालोगे। उस मोटी पर्त को हनुमान व राम कोई नहीं तोड़ पाएगा। माना कि हनुमान उस चुम्बकीय पर्त को तोड़ ऊपर निकल गए तो वे सूर्य के आकर्षण से ऊपर चले जाएंगे और पृथ्वी पर लौटकर नहीं आ पाएंगे और आगे चलकर भस्म हो जाएंगे या चू-चू कर गिर पड़ेंगे।

सूर्य पृथ्वी से लगभग १३ लाख गुणा बड़ा है और हनुमान का एक मानवीय शरीर छोटा सा है तो विचारिये कि हनुमान ने सूर्य को गाल में कैसे दबा लिया?

वास्तविकता क्या है? सही बात यह है कि सब अज्ञान से ग्रसित भ्रमित बुद्धि का परिणाम है। वास्तविकता यह है कि हनुमान को वानर या कपि कहते हैं और कपि नाम बादल का भी है, जैसे- वृषा कपि अर्थात् वृषा- सूर्य-कपि-बादल। सूर्य और मेघों (बादलों) का चोली दामन का साथ है। बादल बनने में सूर्य की मुख्य भूमिका है। प्रातःकाल की गहन बेला में पूर्व दिशा में जो लालिमा दिखाई देती है, जिसे साहित्यकार उषा के नाम से पुकारते हैं, वह बादलों में सूर्य की प्रथम किरण की लालिमा है- अर्थात् उस समय सूर्य के चारों और कपि बादल घिरे होते हैं। इस घिराव को काव्य की भाषा में सूर्य का निगलना कहते हैं। दूसरे शब्दों में सूर्य सम तेजस्वी होने को काव्य में सूर्य निगलना कह दिया जाता है।

पौराणिक बन्धुओं ने बिना सोचे समझे अज्ञानतावश श्री हनुमानजी के सिर सेहरा बांध दिया है और वास्तविकता के छिपाकर जनता को भ्रमित कर दिया है। यह महापाप है। उपरोक्त विवरण से ज्ञात हो गया है कि कपि रूपी बादल ने सूर्य को ढांप लिया था वहीं उसका निगलना है। ब्रह्मचारी कृष्णदत्त नामक व्यक्ति ने अपने प्रवचन में रामायण कालीन इतिहास का वर्णन करते हुए इस बात का रहस्योद्घाटन इस प्रकार किया है- हनुमान जी सूर्य विज्ञान के प्रकाण्ड पण्डित थे और सूर्य विज्ञान पर हनुमान जी द्वारा लिखित बृहत् ग्रन्थ भी था जो जैन काल में वैदिक पुस्तकालयों में आग लगा देने के कारण जला दिया गया था। क्योंकि सूर्य विज्ञान को आत्मसात किया था इसी को काव्यात्मक भाषा में ऐसा कह दिया जाता है कि उन्होंने सूर्य को निगल लिया। जैसे आजकल कोई विद्यार्थी किसी विषय में कहे कि इसने अमुख पुस्तक घोट के पी रखी है। इसका मतलब ये नहीं है कि उसने पुस्तक को पानी में घोटा और रगड़ा और तरल बनाकर पी गया। इससे तो यही अर्थ लिया जाता है कि उस विद्यार्थी को उस पुस्तक के विषय में पूरी जानकारी है।

जो हनुमान पृथ्वी से लगभग १३ लाख बड़े सूर्य को मुंह में निगल सकता है तो राम के लिए रावण आदि को मुंह में निगलना उनके लिए क्या कोई बड़ी बात थी? सारा झंझट ही मिट जाता।

प्रश्न- हनुमान का नाम हनुमान और बजरंगी क्यों पड़ा?

उत्तर- हनु ठोड़ी को कहते हैं और मान सुन्दर को कहते हैं, चूंकि हनुमान की ठोडी बहुत सुन्दर थी इसलिए उनका नाम हनुमान पड़ा है। बजरंगी नाम ऐसे पड़ा कि एक दिन हनुमान जी के मामा सूर्य कुमार जी वायुयान से अपनी बहन अंजना को ऋषि के आश्रम से लेकर घर आ रहे थे जिस समय पर्वत पार कर रहे थे कि हनुमान बाल स्वभाव वश उछले और नीचे गिर पड़े। सूर्य कुमार जी ने वायुयान वहीं उतारा और हनुमान को उठा लिया उसके कोई चोट नहीं आई थी। उस समय सूर्य कुमार ने कहा था कि यह वज्रंगी वज्र के समान इसका शरीर है। ■

वेदानुसार पूषा ही खाद्य व आपूर्ति मन्त्रालय

- डॉ. अशोक आर्य -
१०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी
गाजियाबाद (उ.प्र.)
चलभाष- ०९७१८५२८०६८

वेद के अनुसार राजा जिन विभिन्न मन्त्रालयों को स्थापित करता है। उनमें पूषा भी एक है। आज के युग में इस मन्त्रालय को खाद्य व आपूर्ति मन्त्रालय के नाम से जाना जाता है। यह मन्त्रालय प्राचीन काल से ही चला आता है। मानव मात्र का कल्याण करने के अभिलाषी वेद में ही इस मन्त्रालय का स्पष्ट वर्णन होने से इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। देश के विभिन्न भागों में विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ उत्पन्न होते हैं। किसी भाग में कोई एक या दो पदार्थों की खेती होती है तो अन्य भाग में किसी अन्य पदार्थ की कृषि की जाती है। इस प्रकार एक भाग में तो एक पदार्थ का बाहुल्य हो जाता है तथा दूसरे भाग में इसके अभाव के कारण लोग इसको पाने के लिए जूझ रहे होते हैं । यह मन्त्रालय सब वस्तुओं का ठीक से विस्तारण व वितरण करता है तथा जहां जिस वस्तु की आवश्यकता होती है उसे दूसरे क्षेत्र से लाकर अभाव को दूर करने का कार्य करता है इसलिए ही इस विभाग के मन्त्रालय को पूषा कहा गया है। आज हम इसे खाद्य व आपूर्ति मन्त्रालय कहते हैं। इस संबंध में वेद हमें उपदेश देते हुए कहता है कि-

पूष्णाश्चक्रं न रिष्यति न कोशोऽव पद्यते।
नो अस्य व्यथते पवि।। ऋ. ६.५४.३।।

मन्त्र कह रहा है कि जब तक मानव को पोषण की आवश्यकता होती है, तब तक पोषण मन्त्रालय का चक्र, पौषण मन्त्रालय का कार्य चलता रहता है। यह कभी भी समाप्त नहीं होता। सृष्टि के प्रत्येक मानव को ही नहीं प्रत्येक जीव को अपने भरण-पोषण की आवश्यकता सदा ही रहती है। जो आज प्राप्त किया, उससे तो आज की तृप्ति हो गई, कल को फिर से पेट को कुछ चाहिए। इस प्रकार जीवन के लिए प्रति दिन खाद्य पदार्थों की आवश्यकता प्रत्येक प्राणी को रहती है, इसलिए इस मन्त्रालय का कार्य सदा ही बना रहता है, चलता रहता है। कभी समाप्त नहीं होता। यह मन्त्रालय जितना-जितना पुष्ट होता है, उतना ही पौषणीय वस्तुओं को विस्तारित करता चला जाता है। इसलिए भी इस मन्त्रालय को पोषण मन्त्रालय कहा जाता है। इसका सम्बन्ध खाद्य सामग्री से होता है। इसलिए ही संभवतया आज इसे खाद्य व आपूर्ति मन्त्रालय कहने लगे हैं।

वेद कहता है कि इस पूषा मन्त्री का कर्म चक्र सदा ही चलता रहता है। कभी नष्ट नहीं होता। यह मन्त्री अपने कर्त्तव्यों के प्रति सदा जागरुक रहता है। इस जागरुकता में ही इसकी सफलता होती है। यदि यह एक क्षण भी पथ भ्रष्ट हो जावे तो खाद्य एवं आपूर्ति की समस्या खड़ी हो जाती है। किसी क्षेत्र में अभाव आ जाता है तो किसी क्षेत्र में बाहुल्य। कहीं तो वस्तु के अभाव से उस वस्तु के भाव आसमान पर चढ़ जाते हैं और कहीं इसके बाहुल्य के कारण इस वस्तु को इसका कोई खरीददार ही नहीं मिलता। इससे सब प्रकार का संतुलन बिगड़ जाता है तथा समग्र राज्य में अव्यवस्था फैल जाती है और लोग विरोध पर उतरने लगते हैं।

यह सब कारण है कि जिनके कारण इस मन्त्री को सदा सक्रिय रहना होता है, कहीं कोई शिथिलता नहीं करता। सदा अपने कर्त्तव्यपालन में जागरुक रहते हुए अपने रथ पर (वर्तमान में अपनी गाडी या वायुयान से) सवार होकर वह देश के विभिन्न स्थानों पर स्वयं जा कर सब निरीक्षण करता है कि कहां किसी वस्तु का अभाव है तथा कहां किस वस्तु का बाहुल्य है। वह बाहुल्य वाले स्थान से उठवाकर वहां भेजने की व्यवस्था करता है जहां वस्तु का अभाव होता है। इस प्रकार वह सब स्थानों पर आपूर्ति का संतुलन बनाने की व्यवस्था करता है।

यह सब व्यवस्था पैसे के बिना संभव नहीं होती, इसलिए इस विभाग के पास सदा विपुल धन का कोष होता है तथा इसका यह कोष सदा भरा रहता है, कभी खाली नहीं होता। इसका वज्र कभी भी क्षीण नहीं होता, कमजोर नहीं होता, कभी भी कम नहीं होता।

इस सब से वेद का आशय इस मन्त्र से इस प्रकार स्पष्ट होता है कि देश का खाद्य मन्त्री अपने कर्त्तव्यों की पूर्ति के लिए सदा सक्रिय रहे। सदा गतिशील रहे देश के विभिन्न भागों में भ्रमण करता रहे तथा वह देखे कि किस स्थान पर किस पदार्थ का अभाव है और किस स्थान पर किस पदार्थ का बाहुल्य है । वह बाहुल्य वाले स्थान से उस पदार्थ को उठावावे तथा इसे अभाव वाले स्थान पर भिजवा देवे। इस प्रकार खाद्य पदार्थों का संतुलन बनाए रखें। इस सब कार्य के लिए उसे सदा ही धन की आवश्यकता रहती है। धनाभाव में वह अपने इन कर्त्तव्यों को ठीक से पूर्ण नहीं कर सकता। इसलिए उसके धन के कोष सदा भरे रहने चाहिए। कभी भी रिक्त न हो। केवल धन ही नहीं उसके द्रव्यों के भण्डार भी सदा भरे रहें। उसके यह भण्डार कभी समाप्त नहीं होने चाहिए। ताकि जहां आवश्यकता हो वह अपने भंडारों से अन्नादि निकाल कर वहा भिजवा सके। संकट के समय वह अपने कर्त्तव्य पालन में कभी प्रमाद न करे, इससे उसके सामने खाद्य समस्या कभी विकट रूप धारण न करेगी।

इस सब के अतिरिक्त उसके पास एक वज्रात्मक शक्ति भी होनी चाहिए। देश के बहुत से व्यापारी अपने क्षेत्र में पनप रहे अभाव का अनुचित लाभ उठाने के लिए उस क्षेत्र में उपलब्ध वह समग्र वस्तु अपने भंडारों में भर लेते हैं। ऐसा करके वह या तो कृत्रिम अभाव बना देते हैं अथवा बने हुए अभाव को और भी जटिल बना कर मन माने दाम में उस वस्तु को बेचने लगते हैं। इससे प्रजा में त्राहि-त्राहि मच जाती है। लोग अभाव से दुःखी हो जाते हैं तथा राजा का विरोध आरम्भ कर देते हैं, इसलिए मन्त्र कहता है कि इस पोषण मन्त्री के पास इतनी शक्तियां हों कि वह इस प्रकार का अभाव पैदा कर प्रजा **शेष भाग पृष्ठ ४० पर**

देश में बलात्कार- व्याभिचार रुक क्यों नहीं रहा?

विश्वकर्मा कुल गौरव
- ज्योत्सना निधि -
साकची, जमशेदपुर (झारखण्ड)
चलभाष: ९९३४५२१९५४

दिल्ली में निर्भया बलात्कार काण्ड के विरोध में ऐसा आक्रोश पूर्ण आन्दोलन नौजवानों ने किया कि दिल्ली दहल गई। उस आन्दोलन में छात्र-छात्राओं का सैलाब उमड़ पड़ा। देशभर में उस काण्ड को लेकर सरकार की ऐसी छीछालेदर हुई कि किसी मन्त्री और नेता को उन आन्दोलनकारियों के सामने आने की हिम्मत नहीं हुई।

लोगों के मन में यह विश्वास जगा कि अब देश में बलात्कार के अपराधों पर विराम लगेगा, क्योंकि सरकार ने बड़ी शक्ति दिखलाई। निर्भया काण्ड के क्रूर अपराधियों को फांसी की सजा भी सुनाई गई है।

मगर यह अपराध थमने का नाम नहीं ले रहा। अभी शिमला की एक नाबालिक स्कूली छात्रा के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया और अपराधियों ने उस मासूम छात्रा के दोनों पैर और दोनों हाथ बड़ी बेरहमी से तोड़ दिये। उसके सारे बदन पर जलते हुए सिगरेट के दाग देखे गए।

बलात्कार के मामलों में किए गए जघन्य अपराधों से यह ज्ञात होता है कि लड़की की ओर से किए गए प्रतिवाद की यह जघन्य यातनाएं उसकी सजा है। बलात्कार की अनन्त कथाएं हैं, अनन्त व्यथाएं हैं। काम वासना के भूखे व्यक्ति खूंखार कुत्तों की तरह एकान्त पाकर लड़कियों पर झपट पड़ते हैं। आलम यह है कि दो-अढाई साल की बच्ची से लेकर सत्तर साल की वृद्धा महिला भी बलात्कार के शिकार हो जाती है।

बलात्कार के एक दु:खद पहलू यह है कि अबोध बच्ची जो रिश्तें में बेटी-बहन भतीजी या अन्य रिश्तेदार लगती है वे भी अपने पिता, चाचा, भाई और भतीजा की वासना की शिकार बन जाती है। जब वे अपने घरों में अपने रिश्तेदारों के बीच सुरक्षित नहीं है तो उसकी सुरक्षा कैसे होगी। बलात्कार का यह अपराध समाज में इस तरह गहराई से व्याप्त है कि पुराने जमाने में भी आज की तरह बलात्कारी अपनी बहन-बेटी तक को भी नहीं छोड़ते थे। धर्म, नीति और कानून से बेखौफ होकर वे ये अपराध घर से बाहर तो करते ही थे, मगर अपने घर की चार दीवारियों के अन्दर भी वे बच्चियां अपने पिता और भाई से सुरक्षित नहीं रह पाती। सैकड़ों वर्ष पूर्व संत तुलसीदास ने अपने महाग्रन्थ रामायण में लिखा है-

''कलि काल बेहाल किये मनुजा,
कोऊ मानत नहि अनुजा, तनुजा।''

वासना के वेग में इतनी तीव्रता होती है कि उसमें सारे नाते-रिश्ते तिनके के समान बह जाते हैं। धर्म और नीति की मान-मर्यादा ताश के पत्ते से बने घर की तरह धराशाही हो जाती है। तुलसी दास जी ने लिखा है कि कलियुग में कोई धर्म, नीति की मर्यादा नहीं मानेगा। वासना उसे ऐसा गिद्ध बना देगी कि वह अपनी बहन-बेटी तक को भी नहीं छोड़ेगा।

मान-मर्यादा की रक्षा के नाम पर घर की बड़ी, बूढ़ी स्त्रियां भी ऐसे क्रूर अपराधों के विरुद्ध न तो थाने में रिपोर्ट करती हैं और न पंचायत के सामने बात आने देती है। हवस की शिकार बनी बच्चियां जहर का घूंट पीकर, अपने ऊपर हुए बलात्कार के भीषण अपराध के बोझ को लेकर जीवनभर जीती हैं। घर के बाहर सड़क हो या बाजार, मेला हो या कोई उत्सव, खेत के काम हों या दफ्तर की नौकरी वे कहीं भी सुरक्षित नहीं। वासना में अन्धा व्यक्ति खूंखार भेड़िया बनकर किस बच्ची या स्त्री पर टूट पड़ेगा इसका कोई पता ही नहीं चलता है।

बलात्कार के ऐसे अपराध घर हो या बाहर कहीं भी होते रहते हैं। सभी मामले थाने-पुलिस तक नहीं पहुंचते फिर भी अखबार में कोई दिन ऐसा नहीं गुजरता जिस दिन उनमें बलात्कार की खबरें न छपी हों। न्यायालयों तक बलात्कार के बहुत कम मामले जा पाते हैं, क्योंकि लड़की की शादी-विवाह की बात को लेकर उसके अभिभावक इस मामले को आगे नहीं बढ़ाना चाहते। जो मामले न्यायालय तक जाते हैं उनमें से अधिकांश गवाही के अभाव में अपराधी मुक्त हो जाते हैं।

अगर बलात्कार की शिकार महिला हिम्मत जुटाकर न्यायालय में गवाही देती है तो वह समाज की नजरों में कलंकित महिला के रूप में देखी जाती है। कोई उससे विवाह करने को राजी नहीं होता और सबसे

आज कल की नारियां

मांग सूनी रख, जीन्स पहन, मांसाहारी हो,
बुला रही हैं मुफ्त में बीमारियां।
सीता ने मांग भरी थी, मन्दोदरी ने भी मांग भरी,
द्रोपदी की मांग उजाड़ने वाला दुर्योधन
द्रोपदी की सौगन्ध, जब दुर्योधन मृत्यु का ग्रास बनेगा,
तब मैं मांग में सिन्दूर भरूंगी।
देश सेवा में बलिदानी पति की याद में
मांग का सिन्दूर मिटा देती थी राजपूतानियां
मांग में सिन्दूर अटल सुहाग का प्रतीक हैं।
आजकल की सुधि नारियों, पति के होते,
मांग का सिन्दूर क्यों छिपाती हो, यह अधर्म है।
धर्म निभाओ, परम्पराएं बचाओ
सिन्दूर माथे पर कभी न लगाओ
सिन्दूर उचित स्थान पर ही लगाओ
अनेकों रोग दूर भगाओ।

मोहनलाल मगो
मयूर विहार, पाण्डव नगर, दिल्ली

बड़ी बात यह होती है कि अपराधी उसकी जान का दुश्मन बन जाता है। उसके चेहरे पर तेजाब छिड़ककर उसे कुरूप बनाने का और बड़ा अपराध करता है, मगर दबंगों की ऐसी चलती होती है कि थाना-पुलिस उसकी मुट्ठी में होते हैं।

हैरत की बात तो तब और बढ़ जाती है जब अभिभावक लड़की भगाने या उसके ऊपर बलात्कार होने के संबंध में थाने में जाते हैं तो थाने वाले उसका शिकायत पत्र या तो लेने से इनकार कर देते हैं या उस शिकायत पत्र को लेकर अपनी जेब में रख लेते हैं और अपराधी से मेलजोल कर मोटी रकम ऐंठ लेते हैं और शिकायत करता नहीं मानता है तो वह थानेदार उस शिकायत पत्र पर ऐसा जांच प्रतिवेदन कोर्ट में दाखिल करता है जिससे अपराधी का बाल-बांका भी नहीं हो पाता।

बलात्कार का मामला बहुत गंभीर होता है, इससे महिला का चित्र और चरित्र दागदार बन जाता है और जो अपराधी होता है, वह दूध का धुला बनकर छाती तानकर सिरउठाये समाज में चलता है और इधर बलात्कार की शिकार महिला जीते-जी ऐसी मर जाती है कि उसमें जीने की इच्छा समाप्त हो जाती है, इसलिए बहुत सी ऐसी महिलाएं गले में फांसी लगाकर झूल जाती हैं।

सवाल उठता है, बलात्कार की यह दरिन्दगी कौन रोकेगा, कैसे रोकेगा और कब रोकेगा? यह अपराध कितना अमानवीय अत्याचारपूर्ण है कि मृत्यु की सजा भी इसके अपराधियों के लिए पर्याप्त सजा नहीं है। दिल्ली के निर्भया काण्ड के समय इस अपराध को रोकथाम करने और अपराधियों को दण्डित करने के संबंध में अनेकों सुझाव आए पता नहीं सरकार ने जनता के उन सुझावों पर कोई विचार किया कि नहीं। इस संबंध में कई बार कितने आयोग बने और उन आयोगों ने कितने सुझाव दिये। कानूनों की किताबों में भी नए प्रावधान जोड़े गए और पुराने कानूनों में कड़ी सजा देने के लिए अनेकों संशोधन हुए, मगर, सबके सब टांय-टांय फिस्स हो गई।

अपराधियों की प्रकृति और प्रवृत्ति में कोई परिवर्तन नहीं आया, वे लोग आज भी दिन दहाड़े छोटी बच्चियों, विवाहितों या कुमारी लड़कियों, विधवाओं और वृद्ध महिलाओं का अपहरण कर ले जाते हैं और उनके साथ बलात्कालर ऐसे करते हैं कि उनकी देह चिथड़ा-चिथड़ा हो जाती है। ऐसी स्थिति में समाज और सरकार को इस दिशा में बहुत ही गंभीरता से ईमानदारी से विचार करना होगा और कठोर और कड़े कानून बनाने होंगे।

सामाजिक तौर पर बलात्कार के अपराधियों और उनके परिवारों का सामाजिक बहिष्कार होना चाहिए जिसके अन्तर्गत उनके साथ हुक्का-पानी बन्द हो। वैवाहिक रिश्ता उस परिवार से बन्द हो, उसके किसी उत्सव या किसी काम में जनता का सहयोग न हो तथा उनके किसी कार्य और उद्योग व्यवसाय में कोई सहयोग नहीं दिया जाये।

कानूनी तौर पर बारह वर्ष (१२) और उसके ऊपर की उम्र के अपराधी को समान रूप से अपराधी माना जाए। बलात्कार के अपराध और खून के अपराध को समान रूप से माना जाये और उसे फांसी की सजा का प्रावधान हो। आरोपी पर भारी आर्थिक दण्ड लगाये जाएं जो मुआवजे के रूप में बलात्कार के शिकार और उसकी मृत्यु हो जाने पर उसके परिवार वालों को वह मुआवजा देने का प्रावधान हो।

बलात्कार का मामला हो या अपहरण का मामला हो उसमें किसी प्रकार का पुलिस या कोर्ट के जरिये टाल-मटोल नहीं किया जाए और उसमें प्राथमिकता के तौर पर त्वरित कार्यवाही की जाए। इस मामले में किसी भी स्तर पर ढिलाई बरतने वाले अधिकारियों को बरखास्त करने का प्रावधान हो और उन पर लापरवाही बरतने का तथा सरकारी कार्यों में कर्त्तव्य च्यूटता के आरोप में भारतीय दण्ड विधान के अन्तर्गत कानूनी कार्यवाही करने का प्रावधान हो।

प्रत्येक थाने में जन निगरानी समिति बने जो उस थाने की समस्त कार्यवाहियों पर निगरानी रखे और वह जनता के लिए हेल्प लाईन बनाकर सहयोग प्रदान करे। एनजीओ सरकारी संस्थानों एवं समस्त शिक्षण संस्थानों को विचार गोष्ठियों के माध्यम से बलात्कार और अपहरण के अपराधों के विरुद्ध जनचेतना जागरण अभियान तथा नारी सशक्तिकरण अभियान चलाना चाहिए।

देश में जो इतने साधु महात्मा हैं वे अपने आश्रमों मठों और मन्दिरों से बाहर निकल कर समाज में नैतिक मूल्यों तथा नारी के प्रति मातृत्व भाव की चेतना जगाने के लिए देशभर में अभियान चलाना चाहिए, ताकि हमारा समाज बलात्कार और अपहरण मुक्त समाज बन सके।

(**टीप:** मानव समाज की यह विकट समस्या कानूनों और आधे-अधूरे वैदिक ज्ञान से अनभिज्ञ मठाधीशों के उपदेशों से ही हल हो सकती तो कभी की हो गई होती और वर्तमान की न्याय व्यवस्था आरोपी को पूर्ण संरक्षण प्रदान करने वाली है। तथा प्रकरण के निराकरण में लगने वाला समय प्रत्येक प्रकार के अपराधी को निर्भयता प्रदान करने वाला है। इस समस्या का संबंध व्यक्ति की मानसिकता से है वर्तमान में इस प्रकार की घटनाओं की बाढ़ सी आ गई है। धर्म का पाठ पढ़ाने वाले ख्याति प्राप्त मठाधीशों के सुनियोजित योजनाबद्ध किए जाने वाले बड़े-बड़े कांड उजागर हो रहे हैं और वे सलाखों के पीछे जा रहे हैं। हाल ही में हरियाणा के गुरुग्राम (गुड़गांव) स्कूल में सात वर्षीय बालक की दुष्कृत्य के प्रयास में की गई हत्या मानवता को शर्मसार तथा रोंगटे खड़े कर देने वाली है। इसका कारण वर्तमान के मानव की मानसिक विकृति है। उसकी विकृति में सहायक मांसाहार, नशाखोरी, अश्लील फिल्में, नग्नता के दृश्यों का प्रदर्शन, कामुकता परोसने वाली फैशन परस्त संस्कृति तो है ही। मुख्य कारण शिक्षा में वैदिक शिक्षा का अभाव है। महर्षि दयानन्द सरस्वती से जुड़ी वैदिक धर्म की संस्थाओं में सैकड़ों नहीं हजारों ऐसे महानुभावों आज भी इस दूषित वातावरण में मौजूद है। जो आजन्म अविवाहित रहकर देश-धर्म की अनुपम सेवा कर रहे हैं। इन्होंने ब्रह्मचर्य अर्थात् इन्द्रिय संयम के साथ-साथ परमात्मा की न्यायकारी व्यवस्था को भी भलीभांति जाना है। इस कारण से भोगवाद से दूर त्यागी-तपस्वी है, जब तक यह शिक्षा वर्तमान शिक्षा पद्धति में शामिल नहीं की जाती परिणाम और भी भयावह देखने को मिलेंगे। - सम्पादक) ■

भीषण समस्याओं से ग्रसित राष्ट्र का भविष्य

- आचार्य श्रुति भास्कर -
धार्मिक प्रवक्ता एवं सामगायन चार्य
सहारनपुर (उ.प्र.)
चलभाष- ९४१२७४२५५७

आज राष्ट्र अनेक प्रकार की समस्याओं से ग्रसित है इसके पीछे मुख्य कारण है

१. धर्म के नाम पर व्यापक दृष्टिकोण का अभाव।

२. विद्वानजनों का राष्ट्रीय समस्याओं पर खामोश रहना।

३. जनता का जागरुक न होना।

४. केन्द्र एवं राज्यों में सत्तारूढ़ पिछली सरकारों द्वारा राष्ट्रहित की अनदेखी कर स्वहित एवं राजनैतिक हित को ज्यादा महत्व देना।

पहला कारण-वर्तमान में एक नई समस्या चलन में आ गई है, वह है हमारी मांग नहीं मानी गई तो हम धर्म परिवर्तन करके हिन्दू से मुसलमान और मुसलमान से हिन्दू बन जाएंगे। जबकि ऐसी मांग करना संकुचित सोच एवं सच्चाई से परे है। क्योंकि धर्म एक होता है। अतः धर्म परिवर्तित नहीं होता। मानव का धर्म है मानवता।

मजहब अनेक होते हैं और मजहब परिवर्तित होते रहते हैं। अभी हाल ही में भीम आर्मी एवं शिक्षा मित्रों द्वारा धर्म परिवर्तन की धमकी दी गई। महान् तार्किक विद्वान चाणक्य के अनुसार '**कर्त्तव्यों धर्म संग्रह**' अर्थात् कर्त्तव्य ही धर्म है अर्थात् हमारा कर्त्तव्य परमात्मा या खुदा के प्रति क्या है, हमारा कर्त्तव्य राष्ट्र के प्रति क्या है, हमारा कर्त्तव्य दूसरों के प्रति क्या है? आदि-आदि।

दूसरा कारण- विद्वान व्यापक सोच रखता है, वह मजहब सम्प्रदाय की परिधि से बाहर निकल मानव हित की बात करता है, विद्वान का अग्रणी होना राष्ट्रहित में होता है। दिनांक ३ अगस्त के जागरण अंक में नालसर यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ के कुलपति फैजान मुस्तफा द्वारा राष्ट्रगीत पर दिए गए विचार कट्टरवाद को बढ़ावा देने में सहायक एवं अविद्वतापूर्ण विचार हैं और धर्म के प्रति वैचारिक एकता में बाधक हैं।

देशभक्ति एवं राष्ट्रवाद दोनों का परिणाम देशप्रेम की भावना को जाग्रत एवं प्रबल करना है यह एक अच्छा प्रयास है, मुस्तफा जी का यह विचार की 'राष्ट्रगीत गाने पर इस्लाम के एकेश्वरवाद की मान्यता पर आघात होता है' यह अतार्किक एवं संकुचित विचार है, क्योंकि गैर इस्लामी सनातनी लोग '**तुम हो एक अगोचर**' कहकर एक ईश्वर को उपासना करते हैं। प्राचीनतम् ग्रन्थ वेद **एकोबसी सर्व भूतन्तरआत्मा** अर्थात् एक परमात्मा सबके हृदय में वास करता है। अर्थात् एक ईश्वर . की भक्ति की बात करता है। अतः मुस्तफा जी की यह सोच गलत है कि केवल इस्लाम ही एकेश्वरवाद को मानता है। अब रही बात ईश्वर भक्त की और देश भक्त की। संसार में हमारे ऊपर जिसका भी अहसान हो जो हमारा उपकार करता है, हम उसका सम्मान करते हैं, यह हमारा कर्त्तव्य है, परमात्मा या खुदा परम हितैषी है एवं अद्वितीय उपकारक है। अतः उसका परम सम्मान सबको करना चाहिए। उसने दुनिया बनाई , नाना प्रकार के सांसारिक पदार्थ वायु, जल, वनस्पतियां, सूर्य, चांद प्राणी मात्र के लिए बनाया, लेकिन इसके साथ ही परमात्मा के अलावा दूसरे हमारा जो किसी न किसी रूप में उपकार कर रहे हैं उनका भी हमें सम्मान करना चाहिए। जैसे माता-पिता पुत्र का कितना उपकार करते हैं, उनका सम्मान (भक्ति) करना गलत नहीं है। इसी प्रकार पृथ्वी के जिस भू-भाग में हम पैदा हुए हैं जिस मिट्टी में लौटकर जिसका अन्न खाकर हम बड़े हुए हैं उसे माता के समान सम्मान (भक्ति) देने की बात वेद में कहा गया है। '**माता भूमि पुत्रों अहम् पृथ्वीया**' राष्ट्र के प्रति बलिदान होने के लिए वेद में प्रेरित किया गया है। '**वय तुभ्यम् बलहतः श्याम**' अर्थात् राष्ट्र के लिए बलिदान देने के लिए सदैव तत्पर रहें। वेद को दूसरे मजहब के लोग भी प्रमाण रूप में मानते हैं। क्योंकि वेद का विचार विद्वतापूर्ण और तर्कपूर्ण एवं सृष्टि नियमों के अनुकूल है। अतः हमें अपनी सोच बदलने की जरूरत है। '**ईश्वर या खुदा का सम्मान अलग विषय है और देश का सम्मान अलग विषय है।**' सोच न बदलने का मतलब कट्टरवाद में बढ़ोत्तरी करना है जो कि राष्ट्र के लिए घातक होगा।

देश प्रेम के गीत गाने और सुनने में देशप्रेम की भावना प्रबल होती है, अतः देशभक्ति गीत गाने एवं सुनने के लिए प्रोत्साहित एवं वातावरण बनाने हेतु अदालतों के भी योगदान का स्वागत होना चाहिए। हां, यह जरूर है कि किसी के भी ऊपर जबरदस्ती थोंपना उचित नहीं है। सामान्य भाषा की अपेक्षा स्वर, लय, ताल के माध्यम से कही गई सुनी गई बात ज्यादा प्रभावी और हृदयगामी होती है, करोड़ों लोग इस देश में प्रतिदिन परमात्मा या खुदा की उपासना गुणगान करते हैं और साथ में समयानुसार राष्ट्रगान अपनाकर अपने कर्त्तव्य का पालन करते हैं। क्रान्तिकारियों ने ईश्वर स्तुति के साथ राष्ट्रगान करते हुए अपने प्राणों की आहुति दी थी।

तीसरा कारण- जिस राष्ट्र के नागरिक जागरुक रहते हैं वह राष्ट्र जागरुक रहता है, हमारे राष्ट्र में इसका अभाव है, ऋषि मुनियों ने कहा- **वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता**' अर्थात् हम राष्ट्र के प्रति सदैव जागरुक रहें। **महर्षि दयानन्द सरस्वती उन अद्वितीय महापुरुषों में थे, जिन्होंने राष्ट्रहित समाज हित हेतु लोगों को जागरुक बनाया एवं मजहब सम्प्रदाय में फैले हुए अन्धविश्वास एवं अज्ञानपूर्ण बातों का खण्डन जनहित में किया।**

चौथा कारण- पिछली केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों द्वारा राष्ट्रहित सर्वोपरि है इस विचाराधारा का अभाव या जानबूझकर राष्ट्रहित की अनदेखी गई। राष्ट्र अगर ताकतवर होगा तो हम भी ताकतवर होंगे। ऐसी सोच प्रत्येक नागरिक के अन्दर होना चाहिए। ■

गांधीजी का जन्म दिवस २ अक्टूबर-एक चिन्तन

मानसिकता

आपने मुस्लिम लीग को महान संगठन की उपाधि दी। जिन्ना को कायदे-आजम, सुहरावर्दी को शहीद, अब्दुल रशीद को भाई और मोपला विद्रोहियों को धर्म निष्ठ की उपाधि दी। आपने सभी हिन्दू क्रान्तिकारियों का अपमान किया। आपने दिल्ली में १९२५ में जामिया मिलिया इस्लामिया की आधारशिला रखी थी जो अब केन्द्रीय विश्वविद्यालय है। गांधीजी हिन्दू महासभा-अकाली दल- राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और आर्य समाज के प्रखर विरोधी थे। उन्होंने ३१ जुलाई १९४७ को श्रीनगर जाकर महाराजा हरीसिंह से कहा कि वे जम्मू-कश्मीर रियासत का विलय पाकिस्तान में कर दें।

७५६ वर्षों के मुस्लिम शासनकाल को वे परतन्त्रता का काल नहीं मानते थे। वे केवल १५० वर्षों के अंग्रेजों के शासनकाल को ही परतन्त्रता का काल मानते थे। उन्होंने कहा था कि पाकिस्तान का निर्माण उनकी लाश पर ही हो सकता है, लेकिन बाद में वे देश विभाजन के लिए सहमत हो गए। उन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा, शराबबन्दी और गोवध बन्दी का वायदा किया था जो अभी तक पूरा नहीं हुआ है। उन्होंने हिन्दुओं से कहा कि ७५६ वर्षों के काल में जो कुछ भी हुआ उसे भूल जाओ।

बंटवारे में भारत को ५५ करोड़ रुपए (वर्तमान मूल्य रुपए ३८५० करोड़ रुपए) पाकिस्तान को देने थे, जबकि पाकिस्तान ने २७५ करोड़ रुपए (वर्तमान मूल्य रु. १९२५० करोड़ रु.) भारत को देने थे। गांधीजी ने अनशन करके पाकिस्तान को रुपए दिलवा दिए, किन्तु पाकिस्तान ने देय राशि नहीं दी, जिसे भारत सरकार ने बट्टे खाते में डाल दिए।

अप्रिय कार्य

गांधीजी ने हिन्दुओं से कहा कि वे अल्पसंख्यक के रूप में पाकिस्तान में ही रहें। क्या बिल्ली और चूहे साथ-साथ रह सकते हैं? आपने जर्बदस्ती नेहरू को प्रथम प्रधानमन्त्री बनवा दिया, जबकि ८० प्रतिशत कांग्रेसी पटेल को पसन्द करते थे। आपने हिन्दुओं को यह आभास ही नहीं होने दिया कि भारत हिन्दू धर्म की उत्पत्ति वाला देश है। आपने २४ प्रतिशत भूमि पाकिस्तान और बंगलादेश को देने के बाद ३ करोड़ मुस्लिमों को यहीं रहने दिया। आपने सोमनाथ मन्दिर के जीर्णोद्धार का विरोध किया। सर्दी की ठंड में दिल्ली की खाली मस्जिदों में ठहरे हुए सैकड़ों हिन्दू परिवारों को पुलिस की सहायता से बाहर निकलवा दिया। राम भक्त होते हुए भी उन्होंने पत्रकारों से कहा कि पहले हिन्दू सिद्ध करें कि अयोध्या में राम मन्दिर था।

यदि देश गांधी जी की नीतियों पर ही चलता रहा तो हिन्दू निश्चित रूप से घाटे में रहेंगे और खण्डित भारत का प्रधानमन्त्री कोई मुस्लिम और राष्ट्रपति कोई ईसाई हो सकता है अतः सावरकरवादी बनो वरना.......

रामअवतार यादव, प्रचारमन्त्री
सावरकरवाद प्रचार सभा
२६ के.पी. रोड बुलन्दशहर (उ.प्र.)

गुरुवर दयानन्द को श्रद्धान्जलि

दयानन्द के गुण गाते गाते, मेरा मन भर आया।
उन्हें श्रद्धान्जली देते-देते, मेरे नयनों में नीर आया।।
दयालु विधवा, अनाथ, गौ, दलितों की दुर्दशा देख रोया।
कष्ट नंगे-भूखों के देख, नहीं रातों में वह सोया।।
देश की दासता को देख, अहर्नीश आंसू बहाया।
स्वाभिमान राष्ट्र भक्ति का भर, नौजवानों को उसने उठाया।।
महर्षि ने देश भक्तों की, पीठ ठोंक कर आगे बढ़ाया।
स्वराज जागृति कर, सोये राष्ट्र को नींद से जगाया।।
राष्ट्र भक्तों ने विदेशी गोरों को, नाको चना चबवाया।
अन्त में अंग्रेजों को भारत से, आधी रात में भगाया।।
दयानन्द की प्रेरणा से देश ने, स्वराज्य फल पाया।
राष्ट्र भक्तों ने मुक्त गगन में, ध्वज तिरंगा फहराया।।
जन्म टंकारे में ले, भारत को निहाल कर गया।
यहां की धरती पर खेल, इसको धन्य कर गया।।
इसी टंकारे में मूलजी ने, सच्चा शिव ज्ञान पाया।
यही निराकार, सर्वव्यापक, एक परमेश्वर का ध्यान आया।।
गुरु दयानन्द को श्रद्धांजलि देने, मैं टंकारे में आया।
यहां की मिट्टी को धन्य मान, माथे पर लगाया।।
दयानन्द दुःखी भारत का, दया सिन्धु बन धाया।
सकल विश्व को जीवनदायी, शीतलवारी बन भाया।।
दयानन्द ने ही अहिंसा की, अलख को जग में जगाया।
हिंसा की आग को, दया के सोम्य जल से बुझाया।।
महर्षि दयानन्द सत्य की मूर्ति बन, संसार में छाया।
वह अहिंसा का अवतार बन, सबके हृदय में समाया।।
दयानन्द के सम संसार ने, दूसरा दयालु नहीं पाया।
अपने घातक को भी दे मार्ग व्यय, दूर भगाया।।
गुरुवर ही संसार को सशक्त, सत्यार्थ की कसौटी दे गया।
अन्त में हमें रोता बिलखता छोड़, ईश आश मोटी दे गया।
अज्ञान की अंधेरी रात में, विश्व को वैदिक सूर्य दे गया।
अजमेर में अन्तिम सांस ले, गुरुदत्त को प्रकाश दे गया।।
गुरुदेव ने संसार को, ढोंग व पाखण्ड से बचाया।
आर्य विश्वकर्मा भी ऋषिवर की, कृपा से बच पाया।।
दयानन्द स्वदेशी स्वाभिमान से, भारत को फिर जिला गया।
आर्य समाज के संगठन से, श्रेष्ठों को मिला गया।।
विस्मृत वेदों का अमृत, विश्व को पुनः पीला गया।
म्लान मुख विप्रो का, वेदवाणी से दुबारा धुला गया।।

शिक्षक-अम्बालाल विश्वकर्मार्य
मन्दसौर
चलभाष- ८९८९५३२४१३

आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य

- रमेशचन्द्र चौहान -
२६२, पार्श्वनाथ नगर,
इन्दौर (म.प्र.)
चलभाष - ९८२६०-३१३४९

भारतीयों के इतिहास ग्रन्थों में सार्वभौम चक्रवर्ती आर्य सम्राटों की सूचियां मिलती है। विदेशों में ईसाई-इस्लामिक ध्वसों के उपरान्त भी जापान से अमेरिका तक के देशों में सुदूर वन पर्वतों टीलों से प्राप्त पुरातत्व सामग्री में भी भारतीय संस्कृति के अनेक प्रमाण हैं। आर्यों के धर्मग्रन्थों के आधार पर हम उनके इस चरमोत्कर्ष का मूल कारण लिखते हैं। ये ग्रन्थ वेद हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

(१) ऋग्वेद- युद्ध शास्त्र है। (२) उसी में से लगभग १०० प्रतिशत मन्त्रों का संकलन सामवेद उस युद्ध का विजय गीत है। (३) यजुर्वेद तो है ही राष्ट्रवेद यानी राष्ट्र की स्थापना, उसे निष्कंटक शत्रुहीन एवं सफल करना। (४) अथर्ववेद साम, दाम, दण्ड, भेद द्वारा राष्ट्र को शाश्वतता प्रदान करना। वैदिक सम्पत्ति पृष्ठ ३०६ के अनुसार युद्ध आर्य सभ्यता का आवश्यक अंग है।

ऋग्वेद के प्राप्तकर्ता ऋषि अग्नि हैं, यजुर्वेद के सूर्य हैं, अग्नि को प्रज्जवलित रखने वाले सामवेद का ऋषि वायु है। इन्हीं ग्रन्थों से अमरता की ऊर्जा प्राप्त कर आर्यजन सायं प्रातः अग्नि तपते, यज्ञ करते थे। वेद की इस अपरिमित अजेय ऊर्जा का सार्वभौम साम्राज्य के रूप में विस्फोट सामान्य सी बात थी। अपने तन-मन-धन की उग्रता के कारण ही वे साइबेरिया स्केण्डेनेविया आदि तक भी पहुंच गए थे। पूर्व में कम्बोडिया में शासन करते हुए अंकोरवाट (विश्व का सबसे बड़ा हिन्दू मन्दिर) बनाया। युद्ध के समय इन्हीं यज्ञ कुण्डों में पड़ी आहूतियां शत्रुओं को भागने को विवश कर देती थी। यदि वे नहीं भागते तो अन्धे या बेहोश होने से पाशबद्ध कर लिए जाते थे। इस प्रकार राज्य विस्तार भी किया जाता था। इस प्रकार सम्पूर्ण संसार में उनकी वेद विद्याएं एवं विविध विज्ञान तथा उनकी स्थानीय भाषाओं में वेद के सहस्त्रों शब्द पहुंच गए, सभी मदर लेंग्वेजेस दर्शनीय है। यथार्थ में ये भाषाएं वैदिक भाषा की प्राकृते है।

परम वेद महर्षि दयानन्द के अनुसार वेदों की उत्पत्ति त्रिविष्टप् (तिब्बत) में हुई और उन आर्यों ने हिमालय से उतर कर देश बसाकर आर्यावर्त नाम दिया और युगों-युगों तक सार्वभौम राज्य किया। वेदाध्ययन का क्रम भंग होने से यज्ञों में विकार मतभेद एवं दोष उत्पन्न हुए। भोजन का स्वरूप बिगड़ा। पशु बलि होने लगी। सम्पूर्ण आर्य समाज हिंसक-अहिंसक (वैदिक-अवैदिक) में बंट गया। अहिंसकों (जैन बौद्धों) ने स्वयं पर संकटों की घड़ी में विदेशी शासकों को बुलाया। यहां का वैभव देखकर वे लड़े भी और कई यहीं रच-बस गए। इस प्रकार एक नई संस्कृति का सूत्रपात होने लगा। मुगलों के द्वारा प्रत्यक्ष विध्वंस तथा अंग्रेजों के परोक्ष महाध्वंस के कारण भारत को अपूरणीय क्षति एवं आत्म विस्मृति तक हुई, परन्तु संघर्ष कभी बन्द नहीं हुआ। इसका मूल कारण भी यही था कि किसी भी भाषा में सही आर्यों का यह वैदिक सिद्धान्त कि आक्रामकता ही रक्षा एवं उपलब्धि है, भारतीयों के रक्त में पूर्वजों से ही आगत था। जबसे ये थोड़ा वेद पढ़ने लगे हैं राष्ट्र जागरण एवं स्वतन्त्रता की प्राप्ति हुई और विश्व में अग्रणी बनने का अनवरत प्रयत्न कर रहे हैं। वेद और आर्यों की औजस्विता के गुणसूत्र तो जाने अनजाने ही सही, हमारे रक्त में हैं। ■

समाज के लिए अभिशाप-प्रचलित जाति-पाति व्यवस्था

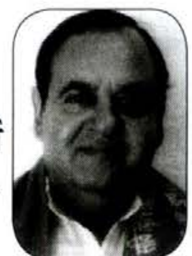

जांगिड कुलभूषण- रामफलसिंह आर्य
वरि. उप प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा हि.प्र.
सुन्दरनगर, जनपद-मण्डी
चलभाष- ०९४१८४७७७१४

हमारे प्राचीन आचार्यों, ऋषि-महर्षियों ने समाज व्यवस्था का सुन्दर एवं श्रेष्ठ ढांचा वेद के आधार पर चार वर्णों में विभक्त किया था। जिनको पढ़ने-पढ़ाने का एवं यज्ञादि का कार्य दिया गया, उन्हें ब्राह्मण कहा गया जिनको रक्षा एवं राज्य व्यवस्था संचालन का कार्य दिया गया वे क्षत्रिय कहलाये, कृषि एवं व्यापार करने वालों को वैश्य एवं अन्य सेवा कार्य करने वालों को शूद्र नाम दिया गया। वैदिक वर्ण व्यवस्था में यह सब कुछ गुण, कर्म एवं स्वभाव के ऊपर आधारित था, अर्थात् मनुष्य में जैसे गुण होंगे और जैसा वह कार्य करेगा, उसे उसी वर्ण में माना जाएगा। ये वर्ण एक प्रकार से मनुष्य की डिग्रियां थी जो उसे उसके कर्मों के अनुसार प्रदान की जाती ती। यहां यह भी ध्यान रखना चाहिए कि इन चारों वर्णों में किसी को ऊंचा या नीचा नहीं समझा जाता था। चारों वर्णों का समान मान सम्मान था और चारों ही आर्य थे। यह व्यवस्था समाज में लम्बे समय तक चलती रही, परन्तु धीरे-धीरे इसमें परिवर्तन होना आरम्भ हो गया जो लोग जैसा-जैसा कार्य कर रहे थे उन्हें उसी के आधार पर अर्थात् जन्मना जाति-पाति के अनुसार व्यवहार चल पड़ा। वर्ण व्यवस्था आज की जाति-पाति से नितान्त भिन्न थी, वहां छुआ छूत का चिन्ह भी न था और यहां ऊंच-नीच, छुआछूत के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। वहां परस्पर प्रेम और सौहार्द्र था और यहां वैमनस्य ईर्ष्या द्वेष के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। वहां प्रत्येक को उन्नति करने का अवसर एवं अधिकार प्राप्त था और यहां सब कुछ उच्च जाति के लोगों के हाथों में सिमट गया और निम्न समझी

जाने वाली जातियों का भयानक रूप से शोषण प्रारम्भ हो गया। मनमाने ग्रन्थ रच कर अनेकों पाखण्डों को जन्म दिया गया और श्रेष्ठ एवं सुदृढ़ रूप से संगठित समाज की चूले हिला डाली। यह सब कुछ स्वार्थी दम्भी एवं दुष्ट प्रवृत्ति वाले लोगों की सोची समझी सुनियोजित चाले थीं, जिनमें वे पूर्ण रूप से सफल रहे। धीरे-धीरे पीढ़ी दर पीढ़ी इन दूषित विचारों का संक्रमण आगे से आगे चलता रहा और स्थिति विकट से विकट बनती चली गई। धूर्त एवं चालाक लोगों ने ऋषियों के नाम से कुछ नये कपोल कल्पित ग्रन्थ रच डाले और प्राचीन ग्रन्थों में भी प्रक्षेप कर डाला। यहां तक कि इन दूषित विचारों ने इतना व्यापक प्रभाव दिखाया कि जाति विशेष के लोगों को घर पृथक, उनके कुएं पृथक, उनकी चौपाले पृथक इतना ही नहीं उनके श्मशान घाट तक पृथक कर डाले। मरने के उपरान्त भी जाति ने पीछा नहीं छोड़ा।

इस अवस्था का लाभ कुछ स्वार्थी एवं अवसरवादी लोगों ने और उठाया तथा नीची समझी जाने वाली जातियों के लोगों को उनके शोषण एवं उपेक्षा का भान करवा कर उनका मत-परिवर्तन किया जाने लगा और समाज के एक बहुत बड़े भाग को परिवर्तित करके परस्पर घृणा का वातावरण तैयार कर दिया गया। यद्यपि निम्न स्तर पर रहने वाले लोगों की यह एक स्वाभाविक सी प्रतिक्रिया भी थी जिसका चालाक लोगों ने भरपूर लाभ उठाया और आज भी उठा रहे हैं। इससे उनके स्तर में कोई बदलाव आया या नहीं यह तो एक खोज का विषय है, परन्तु समाज खण्डित अवश्य हुआ और वर्तमान स्थिति सामने आ गई, जहां पर सब कुछ जाति पर आधारित होकर रह गया। देश की स्वतन्त्रता के समय निम्न स्तर पर रहने वाली जातियों के उत्थान के लिए सरकार द्वारा विशेष सुविधाओं का प्रावधान करके उन्हें आरक्षण आदि दिया गया, यह कार्य भले ही उनके उत्थान के लिए था, परन्तु इससे भी समाज में बहुत सारी विषमताएं उत्पन्न हो गई और अन्य जातियों ने भी अपने लिए आरक्षण की मांग रखी और इसके लिए प्रत्येक उचित या अनुचित मार्ग को अपनाने में कोई संकोच नहीं किया गया। कभी गुर्जर समुदाय, कभी मीणा समुदाय, कभी जाट समुदाय तो कभी कोई अन्य समुदाय। वर्तमान स्थिति इतनी विस्फोटक और घातक है कि कब कहां कौन सी आग सुलग उठे कुछ कहा नहीं जा सकता।

प्रिय पाठकगण! आप विचार कर रहे होंगे कि हमने अपनी अदूरदर्शिता, मुर्खता और स्वार्थों के कारण कैसे समाज का निर्माण कर डाला? इसके लिए उत्तरदायी कौन लोग है जिनके मन में यह भयानक कीड़ा बार-बार विष उड़ेल रहा है। जी हां! इसके लिए उत्तरदायी है वे स्वार्थी लोग जो अकारण ही अपने को बड़ा मान बैठे और घृणा का वातावरण बना डाला। अपने को ऊंचा मानने वाले वे लोग जो मनुष्य को मनुष्य ही नहीं समझते। ऐसे लोग वास्तव में कुत्सित और रोगी मस्तिष्क के हैं। अपने हजार अवगुण भी जिन्हें गुण ही दीखते हैं और दूसरों के गुण भी जिनके लिए अवगुण ही है। जाति आधारित संगठनों के माध्यम से यह रोग और भी उग्र होता जाता है।

जिस समाज में शिक्षण जाति आधारित, व्यवसाय जाति आधारित, चुनाव जाति आधारित, नौकरी जाति आधारित, मेल जोल जाति आधारित और व्यवहार जाति आधारित हो, आप क्या आशा करते हैं कि वहां पर कभी शान्ति स्थापित हो सकती है? कदापि नहीं। लोगों में मूर्खता और द्वेष इस सीमा तक समा चुके हैं कि सामाजिक सौहार्द्र की कल्पना भी नहीं की जा सकती। धीरे-धीरे लोगों की विचारधारा में परिवर्तन होने के कारण निम्न समझे जाने वाली जाति के लोगों में एक आक्रोश कि हमारा उच्च वर्णों द्वारा लगातार शोषण किया गया है और उच्च वर्णस्थ लोगों की यह भावना की अब हमारे हाथों से ये लोग निकल गए हैं इससे वैमनस्य और भी अधिक बढ़ता है। वोटों की राजनीति ने इस समस्या को ओर भी अधिक विकराल बना दिया है। परिणामतः समाज में चारों और अशान्ति का वातावरण बन गया। यह कितनी बड़ी विडम्बना है कि आज शिक्षा का इतना प्रचार-प्रसार होने के उपरान्त भी जाति पाति उग्र रूप में जीवित है। इसके कितनी बार क्रूर उदाहरण भी देखने को मिलते हैं। आज से लगभग ५-६ वर्ष पूर्व हरियाणा के हिसार जिले के एक गांव में किसी उच्च जाति के व्यक्ति ने उसके खेत में कार्य करने वाले निम्न जाति के व्यक्ति के हाथ केवल इसलिए काट दिये थे उसने प्यास लगने पर घड़े से स्वयं पानी पी लिया था। इस प्रकार की अनेकों घटनाएं आपको मिल सकती हैं।

मुझे याद है जब हम गांव में विद्यालय में पढ़ते थे तो उस समय गांव में ब्राह्मण जाति का एक ऐसा व्यक्ति था जिसे यदि कोई निम्न जाति का पुरुष छू जाता था तो वह कपड़ों समेत तालाब पर जाकर स्नान करता था और यह व्यक्ति कोई अशिक्षित नहीं था, अपितु संस्कृत का बड़ा विद्वान था और आयुर्वेद का भी उसे अच्छा ज्ञान था। हिन्दुओं के पोंगा-पन्थियों ने अपनी मूर्खता के कारण ही अपने शत्रु उत्पन्न कर लिये। भारत में इस समय रहने वाले मुस्लिमों का यदि गहन अन्वेषण किया जाए तो पता चलेगा कि इनमें से लगभग ९५ प्रतिशत लोगों के पूर्वज हिन्दू थे। इन्हें या तो बलपूर्वक मुसलमान बनाया गया था ये अपने ही लोगों के उपेक्षापूर्ण व्यवहार से बन गए। यही अवस्था ईसाइयों की है। इस तथा अन्य मतों में जाने के उपरान्त ये लोग हिन्दुओं से घृणा करने लग जाते हैं और साम्प्रदायिक झगड़े जन्म लेते हैं। जैसा साम्प्रदायिक वातावरण इस समय देश में है उसे देखकर आने वाले खतरे की घण्टियां बजती हुई स्पष्ट सुनाई दे रही है।

यह कितने घोर आश्चर्य की बात है कि एक मनुष्य जाति होते हुए, एक विचारशील प्राणी होते हुए अच्छे बुरे की समझ रखते हुए भी लोग जातिवाद के कीचड़ में पड़े हैं और परस्पर घृणा का भाव रखे हुए हैं। सदियों से जो विष मनों में भरा चला आ रहा है वह लगातार मानवता को खाये जा रहा है, फिर भी लोग नहीं समझते।

अन्त में हम एक बात और स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि प्रायः लोग इस सारी गड़बड़ का दोष मनुस्मृति को दिया करते हैं, हमारा ऐसे लोगों से बलपूर्वक आग्रह है कि कृपया एक बार मनु स्मृति को पढ़िये अवश्य और फिर उस पर अपने विचार दीजिए। जिस मनु स्मृति का प्रकाशन आर्य जगत् के कई प्रकाशकों द्वारा किया गया है उसे पढ़कर निश्चित रूप से विचाराधारा परिवर्तित हो जाएगी। किसी भी आर्ष ग्रन्थ में इस तथाकथित ऊंच नीच छुआछूत का चिन्ह तक भी न मिलेगा। आखिर आप लोग कब तक इस विष की पोटली को गले में लटकाये घूमते रहेंगे। अरे मनुष्य हो विचार करना सीखो और छोड़ो इस बीमारी को अन्यथा याद रखना यह जाति-पाति का नाग एक दिन तुम सबको डस जाएगा। ■

वर्ष के ३६५ दिन सक्रिय सुविख्यात आर्य समाज गान्धीधाम

६४वां वार्षिक अधिवेशन

मान्यवर,

ईश्वर की महती कृपा से विश्व प्रसिद्ध ३६५ दिन तथा पूरे दिन भर सक्रिय आर्य समाज के '**सेवा तीर्थ**' के रूप में जानी जाने वाली आर्य समाज गांधीधाम अपना वार्षिक अधिवेशन १२ से १४ जनवरी २०१३ तक आयोजित करने जा रही है।

यह कार्यक्रम विधिवता से भरा होगा, जिसमें विविध सम्मेलन, गोष्ठियां, पुरस्कार वितरण तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम शामिल हैं। प्रात:काल आध्यात्मिकता से परिपूर्ण यज्ञ, पू. नन्दिता शास्त्री जी और पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी की ब्रह्मचारियों के सानिध्य में होगा। साध्वी उत्तमा यतिजी (सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली), पंडित कमलेशकुमार जी अग्निहोत्री (अहमदाबाद) तथा आप महानुभावों की गरिमामय उपस्थिति कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएगी।

आर्य श्रेष्ठी एवं जीवन प्रभात के कुलपिता तथा आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के भीष्म पितामह श्री गिरीश खोसलाजी जीवन के ७० वर्ष पूर्ण कर रहे हैं- उस उपलक्ष्य विशेष कार्यक्रम का आयोजन होगा। देश विदेश से आर्य श्रद्धालुजन पधारेंगे।

प्रतिवर्ष इन तिथियों में आयोजित कार्यक्रम में पूरे भारत से अनेक नर-नारी पधारते हैं जिनकी रहने व भोजन की समुचित व्यवस्था की जाती है। इस कार्यक्रम में अनेक वैदिक विद्वान पधारेंगे तथा अनेक गणमान्य व्यक्ति भी पधारेंगे। इस बार यह कार्यक्रम आर्य समाज गांधीधाम के पास में झंडा चौक में सम्पन्न जावेगा।

आपसे निवेदन है कि आप पुन: पधारें। इन तिथियों में आने तथा जाने का आरक्षण करवा लें व अन्य अतिथियों को भी साथ लायें। हमें पत्र द्वारा अथवा ई-मेल द्वारा हमारे ई मेल aryagan@arygan.org. पर अवश्य सूचित करें। विस्तृत निमन्त्रण आपको १५ दिसम्बर तक प्राप्त हो जावेगा। आप अहमदाबाद से सड़क मार्ग से, रेल मार्ग से, गांधीधाम पहुंच सकते हैं। मुम्बई व दिल्ली से भी प्रतिदिन गांधीधाम के लिए ट्रेन चलती हैं। मुम्बई से रोज विमान सुविधा भी कंडला के लिए शुरू की गई है।

विनीत

वाचोनिधि आचार्य, प्रधान	गुरुदत्त शर्मा, महामन्त्री	मोहन जांगिड, उप प्रधान
९४२६३३६२३१/९७२७५३६२३२	९४२६२१५३३८	९४२६२१५४५१

तथा समस्त ट्रस्टीगण एवं सदस्य गण, आर्य समाज गान्धीधाम महर्षि दयानन्द मार्ग, झण्डा चौक के पास गांधीधाम कच्छ (गुजरात) ३७००२१

करबद्ध निवेदन के साथ पाती पाठकों के नाम - सुखदेव शर्मा, प्रकाशक-वैदिक संसार

कहीं आपका जीवन व्यर्थ नष्ट तो नहीं हो रहा?

जी हाँ! आप प्रतिदिन अपनी शारीरिक सुन्दरता को दर्पण में निहारते हैं। ठीक उसी प्रकार क्या आपने कभी अपने दुर्लभतम मानव जीवन को आध्यात्मिकता के दर्पण में निहारने का प्रयास किया है? नहीं न! तो आपको कैसे पता चलेगा कि आपके जीवन को व्यर्थ नष्ट करने वाले आपके शत्रु दोष-दुर्गुण आदि आपके जीवन में शनै:-शनै: घुसपैठ कर चुके हैं। **वानप्रस्थ साधक आश्रम आर्यवन रोजड़ द्वारा आयोजित क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर दिनांक २२ से २९ अक्टूबर २०१७ तक** आयोजित होने जा रहा है। मनुष्य मात्र के लिए यह विलक्षण सुनहरा अवसर है।

यह शिविर ही आध्यात्मिक दर्पण है जो आपको अपने जीवन में निहारने तथा जो कुछ अव्यवस्थित है उसे ठीक कर मानव जीवन को सुन्दर, सफल-सार्थक बनाने का अवसर प्रदान करता है। वैदिक संसार के समस्त पाठकों से मेरा करबद्ध निवेदन है कि आपके हितार्थ मात्र आठ दिवस देकर सम्पूर्ण जीवन को समस्याओं से रहित आनन्दमय बनाएं तथा अन्यों को भी प्रेरित कर शारीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति का पथ प्रशस्त करें। धन्यवाद

- शिविर की विस्तृत जानकारी एवं पंजीयन हेतु अतिशीघ्र सम्पर्क करें।

वानप्रस्थ साधक आश्रम,
आर्यवन- रोजड़, पत्रालय-सागपुर, जिला साबरकांठा (गुजरात)
91-02770-287417, 9427059550
www.vaanaprastharojad.org

आर्य समाज सैलाना का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक १ से ४ सितंबर २०१७ तक वक्ता आचार्य सोमदेव जी ऋषि उद्यान, अजमेर के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। आचार्य सोमदेव जी के द्वारा धर्म की परिभाषा एवं धर्म के लक्षण मनुष्य का मूल लक्ष्य दु:खों से छूटना, सारे दु:खों से छुड़ाने वाला वह ईश्वर है, दु:ख से छूटना ही सुख प्राप्ति है, जो व्यक्ति ईश्वर वेद और धर्म को त्याग देता है, वही दु:खी होता है धर्म को कौन व्यक्ति नहीं जान सकता, ऋषि द्वारा बताया गया-नशा करने वाला, अभिमानी, क्रोधी, लोभी, वासना से युक्त व्यक्ति, भूखा, चंचल व्यक्ति आदि ईश्वर को नहीं जान सकता धर्म को नहीं जान सकता ईश्वर द्वारा असली मूर्ति और मनुष्य द्वारा बनाई गई नकली मूर्ति का आपस में अंतर बताकर सुख और दु:ख की व्याख्या की। मनुष्य जन्म का मुख्य लक्ष्य दु:खों से छूटना है। गर्भ दु:ख, जन्म दु:ख, व्याधि दु:ख, जरा दु:ख, हरण दु:ख आदि से छूटने का एकमात्र मोक्ष ही रास्ता है आदि उपदेश दिया गया। सुबह और रात्रिकालीन कार्यक्रम के अलावा नैतिक शिक्षा, ज्ञान की महत्ता, शिक्षा का महत्व आदि विषयों पर दोपहर में गर्ल्स स्कूल, मॉडल स्कूल, सरस्वती शिशु मंदिर, हाई सेकेंडरी स्कूल एवं कर्मफल सिद्धान्त से सम्बन्धित उप जेल सैल ाना में उपदेश हुआ। साथी ब्रह्मचारी उत्तम जी द्वारा ईश्वर सम्बन्धित भजन प्रस्तुत किए शेखर आर्य की निष्ठा एवं समर्पण से सफल आयोजन सम्पन्न हुआ। आभार व्यक्त रवि कसेरा ने माना।

७वां आध्यात्मिक सरल शिविर

दिनांक ३१ अक्टूबर से ६ नवम्बर २०१७ तक

प्रतिवर्षानुसार लाढ़ौत में आयोजित होने वाला आध्यात्मिक सरल शिविर इस वर्ष दयानन्द मठ रोहतक के बलदेव भवन में दर्शन योग महाविद्यालय के निदेशक स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक के सानिध्य में दिनांक ३१ अक्टूबर से ६ नवम्बर २०१७ तक आयोजित होगा। ईश्वर प्राप्ति तथा वैदिक धर्म ज्ञान प्राप्ति के जिज्ञासु महिला-पुरुष अतिशीघ्र पंजीयन करवाकर स्थान सुरक्षित करें।

सम्पर्क- पुरुष वर्ग हेतु-९४१६१३९३८२, ९७२८८८४९४९, ९४६६००८१२०, महिला वर्ग हेतु- ९८१२७९२७७०, ९८९६३२६७१८
ऊपर के नम्बरों पर सम्पर्क नहीं होने पर
९३५५६७४५४७ श्रीनिगम मुनिजी से सम्पर्क करें।

पृष्ठ ३४ का शेष भाग **...वेदानुसार पूषा ही खाद्य**

को लूटने वाले इन व्यापारियों को दण्डित कर सके तथा इनके भण्डारों में पड़ी इन वस्तुओं को ब ाहर निकलवा सके। वह न तो स्वयं ही लोभी व भ्रष्ट हो तथा न ही नही किसी व्यापारी को भी लोभ व भ्रष्ट आचरण से प्रजा को दु:खी करने दे। यदि कोई ऐसा करता है तो उसे दण्डित करने की शक्तियां भी उसके पास अवश्य हों। इस प्रकार की वज्र अथवा निवारक शक्ति उसके पास होगी तो ही इस प्रकार के दुष्ट व लोभी लोगों को वह दण्डित करके प्रजा को प्रसन्न रख सकेगा।

इस प्रकार पोषण मन्त्री सदा सक्रिय रहे। देश के अभावग्रस्त क्षेत्रों में बाहुल्य वाले क्षेत्रों से वस्तुएं मंगवाकर अभाव को दूर करें। वह विपुल धन रखता हो तथा उसके पास इतनी शक्तियां हो कि कृत्रिम अभाव बनाने वाले को वह दण्डित भी कर सके। ■

घीसालाल जी बा.सा. नहीं रहे

श्री घीसालाल जी आर्य (पाटीदार) सुपुत्र श्री सबराम जी पाटीदार निवासी- गोमाना, जिला- प्रतापगढ़ (राज.) का लगभग ८५ वर्ष की आयु में दिनांक १३.८.२०१७ को निधन हो गया। आपकी वैदिक सिद्धान्तों के प्रति गहन निष्ठा थी। आप आर्य समाज गोमाना के स्तम्भ थे, आर्य जगत् के अनेक उच्च कोटी के विद्वानों से आपका सम्पर्क था तथा आपके प्रयासों से उन्हें गोमाना में वेद-प्रचार हेतु आने का अवसर प्राप्त हुआ, जिनमें श्री राजगुरु जी शर्मा महू, श्री कमलेश जी अग्निहोत्री, श्री अजय कुमार जी सेण्डों राऊ, आधुनिक अर्जुन, डॉ. सोमदेवजी शास्त्री मुम्बई, पं. भूपेन्द्र जी अलीगढ़, पं. हीरालाल जी बेरछा, पं. नरेश दत्त जी बिजनौर, पं. अमरसिंह जी ब्यावर, पं केशवदेव जी सुमेरपुर, पं. रघुनाथदेव जी भूषण एटा, सुश्री अंजलि आर्या प्रमुख थे। आप दानी स्वभाव के व्यक्ति थे, खुले हाथों से आर्य जगत् की संस्थाओं को सहयोग करते थे। परोपकारिणी सभा अजमेर तथा आर्ष गुरुकुल चित्तौड़गढ़ को प्रतिवर्ष ग्राम से अन्न संग्रह कर पहुंचाते थे।

वैदिक धर्म गतिविधियों के आप सक्रिय समर्पित सिपाही थे। आपने अपने मृत्युपूर्व लेख लिखकर अपने अन्तिम कर्मकाण्ड के विषय में सुपुत्रों को निर्देशित कर दिया था, जिसमें चित्र पर माला-अगरबत्ती आदि नहीं लगाना, वैदिक विधि से अन्तयेष्टि में २५ किलो गाय का घी तथा २० किलो हवन सामग्री उपयोग करना, अस्थियों को श्मशान भूमि में ही दबा देना, श्मशान भूमि में आपके द्वारा लगाए गए पौधों में ही आपकी चिता की राख डलवा देना, आदि सम्मिलित था। दिनांक २३.८.२०१७ को श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। जिसमें आचार्य कर्मवीर मेधार्थी गुरुकुल कालवा, उदयलाल जी आंजना पूर्व सांसद, श्री कमल जी आंजना मरजीवी, श्री कांशीराम जी छोटी सादड़ी, श्री हीरालाल जी शर्मा छोड़ी सादड़ी, श्री समरथमल जी पहलवान छोटी सादड़ी, श्री लक्ष्मीनारायण जी पाटीदार उदरसी, श्री रामगोपाल जी उदरसी आदि ने अपने भाव रूपी श्रद्धासुमन अर्पित किये। वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव जी शर्मा तथा प्रभात आयुर्वेदिक फार्मेसी संस्थान, देवास के श्री प्रेमनारायण जी पाटीदार ने भी आपके निवास पर पहुंचकर अपनी भावांजलि अर्पित की।

आप अपने पीछे बड़े भ्राता भागीरथ जी, छोटे भ्राता जगन्नाथ जी, लाभचन्द जी, गौरीशंकर जी, डॉ. रमेश जी, सुपुत्र- राजाराम, सुपुत्री- श्रीमती कंकुबाई, रमेश जी पाटीदार, जीरन का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। आपके परिजनों ने दान स्वरूप वैदिक संसार को ११०० रुपए भेंट किए।

प्रधान श्री मूलचंद जी का निधन

आर्य समाज सैलाना के प्रधान मूलचंद जी आर्य का आकस्मिक निधन २५ अगस्त २०१७ को हो गया है। आपकी वैदिक विधि से अंत्येष्टि की गई। आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री मूलचंद जी का जीवन बड़ा परिश्रम में एवं जुझारु रहा अन्धविश्वास और कुरीतियों के विरुद्ध समाज में अथक प्रयास रहा आपकी तपस्या ने समाज को सफलता प्रदान की आपके कार्यकाल में कसेरा समाज की धर्मशाला के लिए जगह एवं आपके ही आगे कार्यकाल में भवन निर्माण आदि हुए सैलाना में आर्य समाज का पंजीयन आप की ही देन है।

आर्य समाज, सैलाना, जिला-रतलाम का वार्षिकोत्सव आचार्य सोमदेव जी आर्य, अजमेर के मार्गदर्शन में प्रेरणादायी स्वरूप में स्कूलों में भावी पीढ़ी के मध्य वैदिक धर्म सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार के साथ सम्पन्न हुआ विस्तृत समाचार पृष्ठ ४२ पर

वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा के सुपौत्र चि. वैदिक के मुण्डन संसार पर वृहद रूप में वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार का आयोजन शामगढ़, जिला-मन्दसौर पर किया गया। प्रस्तुत है आयोजन की चित्रावली

पं. जसवन्त शास्त्री, दिल्ली मुण्डन संस्कार करवाते

चि. वैदिक अपने दादा-दादी, नाना-नानी, माता-पिता तथा भाई डॉ. दीपक के साथ **देवयज्ञ का भागी**

माता-पुत्र के स्नेहमयी क्षण

वैदिक का मुण्डन माता की गोद में बुआ-काका सहयोग करते हुए

पं. सत्यपाल शास्त्री, देहरी द्वारा भजन प्रस्तुति

बहन सरिता आर्या, बड़नगर का आत्मिय सम्मान

बाल भजनोपदेशिका **श्रुतकीर्ति, भुसावर** द्वारा प्रस्तुति

कु. वैदिका एवं इशिका खाचरौद का उत्साहवर्धन

वैदिक संसार के संरक्षक सदस्य

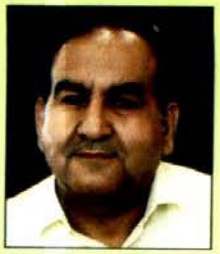
श्री नेमीचन्द जी शर्मा
गान्धीधाम (गुजरात)

श्री पूनाराम जी बरनेला
जोधपुर (राजस्थान)

श्री सुनील जी शर्मा
पौण्डा (गोवा)

श्री नानूराम जी जांगिड
धूलिया, महाराष्ट्र

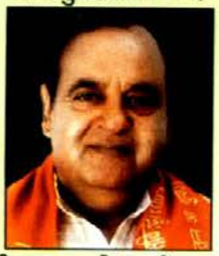
श्री रामफलसिंह जी आर्य
सुन्दर नगर, हिमाचल

श्री आदित्यप्रकाश जी गुप्त
खेड़ा अफगान (उ.प्र.)

वैदिक संसार के अभिन्न सहयोगी महानुभाव

पं. सूर्यदेव जी शर्मा
इन्दौर, म.प्र.

श्री प्रकाश जी आर्य
महामन्त्री-सा.आ.प्र.सभा

लक्ष्मीनारायणजी आर्य
मौलाना, विक्रमनगर

वेदप्रकाश जी आर्य
उज्जैन (म.प्र.)

मदनलाल जी शर्मा
बडौदा, गुजरात

शंकरलाल जी शर्मा
बडौदा, गुजरात

प्रकाश जी शर्मा
धुलिया, महाराष्ट्र

महावीर जी जांगड़ा
मुण्ढाल खुर्द, भिवानी

वेदभूषण जी गुप्त
सहारनपुर, उ.प्र.

जगदीश जी शर्मा
चैनपुर, झारखंड

ज्ञानकुमार जी आर्य
लातूर, महाराष्ट्र

हीरालाल जी शर्मा
उदयपुर, राजस्थान

पं. आर्यमुनि जी
बेरछा, म.प्र.

सतीश जी शर्मा
रतलाम, म.प्र.

घेवरराम जी आर्य
पाली, राजस्थान

दीपक जी शर्मा
भोपाल, म.प्र.

वैदिक संसार के संरक्षक सदस्य बनकर आर्थिक सहयोग कर पूण्यार्जन कीजिए

वैदिक संसार के निर्बाध गति से प्रकाशन हेतु वैदिक संसार को आर्थिक रूप से सुदृढ़ करने के निमित्त **वैदिक संसार की संरक्षक सदस्यता योजना** प्रारम्भ की गई है। इसमें जो सदस्य एक अंक प्रकाशन व्यय भार निमित्त **एक मुश्त २५००० रुपए** देंगे अथवा प्रतिवर्ष किसी भी रूप में वे चाहें स्वयं दे या पत्रिका के सदस्य बनाकर सहयोग करें इस हेतु उनके द्वारा बनाए गए सदस्यों को वार्षिक सदस्यता शुल्क में ५०रुपए की छूट भी दी जावेगी। ऐसे सदस्य **प्रतिवर्ष ५१०० रुपए सहयोग करने का व्रत (संकल्प)** व्यक्त करेंगे, ऐसे दोनों प्रकार के महानुभाव संरक्षक सदस्य माने जावेंगे **जिनके चित्र प्रत्येक अंक में प्रकाशित किए जावेंगे।**

वेदों की ओर लौटो-महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य समाज, गोल बाजार, श्रीगंगानगर, राजस्थान का

वेदप्रचार उत्सव

१५ से १९ नवम्बर तक

सम्पर्क- रामनिवास गुणग्राहक (पुरोहित)
चलभाष -७५९७८९४९९१

आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति

कर्मठ, जुझारू, वैदिक धर्म के निष्ठावान सिपाही नहीं रहे

पं. ठाकुर प्रसादजी आर्य के निधन से आर्य समाज व सोनी समाज की अपूरणीय क्षती हुई है। आर्य जी कई विशेषताओं के धनी थे। जेवर पर छिलाई काम के वे अनोखे कलाकार थे। साथ ही संगीत के भी अच्छे जानकार थे और समाज व विशेष उत्सवों पर भी भजन सुनाया करते थे। महर्षि दयानंद जी के वे पक्के भक्त थे। आर्य समाज के वे स्तम्भ थे।उन्होंने अपने पुत्र विजेन्द्र व पुत्रियों को गुरूकुल की शिक्षा दिलवाई थी।आप वैदिक साहित्य प्रेमी थे।आपके निजी पुस्तकालय में करीब पचास हजार दुर्लभ पुस्तकों संग्रह है ।बीकानेर में पीएचडी या कोई और डिग्री के लिए इनके पास ही पुस्तकों के लिए विद्यार्थी आते थे। अभी हाल ही में डूनगर महाविद्यालय में इनका सम्मान किया गया था ।आर्य समाज में पुरोहित के रूप में भी सेवाएं दी।बीकानेर से गुरूकुल के लिये प्रोत्साहित कर करीब १५ विद्यार्थियों को भेजने का श्रेय आपको है। आ. जानेश्वरजी व बाबूलाल जी, जगदीश जी आदि के ये प्रेरणा स्त्रोत रहे है। शतायु की प्राप्ति कर उन्होंने **जीवेम् शरदः शतम्** को चरितार्थ किया है। पिछले दिनों गुरुकुल माउंट आबू के वार्षिकोत्सव में वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा से आपकी भेंट हुई थी। आपका असीम स्नेह प्रकाशक महोदय पर था।

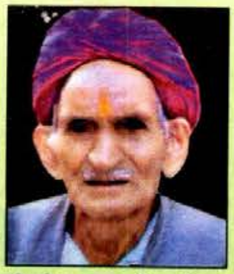
श्री घीसालाल जी पाटीदार
गोमाना, राजस्थान

वैदिक संसार परिवार समस्त दिवंगत आत्माओं के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता है

विस्तृत विवरण पृष्ठ ४२ पर

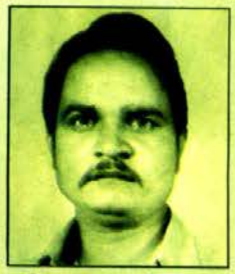
श्री मूलचंद जी आर्य
सैलाना, मध्यप्रदेश

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा 'जांगिड'-इन्दौर, इन्दौर ग्राफिक्स-२४ कुंवर मण्डली खजुरी बाजार से मुद्रित,१२/३, संविद नगर-इन्दौर-४५२०१८ से प्रकाशित
संपादक - गजेश शास्त्री, एम.पी.एच.आई.एन.- २०१२/४५०६६,डाक पंजीयन-एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७